ॐ

पूज्यपादपन्यासजीदादाश्रीमणिविजयजीगणि
महाराजना प्रशिष्य मुनिश्री
लक्ष्मीविजयजीना रचेला.

श्रीप्रश्नोत्तरप्रदीप,
पर्युषणाष्टान्हिकाव्याख्यान,
पंचजिनस्तुति,

ए नामना त्रण ग्रंथो.

छपावी प्रसिद्ध करनार.
श्री अमदावाद निवासी,
संघवी. भोगीलाल काळीदास.
ठे. हाजापटेलनी पोळमां पाच्छानी पोळ.

अमदावाद.
धी "सीटी" प्रीन्टींग प्रेस—ठे. ढालगरवाडा.
प्रथम आवृत्ति. प्रत. १०००.

संवत १९६५. सन १९०९.
किंमत. रु. ०-१२-०

શ્રી શાંતિચન્દ્ર સેવા સમાજ
ફ્રી પુસ્તકાલય
હાજા પટેલની પોળ—અમદાવાદ.

પુસ્તકની પુરેપુરી સંભાળ રાખશો. પાનાં વળી ન જાય તેની કાળજી રાખશો અને પેન્સીલથી, શાહીથી કે બીજા કશાથી એમાં નોંધ કે લીટીઓ કરશો નહિ.

પુસ્તક બીજા ચૌદ દિવસ માટે રાખવું હોય તો તારીખ ફરી નોંધાવી જવાથી તેમ કરી શકાશે. પણ જો કોઈ બીજા સભ્ય તરફથી માંગણી આવી હશે તો એ બીજીવાર મળશે નહિ.

प्रस्तावना.

हे सुज्ञजनो आ पृथ्वीतलने पावन करनार भास्वरवरकार्त्त-स्वरसमान कान्तिमान् चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमान् महावीरस्वामिना आ विद्यमान शासनमां श्रीगणधरादिक महान्पूर्वाचार्योए रचेला सूत्रादिकशास्त्रोने अनुसारे आ "श्रीप्रश्नोत्तरप्रदीप" नामनो ग्रन्थ रचायेलो छे. तेना पांच प्रकाश राखेला छे, तेमां पहेला प्रकाशमां ७३ प्रश्नो छे, बीजा प्रकाशमां ७१ प्रश्नो छे, त्रीजा प्रकाशमां ८२ प्रश्नो छे, चोथा प्रकाशमां ४५ प्रश्नो छे, अने पांचमा प्रकाशमां ६७ प्रश्नो छे, पांचे प्रकाशना मळी कुल ३३८ प्रश्नो छे, अने ते प्रश्नो विविध प्रकारना छे. तेमज परस्पर एकबीजानी साथे प्राये संबंध राखे तेवां ते प्रश्नो छे, अने ते प्रश्नोनी अनुक्रमणिका वांचवाथी समजाशे. वळी ते प्रश्नोना प्रत्युत्तरो ते दरेक प्रश्नोनी साथे शास्त्रोना पुरावा सहित आपेला छे. तथा श्रीपर्युषणापर्वमां विशेषे करीने श्रावक श्राविकाओने करवा योग्य कृत्योने दर्शावनार "पर्युषणाष्टान्हिकाव्याख्यान" नामनो बीजो ग्रन्थ तथा वळी पांचमी गतिना दातार पांचजिनेश्वरोनी स्तुतिवाळो त्रीजो ग्रन्थ, एम ए त्रणे ग्रन्थो संवत १९५९ मां श्रीकपडवणजमां पूज्यपादपन्यासजी श्री मणिविजयजीगणि महाराजना लघुशिष्य पं० श्रीशुभविजयजीना शिष्य मुनिश्री लक्ष्मीविजयजीए भूरिश्रम लेइ रचेला छे, ते त्रणे ग्रन्थो सुश्रावक शा. मगनलाल उमेदचंदना वांचवामां आवेला छे, अने ते ग्रन्थोपर लोकोने रुचि थवाथी संघवी. भोगीलाल कालीदास सांकळचंदे छपावी बहार पाडेला छे. अने तेनी किंमत पण घणी जुज राखेली छे. माटे आ अमूल्य ग्रन्थोनो सुज्ञ भव्यजीवोए

लाभ लेवा चुकवुं नही, अने आ ग्रन्थो घणी काळजी राखी छापवामां आवेला छे. छतां कांइ भूल रही गई होय तो सुज्ञ भव्यजीवोए सुधारी वांचवुं. एज विनंति.

संवत १९६५
दीपालिका दिवसे.

ली०
संघवी. भोगीलाल काळीदास.
अमदावाद.

श्रीप्रश्नोत्तरप्रदीपग्रन्थानुक्रमणिका.

प्रथमःप्रकाशः

प्रश्नाङ्क.		पृष्टाङ्क.
१	श्रीजैनमतमांजेने देव मानेल छे ते श्रीअर्हन्देव केवा छे ?	१
२	उक्तश्री अर्हन्देवे केटलां कर्म्मो कहेलां छे ?	१
३	कोनो नाश थवाथी मोक्ष थाय अने ते केवो थाय ते कहो	२
४	उपरना प्रश्नोत्तरमां प्रदर्शित जे मोक्ष तेनां नाम दर्शावो.	२
५	मोक्ष पामवानो उपाय कयो ते कहो	२
६	सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं किञ्चित्स्वरूप बतावो.	३
७	भवान्तरमां सद्गति कोनी थायछे ?	४
८	कया माणसनो जन्म सफळ थायछे ?	४
९	देवांशी माणस कोण जाणवो ?	४
१०	गृहस्थोने हमेशां छ कार्यो करवानां कयां	५
११	जैनसाधुओ जे भावरूप आठ उत्तम पुष्पोए करी श्रीदेवाधिदेवनी निरवद्य पूजा करेछे ते आठ पुष्पो कयां ?	५
१२	कोइ गुरुमहाराजे दंडप्रहारे मार्यो थको कोइ शिष्य तत्काल केवळज्ञानने पाम्यो छे ?	५
१३	तीर्थयात्रा समये विवेकी पुण्यात्मा माणस केवो होय	६
१४	आ जगतमां कया पांच शकारो दुर्लभ जाणवा	६
१५	पूछवा लायक कोण ?	७
१६	पण्डित कोने कहीए ?	८
१७	श्रीजिनभवन बंधाववा कयो माणस अधिकारी छे ?	९
१८	अन्यायथी उपार्जन करेलुं द्रव्य क्यांसुधी रहेछे ?	९

१९ आ चपळ लक्ष्मीनुं फळ शुं ते कहो. ९
२० तप केवो करवो ते फरमावो. १०
२१ तपथी निकाचित कर्मनो नाश थाय ? १०
२२ परिग्रह कोने कहेलो छे ? ११
२३ लोभनुं दुर्लभपणुं शास्त्रमां शी रीते वर्णवेलुं छे ते कहो. ११
२४ भोगनुं तथा उपभोगनुं स्वरूप समजावो. १२
२५ प्राणिओनुं अंतरंग मन शी रीते जणाय ? १२
२६ कोनो पार पामी शकायछे अने कोनो पार पामी शकातो नथी ते कहो. १३
२७ आ संसारमां स्त्रीरूपी पाश कोणे मांडयो छे ? १३
२८ कोनी तेजवृद्धि थायछे अने कोना रूपनो नाश थायछे ते दृष्टान्तपूर्वक कही बतावो. १३
२९ माबापनी भक्ति करनार माणसनुं वर्णन करो १३
३० पुण्यानुबंधि पुण्यकयुं कहेवायके जेथी प्राणीमनुष्यरूपी सारा भवमांथी नीकळीने तेथी वधारेसाराएवा देवभवमां जायछे ? १४
३१ " संसारदावा "० ए नामनी स्तुति कोणे करी छे ? १४
३२ उद्योतपंचमी स्तुतिमां " देवाधिदेवागम " दशमो सुधाकुंड छे एम जो कह्युं छे तो बीजा नव सुधाकुंड क्यां छे? १४
३३ श्रीयशोविजयकृत नवपदनी पूजा वीगेरेमां आजकालना केटलाक लोको " अथ्थमिए जिनसूरज केवळवंदे जे जगदीवो " आम बोलेछे ते खरुं छे के केम ? १५
३४ जेम मुनिमहाराजो कोइ प्रत्ये कहे छे के अमुक माणसने धर्मलाभ कहेजो तेम तीर्थङ्कर भगवान् कहे ? १६
३५ २४ तीर्थङ्कर क्यां मोक्षे गया अने ते केवा आसने रह्या थका मोक्षे गया ? १६

३६ केटला तीर्थङ्करने उपसर्ग थया अने केटलाने ते नथी थया? १७
३७ २४ तीर्थङ्करने देवदूष्य वस्त्र क्यां सुधी रह्युं? १७
३८ केटला तीर्थङ्कर आर्य, अनार्य देशमां अने केटला ती० आर्य देशमां विचर्या छे? १८
३९ आर्यदेश तथा अनार्य देश क्यां होय? १८
४० आ भरत क्षेत्रना २५ ॥ आर्य देशनां नाम तथा तेमां श्री तीर्थङ्कर, चक्रवर्त्यादिक महा पुरुषोनो जन्म होय तेम दर्शावो. १९
४१ ३१९७४॥ अनार्य देश छे तेमांथी केटलाएकनां नाम तथा त्यांना अनार्य मनुष्योनी अज्ञता निवेदन करो. २१
४२ निकाचित जिननाम कर्म कइ गतिमां कोण शुं कृत्य करवा वडे करीने उपार्जन करे ते फरमावो. २२
४३ रसोदयनी अपेक्षाए जिनाम कर्मनो उदय क्यां थाय छे? २२
४४ जिननाम कर्मनो अबाधाकाल अन्त र्मुहूर्त्तनो कह्यो छे ते कइ अपेक्षाए ते कहो. २३
४५ वैमानिक तथा आद्य नरक त्रिक सीवाय बीजा स्थानथी आवी कोइ तीर्थङ्कर थाय छे?.... .... २३
४६ जेम आ भरतक्षेत्रमां २० तीर्थङ्कर समेतशिखरने विषे सिद्धि वर्या तेम ऐरवत क्षेत्रमां २० तीर्थङ्कर क्यां सिद्धि वर्या? २३
४७ श्री तीर्थङ्कर वीतराग देवोने १८ दोष न होय ते कया? २४
४८ श्री सुविधिनाथथी श्री शान्तिनाथ पर्यन्त आठ तीर्थङ्करोना सात आंतरामां तीर्थनो व्यवच्छेद काल केटलो? २४
४९ श्री तीर्थङ्कर भगवानने प्रथमनी त्रण समिति होय इत्यादि? २५
५० सामान्य केवली तीर्थङ्करने नमस्कार न करे एवो उल्लेख क्यांइ छे? २६
५१ तर्थङ्करने अर्थे करेलुं होय ते बीजा साधुओने कल्पे?.... २७

५२ तीर्थङ्करनेअर्थे देवोएकरेलुं समवसरणतीर्थङ्कर केम भोगवेछे? २८
५३ कइ जग्योए देवता समवसरणनी रचना करे ? २८
५४ समवसरणमांबारेपर्षदा बेसीनेप्रभुनी देशनासांभलेके केम. २८
५५ समवसरणमां प्रभुना विश्रामार्थे देवताओ देवच्छंदानी रचना क्यां करे ? २९
५६ भगवाननी पहेला पहोरनी देशना पूर्ण थया पछी बीजे पहोरे गणधर महाराज क्यां बेसी देशना दे ? २९
५७ श्रीऋषभदेवना प्रथमगणधरनुंनामपुंडरीकछेके ऋषभसेनछे? ३०
५८ श्रीऋषभदेवस्वामिनेप्रथमपारणेकेटलासेलडीरसनाघडाक० ३०
५९ जो दीक्षा दिवसथी (चैत्र वद ८ थी) पारणाना दिवस सुधी (वैशाख सुद त्रीज सुधी) गणीए तो, इत्यादि ? ३०
६० श्री नेमिनाथने केटला गणधर कह्या छे ? ३१
६१ श्री नेमिनाथनी अपराजित विमानमां केटली स्थिति हती ? ३१
६२ विजयादि चार विमानमां देवोनी जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति केटली निवेदन करेली छे ? ३२
६३ पंडित श्री वीरविजय गणि वर्यकृत पंचकल्याणक पूजामां " देवदूष्य इन्द्रेदियुंरे रहेशे वर्ष चत्ततीस नमो० " आम कह्युं छे त्यां "चत्ततीस" शब्दे करी केटलां वर्ष जाणवां ? ३२
६४ श्रीवीरप्रभुना मातापिता कए देवलोके गया ते कहो ३३
६५ जेम पहेला छेल्ला तीर्थङ्करना शरीरमान विषे भेद छे तेम बळ विषे भेद केम नहीं ? ३३
६६ श्रीमहावीरस्वामिना तीर्थमां कया नव जीवोए तीर्थङ्करनाम कर्म उपार्जन कर्युं ते कहो ३४
६७ पद्मनाभादि २४ तीर्थङ्कर क्यां मोक्षे जशे? ३५
६८ केटलाक कहेछे के रावण आवती चोवीसीमां तीर्थङ्कर थवाना छे ते वात खरी छे ? ३६

६९ उत्सर्पिणीकाळमांछेल्ला तीर्थङ्करनुंतीर्थ क्यांसुधी चालशे? ३६
७० महाविदेहविजयमां एक केवळिजिन अथवा छद्मस्थ जिन विचरता होय त्यारे अन्य तीर्थङ्करोना जन्मादि होय ? ३६
७१ श्रीकल्पसूत्र नव व्याख्यानवडे वंचाय छे ते शुं परंपराथी के कोइ शास्त्राधारथी ? ३७
७२ श्रीकल्पसूत्रमां सर्वे ७२ स्वप्न कह्यां छे तेनां जुदां नामो क्यांइ हशे ? ३७
७३ श्रीतीर्थङ्करभगवान् केवळिसमुद्घात करे के केम ? ३७

द्वितीयःप्रकाशः

१ गृहवासे रहेला तीर्थङ्करदेव कोइनो दीक्षामहोत्सव करे ? ३८
२ श्रीअजितनाथभगवानना पिताश्री दीक्षा पाळी क्यां गया ? ३८
३ सिद्धशिला तथा सिद्धना जीवो क्यां छे ? ३८
४ निर्जरा अने मोक्षमां शो विशेष छे ? ३९
५ दशप्रकारना प्राण कयां ? ३९
६ उक्त द्रव्य १० प्राणने मोक्षना जीवो धारण नथी करता छतां तेमने जीव केम कहो छो ? ४०
७ मनुष्यगतिथी आवेल कोइने क्यांइ चक्रवर्त्तिपणुं कह्युंछे ? ४०
८ सुभूमचक्रवर्त्तिने केवी रीते चक्ररत्न उत्पन्न थएल छे ? ४०
९ वैताढ्यपर्वतनी तिमिश्रानामनी गुफामां चक्रवर्त्तिना करेलां मांडलां केटलां कह्यां छे ? ४१
१० गुफामां चक्रवर्त्तिना करेलां मांडलां क्यांसुधी रहेछे ?.... ४१
११ चक्रवर्त्तिषट्खंडनो दिग्विजयकरेछे तेमां अट्ठम केटलाकरे? ४१
१२ गङ्गादेवी साथे भरतचक्रिनो भोगविलास क्यांसुधी रह्यो? ४२

१३ चक्रवर्त्तियोना अस्थिओने देवताओ ग्रहण करेछे के केम ? ४३
१४ नथी त्याग कर्यो राज्यनो जेओए एवा चक्रवर्त्तिओ म-
रीने क्यां जायछे ? ४३
१५ चक्रवर्त्तिओनी १६००० देवो सेवा करेछे तेम अर्द्धचक्र-
वर्त्ति वासुदेवोनो ८००० देवो सेवा करे के केम ? ४३
१६ वासुदेवो क्यांना आव्या थायछे ? ४४
१७ वासुदेवने केटली स्त्रीयो कही छे ? ४४
१८ प्रतिवासुदेवनी माता केटलां स्वप्न देखे ? ४६
१९ रामस्त्री सीतासती कया महाराजानी पुत्री छे ? ४६
२० द्रौपदी महासती कालकरीने क्यां गई ते कहो. ४६
२१ युधिष्ठिर विगेरे पांच पांडवोने द्रौपदी पासे जवाना वा-
राहताके केम ? ४७
२२ नारदमुनि सम्यग्दृष्टि छे के मिथ्यादृष्टि छे ? ४७
२३ पद्मोत्तर राजाए पोताना मित्र देवता पासे द्रौपदीनुं हरण
कराव्युं ते देव कइनिकायनो हतो ? ४७
२४ भीष्मपिता कए ठेकाणे कोनी पासे चारित्र लेइ क्यां गया ? ४७
२५ पांडवोवीशकोडीमुनिसाथे श्रीसिद्धाचलपरसिद्धिवर्याछे. ए
ठेकाणे "कोडी" एटले वीशएम केटलाएक बोलेछेतेनुंकेम ? ४८
२६ देवताओ श्रीजिनेश्वर भगवाननीदाढाविगेरेलेइजइशुंकरे छे? ४८
२७ सर्वे देवोनो श्री जिनदाढादि ग्रहण करवामां अभिप्राय
सरखो हशे के केम ? ४९
२८ जेनुं चित्तधर्मने विषे अस्थिर छे तेनो आत्मा केवो जाणवो ? ४९
२९ कोनो संसारमां प्रचार न होय ? ५२
३० विद्याग्रहण करवाना केटला उपाय छे ? ५२
३१ जे गुरुए उपकारबुद्धिथी जेने भजावेल होय ते जो ते गु-
रुने गुरुपणे न माने तो ते केवो जाणवो ? ५२

३२ जम्बूद्वीपना महाविदेहमां ९६ मागधादि तीर्थ क्यां छे अने तेनेसाधतां त्यांना चक्रवर्त्तिओ क्यांबाण नाखेछेते कहो ? ५३
३३ केवली भगवान् पडिलेहणा करे के नहीं ?.... .... ५३
३४ आ अमुक जीव आठकर्मनो अन्त करशे, एम केवली जाणे छे. तेम छद्मस्थ जाणे के नहीं ?.... .... ५३
३५ ज्ञान अने प्रमाणमां शो विशेष छे ? ५४
३६ चारप्रमाण छतां पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरमां बे प्रमाण केम कह्यां ? ५४
३७ आज काले आ भरतक्षेत्रमां जातिस्मरण अने अवधिज्ञान पामीए के नहीं ? ५४
३८ जातिस्मरण ज्ञानवाळो पोताना केटला पाछला भव देखे ? ५४
३९ "पञ्चाङ्गी" कोने कहीए ? ५५
४० ६ छेद सूत्रना नाम कहो. ५५
४१ "व्याख्याप्रज्ञप्ति" ए कोनुं नाम छे ? ५५
४२ श्री भगवतीसूत्रमां ४१ शत (शतक) छे. त्यां शतशब्दे करी शुं कहेवाय ? ५५
४३ श्री भगवतीसूत्रना ८४००० के २८८००० पद छे ?.... ५५
४४ सूत्रना एकपदनुं केटलुं प्रमाण होय ते कहो. ५६
४५ दृष्टिवादना केटला भेद छे. अने कया भेदमां १४ पूर्व जाणवां ५७
४६ कालिक, उत्कालिक, सूत्र कोने कहीए ? ५७
४७ बेघडीना परिमाणवाळी अकाल सन्ध्या केटली छे ? ५८
४८ उक्त चार अकाल सन्ध्या समये शामाटे स्वाध्याय न कराय ५९
४९ टीप्पणामां राहुनी मस्तक मात्र अने केतुनी कबंध (धड) मात्र आकृति छे तेनुं शुं कारण ? ६०
५० आयंबीलमां "हिंग" कल्पे के केम ? ६०
५१ "पञ्चसौगन्धिक" ताम्बूल कोने कहीए ? ६०

५२ स्त्रीरत्ननी संखावर्त्तायोनिमां जीवो गर्भपणे उपजे छे, पण निष्पन्न थता नथी तेनुं शुं कारण ? ६१

५३ औदारिक शरीरवाळी स्त्रीने कोइ देवता भोगवे तो ते स्त्रीगर्भ धरे के केम ? ६२

५४ स्त्रीने गर्भोत्पत्ति क्यारे थायछे, अने तेनो केटलो काळ कह्योछे? ६२

५५ पोतानी माताना उदरमां जीव गर्भपणे वधारेमां वधारे क्यांसुधी रहे ते कहो. ६२

५६ गर्भमां रहेलो जीव, ओजआहार करे के लोमआहार के प्रक्षेपआहार करे ? ६३

५७ चउविहार पच्चख्खाण स्त्री साथे संयोग करतां भांगे के केम ? ६३

५८ मुक्ताफळ (मोती) सचित्त छे के अचित्त छे ? ६४

५९ मुक्ताफळनी (मोतीनी) उत्पत्ति क्यां थती हशे ? ६४

६० उतावळथी चालनार घोडाना पेटमां "खबरक खबरक" शब्द थायछे. ते शुं पाणीनो शब्द हशे ? ६४

६१ एक समये वायुना वैक्रिय शरीर केटलां होय ? ६५

६२ भाषानुं संस्थान केवे आकारे होय ? ६५

६३ गर्भज तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय जीवोनी तथा मनुष्य पञ्चेन्द्रिय जीवोनी मिश्रायोनि केम कही ? ६५

६४ हंस, उदकमिश्रितक्षीरने जुदुं करीने पीएछे ते शाथी ? ६६

६५ साधु, असाधुनी, कोइनीपण निंदा न करवी अने जे करे ते भवान्तरमां केवा अवतार पामे ते कहो ? ६९

६६ दुर्जन मूर्खमाणसने पण्डितपुरुषो पोतानी सोबतमां लेइ धर्मोपदेश देइ सुधारे तो ते शुं न सुधरे ? ७०

६७ श्रीजिनप्रतिमाने विषे आचार्यवासक्षेप करे ? ७१

६८ दीक्षादि अवसरे वासक्षेप नाखवानो रीवाज क्यांथी सरु थयो हशे ? ७१
६९ ज्योतिष्क जिनालयोनुं मान केवी रीते समजवुं ? ७२
७० श्रीजिनमन्दिरमां चैत्यवन्दना क्यां बेसीने थाय ते कहो ? ७२
७१ इरियावहिपडिकमीने चैत्यवन्दना थाय के केम ? ७२

तृतीयःप्रकाशः

१ श्रीजैनमार्गमां जीवना केटला भेदछे ? ७४
२ संसारी जीव, अने मोक्षना जीव कया समजवा ? ७४
३ संसारीजीवना अने मोक्षजीवना अनन्तज्ञानादिक भावप्राणमां तफावत हशे ? ७४
४ जीवोने कर्मसंयोग क्यारे थयो ते कहो. ७४
५ प्रवाहनी अपेक्षाए करीने पण जीवोने कर्मसंयोगसादि छे एम आपणे मानीए तो केम ? ७४
६ जीवोने कर्मसंयोग जो अनादिकाळथी छे तो ते कर्मनो वियोग पाछो शाथी थायछे ? ७५
७ सर्व जीव आश्री कर्मसंयोग अनादिसांत छे के केम ? ७५
८ जो भव्यजीव आश्रि कर्मसंयोग अनादिसांतछे तो सर्वभव्यजीवो मोक्षे जवाथी काळे करी भव्यजीवरहित आलोकथशे? ७६
९ निगोद कोने कहीए ? ७७
१० आ लोकमां अभव्यजीवो केटला छे ? ७७
११ अभव्यजीवो कोइ काळे ओछावधता थता हशे ? ७८
१२ भव्य, अभव्यजीवनुं लक्षण शुं ? ७८
१३ अभव्यजीव भावथी "पादपोपगमन" अनशन करे ? ७८

१४ अभव्जीव चारित्रग्रहण करे ? ७८
१५ अभव्य जीवना प्रतिबोधेला भव्यजीवो मोक्षे जाय ? ७८
१६ प्रसिद्ध थएला अभव्य जीवो केटला छे ? ७९
१७ कोइ अभव्यजीव स्वर्गादि सुखनी इच्छावडे द्रव्य चारित्र-
ने पामीने भणे तो केटलुं श्रुत पामे ? ८०
१८ अभव्य जीवो श्री सिद्धाचल तीर्थनी स्पर्शना न करे एवा
अक्षरो क्यांइ छे ? ८०
१९ श्रीजिन भगवाननी देशना अभव्योने तत्त्व जणावनारी
केम नथी थती ? ८०
२० परमाधामि जीवो भव्य छे के अभव्य छे ? ८१
२१ परमाधामि जीवो कोण छे ? ८१
२२ परमाधामि जीवोनी करेली वेदनाओ केटली नरक पृ-
थ्वीओने विषे छे ? ८२
२३ मरण अवसरे जीवने शरीरमांथी नीकळवानो कयो मार्ग
प्रभुए प्ररूप्यो हशे ? ८२
२४ उक्त पांच प्रकारे जीव शरीरमांथी नीकळतो थको कइ
गतिने पामे ? ८२
२५ स्त्रीए प्रार्थना करेलो पुरुष केवो होय ? ८३
२६ शुक्लपाक्षिक, अने कृष्णपाक्षिक, जीवोकोने कहीए ?.... ८४
२७ कृष्णपाक्षिक जीवो कइ दिशाए उपजे छे ? ८४
२८ मुनिमहाराजो कइ दिशा सन्मुख रही आवश्यक क्रिया करे ? ८५
२९ मुनिमहाराजोए केडे कंदोरो बांधवो कया शास्त्रमां कहेलो छे? ८५
३० साधुओने भिक्षार्थे शय्यातरने घरे जवुं कल्पे के केम ? ८५
३१ केटला कोशथी आणेलो अशनादिक आहार साधुओने कल्पे ? ८५
३२ पहेले पहोरे लावेलुं अशनादि, ते मुनिओने चोथे पहोरे
भोजन करवाने कल्पे? ८६

३३ संखडी प्रत्ये भिक्षार्थे साधुने जवुं न कल्पे त्यां " संखडी एटले शुं. अने तेनी केवी रीते व्युत्पत्ति थाय छे ते फरमावो? ८६
३४ परिहारविशुद्धिकमुनिमहाराजोने निद्रा होय? ८७
३५ अगीतार्थ मुनि एकाकीपणे विचरे? ८७
३६ स्थविरकल्पिकमुनिमंडलीमां " वृषभ " कोने कहेल छे ? ८७
३७ संवेगी छता पण जो ते अगीतार्थ होय तो तेनी पासे आलोयणा लेवी के केम ? ८७
३८ कोइ लज्जादि कारणथी गुरु पासे करेल पापकर्मनी आलोयणा न लेतो ते आराधक कहेवाय के केम? ८९
३९ आहारकलब्धिवंत चौद पूर्वधर मुनि भवभ्रमण करे ?.... ८९
४० साध्वीने नव कल्पविहार होय? ८९
४१ साधुओ तथा साध्वीओ रात्रिए वस्तिद्वार बंध करे के नहीं? ९०
४२ मुनिमहाराजो परस्पर केटलुं अंतर राखी शयन करे? ९०
४३ मुनिमहाराजो पात्रांथी केटले दूरशयन करे ? ९०
४४ महाविदेहक्षेत्रमां केटलां चारित्र पामीए? ९१
४५ मुनिओने ब्रीहिपलाल कल्पे? ९१
४६ मुनिओ चर्मपादुका पहेरे? ९१
४७ काणा माणसने दीक्षा अपाय के केम? ९२
४८ केटलाक कहेछे के साधुना गुणनी परीक्षा करीनेज साधुने वांदवा, अन्यथा न वांदवा तेनुं केम? ९२
४९ शिष्यकस्थापनाकल्प कोने कहीए? ९२
५० दीक्षावसरे नूतननाम स्थापनाना अक्षरो क्यांई हशे ? ९३
५१ खरां क्षमतक्षामणा कोणे कर्यां? ९३
५२ छद्मस्थगुरु केवळज्ञानवाळीसाध्वीने वांदे के केम? ९३
५३ नेत्रासन प्रमुख आसनपर मुनिओ बेसे? ९४

५४ स्नातकमुनिना जे पांचभेद कह्या छे ते शुं संभवे ? ९४

५५ श्रीस्थूलभद्रजीनी पांचमी बेननुं नाम शुं ? ९४

५६ श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता श्रीश्यामाचार्यजी श्रीसुधर्मास्वामिथी केटलामे पाटेछे ? ९५

५७ श्रीश्यामाचार्यजी कया महाराजाना शिष्य जाणवा ९५

५८ श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण पूर्वे कोण हता ?.... .... ९६

५९ अजीवसंयम, तथा अजीवअसंयम ते शुं ?.... .... ९६

६० अजीरूप पुस्तकादिकना ग्रहण परिभोगथी आरंभ सामारंभादि दोषो लागता हशे ? ९६

६१ पुस्तकादिक तो धर्मना उपकरण छे, एम कहीने ममत्वादि भावथी जेओ पुस्तकादिकोनो संग्रह परिभोग करेछे, तेओने परिग्रहदोष लागतो हशे के केम ? ९७

६२ मनना दंभनो त्याग कर्यो नथी ने तप, संयम, केश लोचादि धर्मकर्म करे तो ते फळे ? ९७

६३ अनुक्रमे शुद्ध एवी अध्यात्मयोग क्रिया केटलेगुणठाणे होय ? ९८

६४ कया जीवनी क्रिया अध्यात्मगुणवैरिणी जाणवी ? ९८

६५ भवाभिनंदी जीव केवो होय ? ९८

६६ कया जीवनी क्रिया अध्यात्मगुणने वृद्धि करनारी जाणवी? ९९

६७ समूर्च्छिमतिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय जीवोने छेल्लुं एक संहनन अने संस्थान होय के केम ? ९९

६८ देवताओने दांत तथा केश होय ? ९९

६९ मेरुपर्वतना चोथा पण्डक वनमां व्यन्तरना आवासा होय १००

७० अनुत्तरविमानना देवो श्रीशत्रुंजयतीर्थनी त्रिकरण योगथी सेवाभक्ति करे ? १००

७१ देवताओने पांच पर्याप्ति कही तेनुं शुं कारण ? १०१

७२ स्वर्गमां वनखण्डादि जे कह्युं छे ते पृथ्वीपरिणामरूपे के वनस्पतिपरिणामरूपे समजवुं ? १०१
७३ स्वर्गमां पुष्करणी (वाव) वीगेरे स्थले मच्छादिक, जे, कह्या छे, ते जीवपरिणामरूप छे, के ते आकारमात्र धरनाराओ छे. १०१
७४ देव, देवीसाथे मूलशरीरे करी, के उत्तरवैक्रियशरीरे करी भोगकर्म करे. १०२
७५ विजयराजधानीनो कील्लो केटलो उंचो कह्यो छे. १०२
७६ अणपन्नीय, पणपन्नीय, आदि आठ व्यन्तरविशेषनिकाय क्यां वसे छे. १०२
७७ एकावतारी देवोने छ मास आयुष्य बाकी रहे छते च्यवन चिन्हो उपजे ? १०४
७८ लवसप्तमदेवता कया समजवा ? १०५
७९ चोवीशप्रभुना चोवीश लंछन कहो. १०५
८० श्रीऋषभादि चोवीश जिनना वर्ण कहो. १०६
८१ श्रीऋषभादि चोवीश जिन कया कुळमां उत्पन्न थया ? १०६
८२ परमार्थ जाण्या विना अर्थ कहे ते केवो जाणवो ? १०७

चतुर्थःप्रकाशः

१ सर्वसंवररूपचारित्र कएगुणठाणे होय ? १०९
२ तामलीतापसने क्यारे समकितनी प्राप्ति थइ ? १०९
३ विग्रहगतिने पामेलो कोइ जीव अग्निकाय मध्येथी जतो थको दझाय के केम ? १०९
४ वैक्रियशरीरवाळो जीव अग्निकायमध्येथी जतोथकोदझाय? १०९
५ पृथ्वी वीगेरे पांच स्थावरकायने स्वामिओ हशे ? ११०

६ जेम बादरपृथ्व्यादिपांचस्थावरकायनेविषे प्रत्येके एक पर्याप्तकजीवनिश्राए बीजा असंख्याता अपर्याप्तकजीवो कह्या छे तेम सूक्ष्म पांच स्थावरकायने विषे एज रीते के केम? ११०
७ विकलेन्द्रियजीवोमनुष्यमांआव्याथकामनपर्यायज्ञाननेपामे? १११
८ जीवविचार प्रकरणमां जे "ग्राहा" जीवो कह्या छे ते स्वरूपे केवा होय? १११
९ श्री प्रज्ञापनासूत्रमां प्रथमपदविषे "शिशुमारा" जीवो कह्या छे ते कया? १११
१० कुकडा, तथा मोरना मस्तकमध्येरेहलीशिखासचित्त छे के अचित्त छे, के मिश्र छे? १११
११ अग्नि विषे उंदरनी उत्पत्ति हशे? ११२
१२ उंदरना लोमनुं रत्नकंबलवस्त्र बनेछे ते वात खरी हशे? ११२
१३ नपुंसकमासमां जे उत्तमवनस्पतिछे ते फळे के केम? ११३
१४ चूडेली (जीवविशेषः) द्वीन्द्रिय जीवछे के त्रीन्द्रिय जीवछे? ११३
१५ अतिस्निग्धपणाने लीधे त्रीजे आरे पण बादरअग्निनो अभाव कह्यो छे तो ऋषभदेवजीना समयमां तेनी उत्पत्ति शाथी? ११३
१६ एम संभळाय छे के कोइना उदरमां "गृहकोकिला" उत्पन्न थाय छे तेनुं शुं कारण? ११३
१७ मोतीने पृथ्विकायपणुं संभवे?.... .... ११४
१८ सर्पनुं "पवनभक्षी" नामछे ते शुं पवनने भक्षण करतो हशे? ११४
१९ एक सींघोडामां केटला जीवो कह्याछे? ११४
२० "कुट्टमित" शब्द स्त्रीओना केवा विलासभेदमां जोडायछे? ११४
२१ स्त्रीओना मायाकपटथी पुरुष ठगाय के? ११५
२२ लौकिकशास्त्रमां चार आश्रम कह्याछे ते कया अने ते क्यारे कोने होय? ११६

२३ लौकिकमते सीता पोतानुं सत्यपणुं जणावी क्यां गया हशे? ११७
२४ सूर्यना किरणोनी वधघट थती हशे ? ११७
२५ बत्रीस लक्षणो पुरुष कयो समजवो ? ११९
२६ लौकिक १८ पुराणना नाम दर्शावो ? १२०
२७ चौद विद्या गुणजाण कोने कहीए ? १२१
२८ केटलां नक्षत्रो ज्ञानवृद्धि करनारां हशे ?.... .... १२२
२९ चन्द्रादिग्रहो चारविशेषे करी प्राणिओने सुखदुःख विपा-
कना हेतुओ छे के नहीं ? १२३
३० विषव्याप्तअन्नने जोइ चकोर वीगेरे जीवोनेकंइथतुंहशे? १२६
३१ स्त्रीना अंग विषे कया दिवसे क्यां क्यां काम रहेछे?.... १२७
३२ "कुत्रिकापण" एटले शुं ? १२९
३३ "गोरस" शब्दनी केवी रीते व्युत्पत्ति थायछे ? अने
क्यां तेनी प्रवृत्ति होयछे ? १२९
३४ अपक्वगोरसमां कठोल जमवुं जेम जैनशास्त्रमां वर्ज्युं छे तेम
लौकिकशास्त्रमां वर्ज्युं हशे ? १३०
३५ अन्यदर्शनमां रात्रिभोजन नहीं निषेधेलुं होय ? १३०
३६ अन्यदर्शनना शास्त्रमां कंदमूल खावानी मना करीछे ? १३५
३७ ब्राह्मणोने राजप्रतिग्रह ग्राह्य छे ? १३७
३८ अन्यदर्शनमां देवताओने प्रसन्न करवा आठ पुष्पोथी पूजा
कही छे ते आठ पुष्पो कयां जाणवां ? १३८
३९ अन्यदर्शनमा कह्युं छे के पण्डितोए छ वस्तुओ न लेवी
तेम कोइने न देवी ते छ वस्तुओ कइ जाणवी ? १३९
४० १८ भार वनस्पति कहीछे ते श्रीजनमतअपेक्षाए के अन्य
मतअपेक्षाए अने ते केवी रीते इत्यादि सविस्तर वात कहो ? १३९
४१ "पाणिनि" नामना आचार्य स्वभावथी के कोइनाथी
मृत्यु पामेला छे ? १४०

४२ " दिवाकीर्त्ति " शब्दे शुं समजवुं ? १४०
४३ " यक्षमर्दम " कोने कहीए ? १४१
४४ " कर्णीरथ " एटले शुं ? १४१
४५ सौचधर्माधिकारिओने अत्यन्तमलिनदेहआत्मानुं निर्मल-
पणुपोतानीबुद्धिएकल्पेलतीर्थादिजलस्नानेकरोनेजथायछेशुं? १४२

पञ्चमःप्रकाशः

१ रात्रिए देवपूजादि शुभकार्य थाय ? १४७
२ मर्त्यलोकनो दुर्गंध उंचो क्यां सुधी जतो हशे ? १४७
३ मानुषोत्तरपर्वत अभ्यन्तरपुष्करवरद्वीपना अर्द्धमां छे, के
वाह्य पुष्करवर द्वीपना अर्द्धमां छे. के बेनी मध्ये छे ?.... १४८
४ जम्बूद्वीपपट्टादिकमांमहाहिमवानवर्षधरपर्वतपीतवर्णशाथीछे? १४८
५ पंचशत योजन पहोळा गजदंत गिरिपर सहस्र योजन पहो-
ळो सहस्रकुट शीरीते रह्यो ? १४९
६ पांचमा आराने अंते वैताढयपर्वतपर विद्याधरो अने तेओ-
ना नगरो रहेशे के केम ? १४९
७ जम्बूद्वीपनी जगतीनो " गवाक्षवलय " जगतीनी भींत-
मध्यगत छे के जगतीना उपर छे ? १५०
८ औषध, अने भेषजमां कंइ तफावत हशे ? १५०
९ श्रावक कोनीकोनी साथे व्यापार न करे ते कहो ?.... १५१
१० मुनिआश्रि चार प्रकारना श्रावक कह्या छे ते कया ?.... १५१
११ गृहस्थने पांच सूना दोष कह्या छे ते कया ? अने सू-
ना शब्दे करी शुं समजवुं ? १५३
१२ जेम कोइने गृहस्थवेषे केवलज्ञान उपजे छे तेम मनःपर्या-
यज्ञान उपजे के केम ? १५३

१३ बार व्रतनी पूंजामां " चार दिशा विमला तमारे " इ-
त्यादिक० त्यां " त्रिमलातमा " एटले शुं ? १५३
१४ पौषधमध्ये भोजन कराय एवा अक्षरो क्यांइ छे ?.... १५४
१५ आयंबीलमां हलदर कल्पे के केम ? १५४
१६ शंबूकावर्त्त फोडवांनहीं त्यां " शंबूकावर्त्त " शब्दे शुंसमजवुं? १५४
१७ चक्षुहीन माणसने केवलज्ञान उपजे ? १५५
१८ हालमां सुधरेल केटलाक श्रावको श्री देरासरमां पण उ-
त्तरासंग नथी राखता तेनुं शुं कारण ? १५५
१९ त्रण उभरावडे अचित्त थएलुं उष्णजल गळ्याविना पीवुं
कल्पे के केम ? १५५
२० कोइ गृहस्थ एकाशनादि तप कर्या विना उनुं पाणी पीए
छे ते पाणसना आगार ले ? १५५
२१ चोमासानी अठ्ठाइओ क्यांथी क्यां सुधी जाणवी ?.... १५५
२२ अचक्षुदर्शनमां स्वप्नदर्शननो अन्तरभाव थाय ? १५५
२३ संप्रतिकाले जीव ऊर्ध्वगतिमां तथा अधोगतिमां जाय तो
क्यां सुधी जाय ? १५६
२४ लेश्या कया कर्म मध्ये गणवी ? १५६
२५ कार्मणशरीरनुं स्वरूप केवी रीते समजवुं ? १५७
२६ कया आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवच्छेद थयो ? १५७
२७ श्री हेमचन्द्रसूरिजीनो जन्मादिकाल कयो ? १५७
२८ संक्षेपसामायिकनुं स्वरूप दृष्टान्त साथे कहो ? १५७
२९ प्राणवायु वीगेरे पांच वायु शरीरमां क्यां रहे छे ?.... १५९
३० नव प्रकारे रोगोत्पत्ति थाय छे ते नव प्रकार कया ? १६०
३१ उत्तम वैद्य केवा लक्षणवाळो होय ? १६१
३२ धन्वन्तरिसमान होय तो पण पांच वैद्यन शोभे ते कया ? १६२

३३ अढार द्रव्यदिशा तथा अढारभाव दिशा केवीरीते जाणवी? १६२
३४ श्रेणिकराजानुं " भंभासार " नाम शाथी ? १६३
३५ अधोलोकमां एक समये केटला सिद्ध थाय ? १६४
३६ १४ पूर्वना प्रमाणमां १६३८३ हाथी कह्याछे ते हाथी
कया क्षेत्रना लेवा ? १६४
३७ भव्य, अभव्यादि सर्व जीवनी मूळभूमिका कइ समजवी? १६४
३८ गोशाळे महावीरस्वामि उपर तेजोलेश्या मेली ते तेजोले-
श्यामी शक्ति केवी हती ? १६५
३९ साकार तथा निराकार उपयोगनो काळ केटलो ? १६५
४० स्त्रीसातमी नरकपृथ्वी विषे तथा सर्वार्थसिद्ध विषे जाय? १६६
४१ दरेक माणसे व्याख्यान केवी रीते सांभळवुं ? १६७
४२ जमालिना पितानुं नाम कोइपण शास्त्रमां देखातुं नथी एम
केटलाक कहेछे तेनुं केम ? १६७
४३ युद्धमां " महारथ " कोने कहीए ? १६८
४४ श्रेयांसकुमार कया महाराजाना पुत्र जाणवा ? १६८
४५ पंचमीदेववंदनविधिमां " निद्रास्वप्न जागरदशा० इत्यादि
आवी एक गाथा छे तेनो शो भावार्थ छे ? १६९
४६ " वरवर्णिनी स्त्री कइ जाणवी ? १६९
४७ "न्यग्रोधपरिमंडला"शब्द.केवालक्षणवाळीनारीविषेजाणवो १६९
४८ अक्षौहिणी तथा महाक्षौहिणीनुं शुं प्रमाण छे ? १७०
४९ स्त्यानर्द्धिनिद्रावाळाने वासुदेवना बळथी अर्द्ध बळ जे कह्युं
छे ते बल आजकाले होय के न होय ? १७१
५० नारक जीवोने मेदूसत्ता होय के ? १७१
५१ कःखेभाति० इत्यादि आ काव्यथी शुं समजाय छे ? १७२
५२ एक समयमां बे क्रिया होय ? १७४

५३ रजोहरण शब्दनो शो अर्थ छे १७४
५४ कोने पामीने सर्प्पोविषरहित थायछे ? १७४
५५ जे छंदना दरेक चरणमां पेलो, बीजो, चोथो, आठमो, अगीयारमो, तेरमो, अने चौदमो, ए सात अक्षर गुरुहोय. अने ते सीवायना बीजा सात अक्षर ह्रस्व होय. तो ते छंद कयो जाणवो ? १७५
५६ छंदशास्त्रमां केटला गण छे अने ते दरेक गण केटला अक्षरवाळो होय छे ? १७६
५७ "द्वन्द्वश्चप्राणितूर्यसेनाङ्गानां" ए सूत्रवडे करी एक वचनथायछे, तोकल्पकिरणाळीमां तथादीपिकामां "प्रतिपूर्णानां पाणिपादानां" एवो प्रयोग केम राख्यो हशे ?.... १७८
५८ केटला पल्योपमे एक सागरोपम थाय ? १७९
५९ आहारक शरीर कोने कहीए ? १७९
६० द्रव्यश्रुत अने भावश्रुत कोने कहीए ? १७९
६१ गुणहेतु तथा भवहेतु अवधिज्ञान कोने थाय ? ... १८०
६२ ज्ञान अने दर्शनमां शो भेद छे ? १८०
६३ प्रज्ञापरिषह, अने अज्ञानपरिषहनुं स्वरूप कहो. ... १८०
६४ मनुष्यलोकमां चन्द्र तथा सूर्य केटला छे ? १८१
६५ धातकीखण्ड पुष्करार्द्धना चार मेरु केवडा छे? १८२
६६ पांच अनुत्तरविमान कइ दिशाए जाणवां ? ... १८२
६७ श्रीजिनभवन, पौषधशाळा, अने ज्ञानभंडार, वीगेरे कोणे कोणे कराव्यां ते विषे थोडो अधिकार कहो? १८२

श्रीपर्युषणाष्टन्हिकाव्याख्यानग्रन्थ

विषयानुक्रमणिका.

विषयाङ्क.		पृष्टाङ्क.
१	आद्यमां बेश्लोकवडे मङ्गळ विगेरे चार बाबतो जणावेलीछे.	१
२	श्रीपर्युषणापर्वने सर्वोत्कृष्टपर्व कहेलछे.	१
३	पूर्वोक्तपर्वआवेछतेइन्द्रादिकदेवोनुंश्रीनंदीश्वरद्वीपविषेगमनक०	१
४	श्रावकवर्गे मनुष्यभवादिसामग्रीपामी उक्तपर्वमां धर्मविषे शीघ्रमेव विशेष प्रयत्न करवो क०	२
५	केमधर्मविषेशीघ्रमेव प्रयत्नकरवो तेवीकरेली शङ्कानुंसमाधान.	३
६	प्रमादवशेजेधर्मनथी सेवतातेकेवा जाणवा तेविषेसदृष्टान्तवर्णन.	४
७	हमेशां श्रीजिनमन्दिर जवुं ए विगेरे वर्णन.....	४
८	श्रीजिनपूजामाहात्म्य.	४
९	श्रीजिनपूजाफळप्राप्तिविषे दृष्टान्त.	५
१०	नित्यगुरुवन्दननिमित्तेउपाश्रये जवुं, तेमना मुखथी भाव सहित व्याख्यान सांभळवुं, विगेरे वर्णन.	५
११	भावविना व्याख्यान सांभळे तेने कांइ लाभथाय एवीक-रेली शङ्कानुं समाधान.	५
१२	श्रीकल्पसुत्रघरेपधराववा विगेरे वणन.	६
१३	श्रीकल्पसूत्रश्रवणविधि.	६
१४	श्रीकल्पसूत्रश्रवणफळ.	७
१५	मुनिदान, तथा ग्लानमुनि प्रमुखनी परिचर्य्या, अने दानफळप्राप्तिविषे दृष्टान्तो क०....	७
१६	साधर्मिकवात्सल्य, तेउपर भरतचक्रवर्त्तिनुंदृष्टान्त.	९

१७ सातक्षेत्रे धन वापरवा संबंधि अधिकार. १०

१८ श्रीजिनशासनविषे प्रभावना करवी क० .... १०

१९ श्रीजिनशासननी प्रभावनाथी थता गुणो क० .... १०

२० कृपणता न करवा विषे सदृष्टान्त वर्णन. ११

२१ शीलव्रतवर्णन, ते उपर सीता सतीनुं दृष्टान्त. ११

२२ सातव्यसन तजवा संबंधि सविस्तर वर्णन. १२

२३ तपवर्णन. १३

२४ तपमाहात्म्य. १३

२५ तप करवाउपर श्रीमहावीरस्वामीप्रमुखना दृष्टान्तो. १३

२६ मासक्षपणादि तप अवसरेसंघभक्ति, ज्ञानभक्तिपणकरवी क० १४

२७ हमेशां बेवखत प्रतिक्रण करवा संबंधि अधिकार. १४

२८ शुभभावना भाववा संबंधि वर्णन. १४

२९ शुभभावना शा माटे भाववी तेवी करेली शङ्कानुंःसदृष्टान्त समधान..... .... १४

३० भावनाफळप्राप्तिविषे भरतचक्री प्रमुखोनां दृष्टान्तो. १५

३१ श्रावकवर्गे उक्तपर्वमां सुवस्त्राभरणधरवां तेमज मनवचन कायानी शुद्धि करवी क० .... १५

३२ श्रीपर्युषणाष्टान्हिकाआव्यापहेलां पिष्टादिकृत्यो करवां विगेरे उत्सर्गापवाद क० .... १५

३३ कसाई विगेरे हिंसकप्राणीओना महारंभ बंध करावबा तथा तेमनो साथे व्यापार पण नहीं करवो क० .... १६

३४ बंधीखानां छोडाववां. १७

३५ अमारी पडहवगडाववो क० .... १७

३६ सर्वे आरंभनां काम वर्जवां (जिवदया पाळवी) १७

३७ जेम श्रीजैनधर्म विषे तेम अन्य धर्मो विषे पण जिवदया कहेली छे ते संबंधि सविस्तर वर्णन. १७

३८ पाणीहारुं, चुलो, घण्टी, खाण्डणी, सावरणी ए पांच स्थानके सारी जयणा राखवी क० .... १८
३९ श्रीजिनपूजादिअर्थे गृहस्थे केवी रीते स्नान करवुं ते संबंधि सविस्तर वर्णन १८
४० केवळ द्रव्य स्नानथी देह शुद्धि नथी थती ते उपर स्वपर शास्त्रना पुरावा आपेला छे १९
४१ क्रोधादि चार कषाय न करवा विषे वर्णन.... .... २०
४२ श्रीदेवगुर्वादिक कोइनी पण निंदा न करवी क० .... २०
४३ श्रीदेवगुर्वादिकनी निंदा करनाराओ भवांतरमां महादुःखोने पामे छे. २०
४४ दुर्जन माणसोनो संग न करवा विषेनुं वर्णन. २०
४५ देवादिद्रव्यने भक्षण, उपेक्षणादि करनाराओ नानाविध अशुभ कर्मना भोगवनारा थाय छे तेवुं स्वपरशास्त्रमां कहेलसविस्तरवर्णन २१
४६ जेसाधुदेवादिकद्रव्यनीरक्षानिमत्ते उपदेशनी उपेक्षणा करे तो ते साधुने पण अनन्त संसारी कह्यो छे. २३
४७ देवादिद्रव्यथीदूषित थयेल गृहस्थना घरनुं अन्नादि साधुने तेमज श्रावकवर्गने न कल्पवा विषेनुं वर्णन. २४
४८ देवादि द्रव्यनी रक्षा करनाराओने उभयलोकमां सत्फल प्राप्ति विषय वर्णन. २४
४९ आत्महितार्थिओए सात विकथा न करवी क० .... २५
५० सात विकथा करनार रागद्वेषवाळो होवाथी हिताहितने नहीजाणतो भवरूपअटवीमां पुनःपुनपरिभ्रमणकरे एवुं क० २५
५१ उत्तरिते श्रीपर्युषणापर्वनुं आराधन करवावडे भव्यजिवोने मोक्षप्राप्ति थाय छे एवुं छेवटमां दर्शावेल छे. २५
५२ ग्रन्थकर्त्तानी प्रशस्ति. २५

श्री पञ्चजिन स्तुति.

अनुक्रमणिका.

विषयाङ्क.				पृष्ठाङ्क.
१ श्रीआदिजिनस्तुति.	....	....	....	१
२ श्रीशान्तिजिनस्तुति.	....	....	....	२
३ श्रीनेमिजिनस्तुति.	....	....	....	३
४ श्रीपार्श्वजिनस्तुति.	....	....	....	३
५ श्रीवीरजिनस्तुति.	....	....	....	४

(ॐ नमः सिद्धं)

॥ श्रीप्रश्नोत्तरप्रदीपग्रन्थप्रारंभः ॥

प्रथमः प्रकाशः

श्रीमत्पार्श्वजिनंनत्वास्वपरबोधसिद्धये ॥ प्रश्नोत्तरप्रदीपोयंक्रियतेंतस्तमोपहः ॥१॥ सज्जनाःसन्तुसर्वेपिप्रसन्नमनसःसदा ॥ ममोपरियतस्तेह्यमत्सरिणः स्वभावतः ॥२॥

१ प्रश्न—श्रीजैनमतमां जेने देव मानेल छे. ते श्रीअर्हन्देव केवा छे ?

उत्तर—सर्वज्ञ एवा, अने वळी जित्याछे रागादिक दोषो जेणे एवा, तथा त्रणेलोकथी पूजाएला, तेमज यथास्थित अर्थने कहेनारा एवा, परमईश्वर श्रीअर्हन्देव छे.

यदुक्तं

श्रीहेमचंद्राचार्यकृतश्रीयोगशास्त्रे.

"सर्वज्ञोजितरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥
यथास्थितार्थवादीच देवोर्हन् परमेश्वरः ॥१॥"

२ प्रश्न—उक्तश्रीअर्हन्देवे केटलां कर्मो कहेलां छे ?

उत्तर—ज्ञानावरणादिक आठ कर्मो कहेलां छे, तेनो विस्तार श्री देवेन्द्रसूरिकृतकर्मग्रन्थथी जाणवो.

३ प्रश्न–कोनो नाश थवाथी मोक्ष थाय अने ते केवो थाय ते कहो?

उत्तर—पूर्वोक्त आठे कर्मनो नाश थवाथी, जन्ममरणादिकथी रहित, तथा सर्व आपदाओ विनानो, अने एकान्त सुख सङ्गमवालोएवो मोक्ष थाय छे. इत्यादि.

यदुक्तम्.

श्रीहरिभद्राचार्यकृतसिद्धस्वरूपाष्टके.

"कृत्स्नकर्मक्षयान्मोक्षोजन्ममृत्य्वादिवर्जितः ॥
सर्वबाधाविनिर्मुक्तएकान्तसुखसङ्गतः ॥ १ ॥"

४ प्रश्न–उपरना प्रश्नोत्तरमां प्रदर्शित जे मोक्ष तेनां नामो दर्शावो.

उत्तर—महानन्द, अमृत, सिद्धि, कैवल्य, अपुनर्भव, शिव, निःश्रेयस, श्रेयश, निर्वाण, ब्रह्म, निर्वृति, महोदय, सर्वदुःखक्षय, निर्याण, अक्षर, मुक्ति, मोक्ष अने, अपवर्ग, ए उक्तनामो सर्वे मोक्षनां जाणवां.

यदुक्तम्.

श्रीहेमचंद्राचार्यकृताभिधानचिन्तामणौ.

"महानन्दोमृतंसिद्धिः कैवल्यमपुनर्भवः ॥
शिवंनिःश्रेयसंश्रेयोनिर्वाणंब्रह्मनिर्वृतिः ॥ १ ॥
महोदयः सर्वदुःखक्षयोनिर्याणमक्षरम् ॥
मुक्तिर्मोक्षोपवर्गोथ"

५ प्रश्न–मोक्ष पामवानो उपाय कयो ते कहो.

उत्तर—सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्रात्मक जे योग, ते मोक्ष पामवानो उपाय जाणवो.

यदुक्तम्.

श्रीहेमचंद्रविरचिताभिधानचिन्तामणौ.

" मोक्षोपायोयोगोज्ञानश्रद्धानचरणात्मकः "

६ प्रश्न—सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं किञ्चित्स्वरूप बतावो. ?

उत्तर—यथावस्थितजीवादिकनवतत्त्वोनो संक्षेपथी, अथवा तो विस्तारथी जे अवबोध (ज्ञान) तेने पण्डित पुरुषो सम्यग् ज्ञान कहे छे. तथा श्रीजिनेश्वरकथितजीवादिकनवतत्त्वोने विषे जे रुचि थवी ते सम्यग् दर्शन कहेवाय, अने ते स्वाभाविक रीते अथवा गुरूपदेशथी उत्पन्न थाय छे, तेमां जे स्वाभाविक रीते थाय छे, ते निसर्ग सम्यग् दर्शन कहेवाय छे. अने जे गुरूपदेशथी थाय छे, ते अधिगम सम्यग् दर्शन कहेवाय छे. तथा सर्वसावद्ययोगोनो ज्ञान-दर्शनपूर्वक त्याग करवो, ते सम्यग् चारित्र कहेवाय अने ते चारित्र अहिंसादिव्रतभेदोवडे करीने पांच प्रकारनुं छे.

यदुक्तंश्रीयोगशास्त्रे.

"यथास्थिततत्त्वानांसंक्षेपाद्विस्तरेणवा ॥
योवबोधस्तमत्राहुःसम्यग्ज्ञानंमनीषिणः ॥ १ ॥
रुचिर्जिनोक्ततत्त्वेषुसम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥
जायतेतन्निसर्गेणगुरोरधिगमेनवा ॥ २ ॥
सर्वसावद्ययोगानांत्यागश्चारित्रमिष्यते ॥
कीर्त्तितंतदहिंसादिव्रतभेदेनपञ्चधा ॥ ३ ॥ "

आ सम्यग्ज्ञान, दर्शन चारित्ररूप रत्नत्रयीनुंविशेष स्वरूप श्रीयोगशास्त्रादिकथी जाणवुं.

७ प्रश्न–भवान्तरमा सद्गतिकोनी थायछे ?

उत्तर—जे माणस मरण समये पञ्चपरमेष्ठि नमस्काररूप पांचरत्नोने पोताना मुखमां धारण करेछे, ते माणसनी भवान्तरमा सद्गति थायछे.

यतः प्रोक्तम्,

"पञ्चतायाःक्षणेपञ्च रत्नानिपरमेष्टिनाम् ॥
आस्येदधातियस्तस्यसद्गतिःस्याद्भवान्तरे ॥१॥"

८ प्रश्न–कया माणसनो जन्म सफल थायछे ?

उत्तर—जे माणस भावथी, भोजन, वस्त्रादिकोवडे करीने साधर्मिक भाइओनुं वात्सल्यकरेछे, त माणसनो जन्म सफल थायछे.

यतः प्रोक्तम्,

"साधर्मिकाणांवात्सल्यंभोजनाच्छादनादिभिः ॥
यस्तनोतिनरोभावात्तज्जन्मसफलंभवेत् ॥ १ ॥"

९ प्रश्न–देवांशी माणस कोण जाणवो ?

उत्तर—जेनीपासे छ "दकारो" छे ते देवांशी माणस जाणवो अने ते "दकारो" नीचे मुजब जाणवा–देवपूजा, दया, दान, दाक्षिणता, दम, अने दक्षता.

यदुक्तम्.

"देवपूजादयादानंदाक्षिण्यंदमदक्षते ॥
यस्यैतेषडदकाराःस्युःसदेवांशीनरःस्मृतः ॥१॥"

१० प्रश्न—गृहस्थोने हमशां छ कार्योकरवानां कयां ?

उत्तर—देवपूजा, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप, अने दान, ए छ कार्यो गृहस्थोने हमेशां करवानां.

यदुक्तम्.

"देवपूजागुरूपास्तिःस्वाध्यायःसंयमस्तपः ॥
दानश्चेतिगृहस्थानांषट्कार्याणिदिनेदिने ॥ १ ॥"

११ प्रश्न—जैनसाधुओ जे भावरूप आठ उत्तम पुष्पोए करी श्रीदेवाधिदेवनी निरवद्यपूजा करे छे, ते आठ पुष्पो कयां ?

उत्तर—पहेलुं अहिंसारूपभावपुष्प. बीजुं सत्यरूपभावपुष्प. त्रीजुं अस्तेय (चोरीनो अभाव) ते रूपभाव पुष्प. चोथुं ब्रह्मचर्यरूपभावपुष्प. पांचमुं असङ्गता (परिग्रहनो त्याग) ते रूपभाव पुष्प. छठुं गुरुभक्तिरूपभावपुष्प. सातमुं तपरूपभावपुष्प. अने आठमुं ज्ञानरूपभावपुष्प ए भावरूप आठ उत्तम पुष्पो जाणवां.

यदुक्तंपूजाष्टके

"अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यमसङ्गता ॥
गुरुभक्तिस्तपोज्ञानंसत्पुष्पाणिचचक्षते ॥ १ ॥"

१२ प्रश्न—कोइ गुरुमहाराजे दण्डप्रहारे मार्यो थको कोइ शिष्य तत्काळ केवळज्ञान पाम्यो छे ?

उत्तर—हा, चण्डरुद्राचार्य नामना गुरुए दण्डप्रहारे ताडना कर्यो

थको नवदीक्षित तेमनो शिष्य शुभलेश्याए केवळज्ञान पाम्यो छे.

यदुक्तंश्रीदेवेन्द्रसूरिकृतभावकुलके

"सिरिचंडरुद्दगुरुणाताडिज्जंतोविदंडघाएहिं ॥
तक्कालंतस्सीसोसुहलेसोकेवलीजाओ ॥ १ ॥"

तेनी विस्तारवात श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनी टीकाथी जाणवी.

१३ प्रश्न—तीर्थ यात्रा समये विवेकी पुण्यात्मा माणस केवो होय ?

उत्तर—एक वखत भोजन करनारो होय, पृथ्वीपरसंथारो करनारो होय, पगेचालनारोहोय, शुद्धसम्यक्त्वने धरनारो होय सर्वसचित्तनो परिहरनारो होय, तथा ब्रह्मचारी होय.

तदुक्तम्

"एकाहारीभूमिसंस्तारकारीपद्भ्यांचारीशुद्धसम्यक्त्वधारी ॥ यात्राकालेसर्वसचित्तहारीपुण्यात्मास्याद्ब्रह्मचारीविवेकी ॥ १ ॥"

१४ प्रश्न—आ जगतमां कया पांच शकारो दुर्लभ जाणवा ?

उत्तर—शत्रुञ्जयतीर्थ, शिवपुर, शत्रुञ्जयनामा नदी, शान्तिनाथस्वामी, शमिओ (मुनिओ) ने दान, ए पांच शकारो दुर्लभ जाणवा.

यतःप्रोक्तम्

"शत्रुञ्जयःशिवपुरंनदीशत्रुञ्जयाभिधा ॥
श्रीशान्तिःशमिनांदानंशकाराःपञ्चदुर्लभाः ॥१॥"

१८ प्रश्न—पूछवा लायक कोण, ?

उत्तर—जे पण्डितोछे, तेज पूछवा लायकछे,

यतः ।

"जेपंडियातेखलुपूच्छियव्वा" इतिश्रीगौतमकुलक-वचनात् ॥

अत्र दृष्टान्त तरीके श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना संतानीया-स्थविरभगवान, जेके जातिकुलादिसम्पन्न अनेक गुण-गणालङ्कृत एवा, ते ग्रामानुग्राम विचरता पृथ्वीने पावन करता ज्यां धनधान्यादिक ऋद्धिवृद्धि सहित अति रमणिक तुंगीया नामे नगरीछे, ते नगरीनी बहार ईशान खुणे सुशोभित पुष्पवती नामे उद्यानछे, त्यां पधारताहवा यथा प्रतिरुप अवग्रह ग्रहीने संयम तपस्याने विषे आत्माने भाव-ताथका विचरेछे ते वखते तुंगीया नगरीमां एकदिशाए घणालोक वन्दनार्थे जतांदेखी तुंगीया नगरीना श्रमणो-पासकोने (श्रावकोने) जाण थवाथी परस्पर एकबीजाने तेडावी भेगाथइ मांहोमांही एमकहेताहवा हे देवानुप्रियो श्री पार्श्वनाथ स्वामिना अपत्यस्थविरभगवान सर्ववाते योग्य-ताने पामेला अत्रे पुष्पवती उद्यानमां पधार्या छे. हे देवानु-प्रियो तथा रूपस्थविरभगवानना जो नाम गोत्रसांभलीएतो महाफलथाय, तो वली सामाजइए, वंदनाकरीए नमस्कार करीए, प्रश्नपूछीए, अर्थग्रहीए, सेवाकरीए, तेनाफलनुं तो कहेवुंजशुं. माटे हे देवानुप्रियो आपणे जइए वन्दनाक-रीए, नमस्कार करीए, यावत् सेवाकरीए, ते आपणने

आ भवने विषे परभवने विषे कल्याणकारी, यावत् साथे आवनार थशे. एम परस्पर वात कबुल करी पोतपोताने घेरगया. पछी घेर जइ न्हाइ, धोइ, पोताना घर देरासर देवपूजा प्रमुखकरी गुरुवन्दनाए पहेरवा योग्य एवां मंगलकारी सुवस्त्राभरण पहेरी पोतपोताना घरमांथी नीकळी एकठा मळी पगे चालता थका अनुक्रमे पुष्पवती उद्याननेविषे आवी सचित्तवस्तुनो त्याग करे, अचित्तवस्तु पासे राखे, एकसाडी उत्तरासंग करे, स्थविरभगवानने नजरे दीठां हाथ बे जोडी अंजलि ग्रहण करे, मननी एकाग्रता करे, एम पांच अभिगम साचवता स्थविर भगवंतपासे आवे. त्रण प्रदक्षिणा देइ वांदी पूजी यथायोग्य स्थाने बेसता हवा. त्यार पछी स्थविरभगवाने ते तुंगीयानगरीना श्रमणोपासकोने (श्रावकोने) चार महाव्रतरूपधर्मदेशनादीधी त्यारे ते श्रमणोपासको (श्रावको) ते धर्मदेशना सांभळी हर्ष पाम्या. पुनः त्रण प्रदक्षिणा देइने विनयपूर्वक प्रश्न पूछता हवा. तेना यथार्थ उत्तर स्थविरभगवान पण देता हवा. ते सांभळी घणो हर्ष संतोष पाम्याथका स्थविरभगवानने वंदना नमस्कार करी प्रश्न पूछी अर्थग्रही सेवा करी पोतपोताने घेर जता हवा. स्थविरभगवान पण बीजा देशने विषे विहार करता हवा. अत्रविस्तारवात श्रीभगवतीसूत्रथी जाणवी माटे जे पण्डितो छे तेज पूछवा लायक छे. इत्यलम्.

१६ प्रश्न—पण्डित कोने कहीए ?

उत्तर—जे विरोधथी निवृत्त थया, ते पण्डितो जाणवा.

यतः

" तेपंडियाजेविरयाविरोहे " इतिश्रीगौतमकुल-कवचनात् ॥

आ वचनपरथी एम पण सिद्धता थाय छे के जे परस्पर विरोध करनारा छे, ते तत्त्वथी पण्डितो न जाणवा.

१७ प्रश्न—श्री जिनभवन बंधाववा कयो माणस अधिकारी छे ?

उत्तर—जे माणसे न्यायथी धन उपार्जन करेलुं छे, तेम जे बुद्धिमान् छे, मनोहर आशयवालो छे, सदाचारी छे, तथा जे गुर्वादिकथी अनुमत थएलो छे, तेज माणस श्रीजिनभवन बंधाववाने अधिकारी छे.

यदुक्तम्.

" न्यायोपार्जितवित्तोमतिमान् स्फीताशयः सदाचारः ॥
गुर्वादिमतोजिनभवनकारकः सोधिकारीस्यात् ॥ १॥ "

१८ प्रश्न—अन्यायथी उपार्जन करेलुं द्रव्य क्यां सुधी रहे छे ?

उत्तर—तेवुं द्रव्य फक्त दश वर्षो सुधीज रहे छे. पण शोलमुं वर्ष आवते छते ते मूल सहित नाश पामे छे.

तथाचोक्तम्.

" अन्यायोपार्जितंवित्तं दशवर्षाणितिष्ठति ॥
षोडशमेवर्षेप्राप्ते समूलञ्चविनश्यति ॥ १ ॥ "

१९ प्रश्न—आ चपळ लक्ष्मीनुं फळ शुं ते कहो.

उत्तर—श्री जिनमन्दिरो जीर्ण थयां होय तेमनो उद्धार करवो, श्री जिन सिद्धान्तोना परिमलथी सुगंधी आत्मावाला एवा सुपात्र विषे हमेशां दान देवुं, श्रीजिनेश्वर भगवाननी हमेशां भावभक्ति करवी, अने दीन, अनाथ, एवा माणसोनो उद्धार करवो. समस्त जगतनिवासि प्राणि उपर उपकार करवो, तथा एकेन्द्रियादि जीवोनुं रक्षण करवुं, एज आ चपल लक्ष्मीनुं फल छे.

उक्तञ्च.

"जीर्णोद्धारःश्रुतपरिमलामोदितात्मन्यजस्रं ॥
पात्रेदानंभगवतिजिनाधीश्वरेनित्यभक्तिः ॥
दीनानाथोद्धरणमनिशंविश्वविश्वोपकारः ॥
प्राणित्राणंफलमिदमहोचञ्चलायाःश्रियोस्याः ॥१॥"

२० प्रश्न—तप केवो करवो ते फरमावो.

उत्तर—जे तपथी मनने असमाधि न थाय, जे तपथी इन्द्रियोनी, तथा मन, वचन, अने कायाना योगोनी हाणी न थाय, तेवो तप करवो.

यदुक्तंश्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रटीकायाम् ॥

" सोहुतवोकायव्वोजेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥
जेणनइंदियहाणीजेणयजोगानहायंति ॥ १ ॥ "

२१ प्रश्न—तपथी निकाचित कर्मनो नाश थाय ?

उत्तर—हा, निकाचितकर्मनो पण नाश थाय.

यदुक्तंश्रीदेवेन्द्रसूरिकृततपकुलके

" अनिआणस्सविहीएतवस्सतवियस्सकिंपसंसामो॥
किज्जइजेणविणासोनिकाइयाणंपिकम्माणं ॥ १ ॥"

२२ प्रश्न–परिग्रह कोने कहेलो छे ?

उत्तर—मूर्छाने परिग्रह कहेलो छे, कारण के मूर्छा छे तेज परिग्रह छे. मूर्च्छा विनानो परिग्रह नथी.

तथाचोक्तंश्रीदशवैकालिकसूत्रे

" नसोपरिग्गहोवुत्तोनायपुत्तेणताइणा ॥
मुच्छापरिग्गहोवुत्तोइइवुत्तंमहेसिणा ॥ १ ॥"

२३ प्रश्न–लोभनुं दुर्जयपणुं शास्त्रमां शी रीते वर्णवेलुं छे ते कहो.

उत्तर—धनहीन माणस एकसोने इच्छे छे, अने सो मले त्यारे सोवालो हजारने इच्छे छे, तथा हजार मले त्यारे हजारवालो लाखने इच्छे छे, तथा लाख मले त्यारे लक्षाधिपति क्रोडने इच्छे छे, क्रोड मले त्यारे क्रोडपति राजापणाने इच्छे छे, तथा राजा थाय त्यारे राजा चक्रवर्तिपणाने इच्छे छे, तथा चक्रवर्ति थाय त्यारे ते देवपणाने इच्छे छे, तथा देवपणुं मळे त्यारे ते इन्द्रपणाने इच्छे छे, वळी इन्द्रपणुं मळे छते पण इच्छा ज्यारे निवृत्त थती नथी त्यारे ते लोभ कुंभारना चाकडापर रहेल शरावलानी पेठे मूलमां नानो पछी वृद्धि पामतो जाय छे. एवो दुर्जय लोभ छे.

यदुक्तंश्रीयोगशास्त्रे.

" धनहीनशतमेकं सहस्रंशतवानपि ॥

सहस्राधिपतिर्लक्षं कोटिंलक्षेश्वरोपिच ॥ १ ॥
कोटीश्वरोनरेन्द्रत्वंनरेन्द्रश्चक्रवर्त्तिताम् ॥
चक्रवर्त्तीदेवत्वंदेवोपीन्द्रत्वमिच्छति ॥ २ ॥
इन्द्रत्वेपिहिसम्प्राप्तेयदीच्छानविवर्त्तते ॥
मूलेलघीयांस्तल्लोभः शरावइववर्द्धते ॥ ३ ॥"

एवा दुर्जय लोभने वश थएला घणा जीवो नाना प्रकारना पापकर्म करी दुर्गतिने पाम्या छे. माटे धिक्कारहो तेवा लोभने.

२४ प्रश्न–भोगनुं तथा उपभोगनुं स्वरूप समजावो.

उत्तर—अन्न, तथा पुष्पमाळा वीगेरे जे एकजवार भोगवाय छे, ते भोग कहेवाय. अने स्त्रीआदिक जे वारंवार भोगवाय छे, ते उपभोग कहेवाय.

तथाचप्रोक्तंश्रीयोगशास्त्रे.

" सकृदेवभुज्यतेयःसभोगोन्नस्रगादिकः ॥
पुनः पुनः पुनर्भोग्यउपभोगोंगनादिकः ॥ १ ॥ "

२५ प्रश्न–प्राणिओनुं अन्तरङ्ग मन शी रीते जणाय ?

उत्तर—आकार, इङ्गित, गति, चेष्टा, वचन, अने नेत्र तथा मुखना विकारथी प्राणिओनुं अन्तरङ्ग मन जणाय छे.

तदुक्तम्.

" आकारैरिङ्गितैर्गत्याचेष्टयाभाषणेनच ॥
नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेंतर्गतंमनः ॥ १ ॥"

२६ प्रश्न—कोनोपारपामी शकायछे अने कोनोपामी शकातोनथी तेकहो.

उत्तर—अपार एवा समुद्रनो पारतो पामी शकायछे पण स्वभावथीज वक्र एवीस्त्रीओना दुराचरणनो पारपामी शकातोनथी.

तदुक्तञ्चश्रीयोगशास्त्रे ।

"प्राप्तुंपारमपारस्य पारावारस्यपार्यते ॥
स्त्रीणांप्रकृतिवक्राणां दुश्चरित्रस्यनोपुनः ॥ १ ॥"

२७ प्रश्न—आ संसारमां स्त्रीरूपीपाश कोणे मांड्योछे.

उत्तर—हत ब्रह्माए मांड्योछे, के जे पाशमां ज्ञानिओ अने अज्ञानिओ पण फसाइ जायछे.

तदुक्तम् ।

"हयविहिणासंसारे महिलारूवेणमंडिअंपासं ॥
बज्झंतिजाणमाणा अयाणमाणाविबज्झंति ॥ १ ॥"

२८ प्रश्न—कोनी तेज वृद्धिथायछे अने कोना रूपनो नाश थायछे ते दृष्टान्त पूर्वक कही बतावो.

उत्तर—उत्तम माणसना मार्गे चालनार माणसनी सूर्यनी पेठे तेजनी वृद्धिथायछे. अने स्वेच्छाचारे प्रवर्तनार माणसना रूपनोनाश वायुनी पेठे थायछे.

तथाहि ।

"सतापथाप्रवृत्तस्य तेजोवृद्धीरवेरिव ॥
यदृच्छयाप्रवृत्तस्य रूपनाशोस्तिवायुवत् ॥ १ ॥"

२९ प्रश्न—मा बापनी भक्तिकरनार माणसनुं वर्णनकरो.

उत्तर—जे माणस मा बापनी भक्तिकरेछे, ते माणस आलोकमां कृतज्ञछे, तथा ते माणस पोताना धर्मगुरुने पूजनारोछे, तथा ते शुद्ध धर्मने भजनारोछे.

यदाहुः पितृभक्त्यष्टकेपूज्यपादश्रीहरिभद्रसूरयः ।
"सकृतज्ञःपुमान्लोके सधर्मगुरुपूजकः ॥
सशुद्धधर्मभाक्चैव यएतौप्रतिपद्यते ॥ १ ॥"

३० प्रश्न—पुण्यानुबन्धिपुण्यकयुं कहेवाय के जेथी प्राणी मनुष्यरूपी सारा भवमांथी नीकलीने तेथी वधारे साराएवा देवभवमां जायछे ते कहो.

उत्तर—एकेन्द्रियादि जीवोनेविषे दया, वैराग्य, तथा श्रद्धासत्कारादिकविधिपूर्वकभक्तपानादिकथी गुरुपूजन, तथा हिंसादिपञ्चाश्रवत्यागरूपशुद्धवृत्ति, ते पुण्यानुबन्धि पुण्य कहेवाय.

यदुक्तं श्रीहरिभद्राचार्यकृतचतुर्विंशतितमाष्टके ।
"दयाभूतेषुवैराग्यं विधिवद्गुरुपूजनम् ॥
विशुद्धाशिलवृत्तिश्च पुण्यंपुण्यानुबन्ध्यदः ॥ १ ॥"

३१ प्रश्न—"संसारदावा" ए नामनी स्तुति कोणेकरीछे.

उत्तर—"संसारदावा" स्तुतिना अन्तमां विरहशब्दछे, तेथी ए स्तुति श्रीहरिभद्रसूरिए करीछे एम समजायछे, शार्थीके ते महाराजाना करेला पञ्चाशकादि जे ग्रन्थोछे, ते सर्वप्रायेविरहशब्दलांछितवालाछे, जोवाथी पकी खातरी थशे.

३२ प्रश्न—उद्योतपञ्चमीस्तुतिमां " देवाधिदेवागम " दशमो सुधाकुण्ड छे, एमजो कह्युंछे, तो बीजा नवसुधाकुण्ड क्यांछे?

उत्तर—नागलोकाधिष्टितनवसुधाकुण्डपातालमांछे.

तथाहितट्टीकायाम् ।

" पातालेनवामृतकुण्डानिसन्तिनागकुलैरधिष्टिता-
नीतिश्रुतिः ॥ इदन्तुभगवदागमरूपंदशमामृतकुण्डम् "

तथा श्रीहेमचन्द्राचार्यकृतश्रीऋषभचरित्रथी पण समजायछे के नवसुधाकुण्ड पातालमांछे.

तत्पाठोयथा ।

"वापिकूपसरोलक्षैः सुधासोदरवारिभिः ॥
नागलोकंनवसुधा कुण्डंपरिबभूवसा ॥ १ ॥"

उक्त बन्ने पाठ अन्य दर्शननी अपेक्षा राखनारा छे.

३२ प्रश्न—श्रीयशोविजयकृतनवपदपूजावीगेरेमां आजकालना केटलाएक लोको "अथ्थमिये जिनसूरज केवलवंदे जे जगदीवो" आम बोलेछे ते खरुंछे के केम ?

उत्तर—ना, ते खरुं नथी. "अथ्थमिये जिनसूरज केवलिचंदे जे जगदीवो" आम जो बोले तो ते खरुं कहेवाय. शाथी के तेनो खरो अर्थ नीचे प्रमाणे थायछे. श्रीतीर्थङ्करदेवरूपसूर्य, अने सामान्यकेवलीरूपचन्द्रपण अस्तपामेछते जे आचार्य छे ते आजगतमां दीपक समानछे वीगेरे.

यदुक्तंश्रीपालचरित्रे.

" अथ्थमिएजिणसुरेकेवलिचंदेविजेपईव ॥
पयडंतिइहपयथ्थेतेआयरिएनमंसामि ॥ १ ॥ "

एतद्गाथायाव्याख्या.

" जिनोर्हन्नेवसूरःसूर्यस्तस्मिन्नस्तमितेस्तंगतेसति पुनःकेवलीसामान्यकेवलीसएवचन्द्रस्तस्मिन्नप्यस्तमिते-सतिप्रदीपइवचयइहलोकेपदार्थान्प्रकटयन्तिप्रकटीकुर्वन्ति तानाचार्यान्नमस्यामि. "

३४ प्रश्न—जेम मुनिमहाराजो कोइ प्रत्ये कहे छे के अमुक माणसने धर्मलाभ कहेजो तेम तीर्थङ्कर भगवान कहे ?

उत्तर—हा तेम कहे, दृष्टान्त तरीके श्रीमहावीरस्वामिए अंबडप्रते कह्युं छे, के सुलसाने धर्मलाभ कहेजो अने ते वातने सिद्ध करनार एवो पाठ पण श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतशीलकुलकमांछे.

तद्यथा.

" सिरिवद्धमाणपहुणासुधम्मलाभुत्तिजीइपठविओ ॥
साजयउजएसुलसासारयससिविमलसीलगुणा ॥ १ ॥ "

अंबड साथे धर्मलाभ कहेवराव्यो तेवो पाठ लोकप्रकाशमां छे.

३५ प्रश्न—२४ तीर्थङ्कर क्यां मोक्षे गया ? अने ते केवा आसने रह्या थका मोक्षे गया ?

उत्तर—श्रीऋषभदेव अष्टापदने विषे, श्रीमहावीर अपापापुरीने विषे, श्री वासुपूज्य चंपानगरीने विषे, श्रीनेमिनाथ रैवताचळने विषे, अने बाकीना २० तीर्थङ्कर समेतशिखरने विषे मोक्षे गया. तेमां श्री नेमिनाथ, महावीरस्वामी, अने ऋषभदेव, ए त्रण तीर्थङ्कर पद्मासने रह्याथका अने शेष

बीजा २१ तीर्थङ्कर कायोत्सर्गासने (काउसग्ग आसने) रह्याथका मोक्षे गया.

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे

"नाभेयोष्टापदेवीरो पापायांपुरिनिर्वृतः ॥ वासुपूज्यश्चचम्पायां नेमी रैवतकाचले ॥ १ ॥ अन्येसमेतशिखरे पर्यङ्कासनसंस्थिताः श्रीनेमिवीरवृषभाः कायोत्सर्गासनाःपरे ॥ २ ॥"

३६ प्रश्न—केटला तीर्थङ्करने उपसर्ग थया अने केटलाने ते नथी थया ?

उत्तर—२४ मा तथा २३ मा ए बे तीर्थङ्करने उपसर्ग थया. तेमां पण २४ मा तीर्थङ्करने घणा थया अने २३ मा तीर्थङ्करने थोडा थया शेष २२ तीर्थङ्करने नथी थया.

तदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे

"श्रीवीरनेतुर्भूयांसः श्रीपार्श्वस्यचतेल्पकाः
द्वाविंशतेश्चशेषाणामुपसर्गानजज्ञिरे ॥ १ ॥"

३७ प्रश्न—२४ तीर्थंकरने देवदूष्य वस्त्र क्यां सुधी रह्युं ?

उत्तर—श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमां श्रीऋषभदेवने, अने श्रीकल्पसूत्रमां श्रीमहावीरस्वामिने, साधिकमास अधिक एक वर्ष रह्युं एम कह्युंछे. तथा सप्ततिशतस्थानमांतो श्रीवीरने साधिकमास अधिक एक वर्ष रह्युं अने ते सीवायना शेष २३-

तीर्थङ्करने ते देवदूष्य वस्त्र सदैव (यावज्जीव सुधी) रह्युं एम कह्युं छे.

तदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रेश्रीवृषभदेवस्यश्रीकल्पसूत्रेचश्रीमहावीरस्यसाधिकंवर्षदेवदूष्यस्थितिरुक्ता श्रीसप्ततिशतस्थानग्रन्थेच॥सक्कोयलरकमूलंसुरदूसंठवईसव्वजिणखंधे वीरस्सवरिसमहिअंसयाविसेसाणतस्सठिई ॥ इत्युक्तमितिज्ञेयम्. "

१८ प्रश्न–केटला तीर्थङ्कर आर्य, अनार्य देशमां अने केटला तीर्थंकर आर्यदेशमां विचर्या छे ?

उत्तर—श्रीमहावीरस्वामी, ऋषभदेव, नेमिनाथ, अने पार्श्वनाथ, ए चार तीर्थङ्कर छद्मस्थ अवस्थामां आर्य, अनार्यदेशमां विचर्या छे. अने ते सीवायना वीश तीर्थङ्कर तो सदाय आर्यदेशमांज विचर्या छे.

तथाचोक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" अभिग्रहानिमान्पञ्चाभिगृह्यपरमेश्वरः ॥
आर्यानार्येषुदेशेषुविजहारक्षमानिधिः ॥ १ ॥
एवंविजह्रुर्वृषभनेमिपार्श्वजिनेश्वराः ॥
आर्यानार्येषुशेषास्तुसदार्येष्वेवविंशतिः ॥ २ ॥ "

१९ प्रश्न–आर्यदेश तथा अनार्य देश क्यां होय ?

उत्तर—पंदर कर्मभूमिमां होय.

४० प्रश्न—आ भरतक्षेत्रना २५॥ आर्य देशनां नाम तथा तेमां श्री तीर्थङ्कर चक्रवर्त्यादि महापुरुषोनो जन्म होय तेम दर्शावो.

उत्तर—जे प्रख्यात मुख्य नगरोवडे करी उपलक्षित २५॥ आर्य देश छे ते नगरोनां नाम तथा २५॥ आर्यदेशनां नाम आ प्रमाणे छे.

१ राजगृह नगर ने मगधदेश.
२ चम्पापुरी ने अङ्गदेश.
३ ताम्रलिप्ती नगरी ने वङ्गदेश.
४ वाणारसी नगरी ने काशिदेश.
५ काञ्चनपुरी ने कलिङ्गदेश.
६ साकेत (अयोध्या) न० ने कोशलदेश.
७ गजपुर नगर ने कुरू देश.
८ सौर्यपुर ने कुशार्तकदेश.
९ काम्पील्य नगर ने पञ्चालदेश.
१० अहिच्छत्र नगर ने जङ्गल देश.
११ मिथिलापुरी ने विदेह देश.
१२ द्वारका नगरी ने सौराष्ट्र (सोरठ) देश.
१३ कौशाम्बीपुरी ने वत्स देश.
१४ भद्दीलपुर ने मलय देश.
१५ नान्दिपुरने सन्दर्भ देश.
१६ उच्छापुरी ने वरुणदेश.
१७ वैराट नगर ने मत्सदेश.
१८ शुक्तिमतिपुरी ने चेदि देश.
१९ मृत्तिकावतीपुरी ने दशार्ण देश.

२० वीतभयपुर ने सिन्धुदेश.
२१ मथुरापुरी ने सौवीर देश.
२२ अपापापुरी ने शूरसेन देश.
२३ भङ्गीपुरी ने मासपुरीवर्त्त देश.
२४ श्रावस्तीनगरी ने कुणाल देश.
२५ कोटीवर्ष नगर ने लाटदेश.
२५॥ स्वेतम्बी नगरी ने केतक (केकय) अर्द्धदेश.

उक्त २५॥ आर्यदेशमां श्री तीर्थङ्कर चक्रवर्त्यादि महापुरुषोनो जन्म होय.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे.

" तेचार्यदेशानगरैरुपलक्ष्याइमेयथा ॥ राजगृहेण मगधा अङ्गदेशस्तुचम्पया ॥ ६६६ ॥ वङ्गाःपुनस्ताम्रलिप्त्या वाणारस्याचकाशयः ॥ काञ्चनपुर्याकलिङ्गाःसाकेतेनचकौसलाः ॥ ६६७ ॥ कुरवोगजपुरेणसौर्येणचकुशार्तकाः ॥ काम्पील्येनचपञ्चालाअहिच्छत्रेणजाङ्गलाः ॥ ६६८ ॥ विदेहास्तुमिथिलयाद्वारावत्यासुराष्ट्रकाः ॥ वत्साश्चकौशाम्बीपुर्यामलयाभद्रिलेनतु ॥ ६६९ ॥ नान्दिपुरेणसन्दर्भावरुणाःपुनरुच्छया ॥ वैराटेनपुनर्मत्स्याः शुक्तिमत्याचचेदयः ॥ ६७० ॥ दशार्णामृत्तिकावत्यावीतभयेनसिन्धवः ॥ सौवीरास्तुमथुरयाशूरसेनास्त्वपापया ॥ ६७१ ॥ भंग्यामासपुरीवर्ताः श्रावस्त्याचकुणा-

लकाः ॥ कोटीवर्षेणलाटाश्च श्वेतम्ब्याकेतकार्द्धकाः ६७२
आर्यदेशाअमीएभिर्नगरैरुपलक्षिताः ॥ तीर्थकृच्चक्रभृत्कृ-
ष्णाबलानांजन्मयेषुहि ॥ ६७३ ॥"

४१ प्रश्न—३१९७४॥ अनार्य देश छे. तेमांथी केटलाएकना नाम तथा त्यांना अनार्य मनुष्योनी अज्ञाता निवेदन करो.

उत्तर—शकदेश, यवनदेश, शबरदेश, बर्बरदेश, कायदेश, मुरुंड-देश, उड्रदेश, गोड्रदेश, पत्कणदेश, अरपाकदेश, हूणदेश, रोमकदेश, पारसदेश, खसदेश, खासिकदेश, डौम्बिलिक-देश, लकुसदेश, भिल्लदेश, अन्ध्रदेश बुक्कसदेश, पुलिन्द देश, क्रौञ्चकदेश, भमरुतदेश, कुञ्चदेश, चीनदेश, वञ्चुक-देश, मालवदेश द्राविडदेश, कुलक्षदेश, किरातदेश, केकय-देश, हयमुखदेश, गजमुखदेश, तुरगाजमुख देश, हयकर्ण-देश, गजकर्णदेश, ए सीवाय बीजा पण अनार्य देशो छे. उक्त अनार्य देशोमाना अनार्यमनुष्यो धर्म एवा अक्षरोने पण जाणता नथी.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे.

"म्लेच्छास्तुशाकायवनाःशबराबर्बराअपि॥ कायामु-
रुंडाउड्राश्चगोड्राःपत्कणकाअपि ॥६७९॥ अरपाकाश्चहू-
णाश्चरोमकाःपारसाअपि ॥ खसाश्चखासिकाडौम्बिलिका-
श्चलकुसाअपि ॥ ६८० ॥ भिल्लाअन्ध्राबुक्कसाश्चपुलिन्दाः
क्रौञ्चकाअपि ॥ भमररुता कुञ्चाश्चचीनवञ्चुकमालवाः ६८१

द्रविडाश्चकुलक्षाश्चकिराताःकैकयाअपि ॥ हयमुखागजमुखास्तुरगाजमुखाअपि ॥ ६८२ ॥ हयकर्णागजकर्णाअनार्याअपरेपिहि ॥ मर्त्त्यायेषुनजानन्तिधर्मइत्यक्षराण्यपि ॥ ६८४ ”

४२ प्रश्न–निकाचित जिननामकर्मने कइगतिमां कोण शुं कृत्य करवा वडेकरीने उपार्जन करे ते फरमावो.

उत्तर—मनुष्यगतिमां पुरुष, स्त्री, अथवा नपुंसक, जेश्रीअरिहंतादिक वीशपदछे तेमांथीएक, बे, त्रणइत्यादि यावत् वीशे पदनीशास्त्रोक्त विधिपूर्वक आराधना करवावडेकरी निकाचित जिननामकर्मने उपार्जन करेछे इत्यादि लोकप्रकाश ग्रन्थमां कह्युंछे.

तथाचतद्ग्रन्थः

“ एकद्वित्र्यादिभिःस्थानैःसर्वैर्वासेवितैर्भृशम् ॥ जिननामार्ज्जयेन्मर्त्त्यःपुमान्स्त्रीवानपुंसकः ॥१॥ इत्यादि ”

४३ प्रश्न–रसोदयनी अपेक्षाये जिननाम कर्मनो उदय क्यां थायछे ?

उत्तर—केवलि अवस्थामां थायछे, एवुं नवतत्त्वनी अवचूरीमां कथनछे.

तद्यथा.

“ केवल्यवस्थायांतस्योदयःस्यात् ” तथैवकर्म०वृत्तौ

अत्र प्रसङ्गोपात लखीए छीएके जे वखते श्रीतीर्थंकर भगवानने

---

१ जिननामकर्मणः

केवलज्ञान उत्पन्नथाय छे तेवखते चार निकायना देवताओ समवसरणनी रचना करेछे त्यां प्रभुजी पूर्वदिशा सन्मुख रत्नमय सिंहासनपर बेसी धर्मदेशना दइ घणा भव्यजीवोने प्रतिबोधी चतुर्विध संघनी स्थापना करेछे ए वीगेरे घणो अधिकार छे, ते श्रीआवश्यकसूत्रादिथी जाणवो.

४४ प्रश्न–जिननामकर्मनो अबाधाकाल अन्तर्मुहूर्त्तनो कह्योछेते कइ अपेक्षाये ते कहो.

उत्तर—प्रदेशोदयनी अपेक्षाये कह्योछे. इतिकर्मग्रन्थवृत्तौ,

४५ प्रश्न–वैमानिक तथा आद्य नरक त्रिक सीवाय बीजास्थानथीआवी कोइ तीर्थंकर थयाछे !

उत्तर—वसुदेव चरित्रमां पुनः नाग कुमारना पण उधर्या आंतरा रहित आ अवसर्प्पिणी कालने विषे ऐरवतक्षेत्रमां चोवीशमा तीर्थङ्कर थया दर्शावेल छे. पण ते अर्थमां तत्त्वशुंछे ते केवलिमहाराजो जाणे एम श्रीप्रज्ञापना सूत्रनी टीकामां कहेल छे.

तथाचतट्टीका.

"वसुदेवचरित्रेपुनःनागकुमारेभ्योप्युद्वृतोनन्तरमैरवतक्षेत्रेस्यामेवावसर्प्पिण्यांचतुर्विंशतितमस्तीर्थङ्करउपदर्शितस्तदर्थतत्त्वंकेवलिनोविदन्ति"

४६ प्रश्न–जेम आ भरतक्षेत्रमां २० तीर्थंकर समेतशिखरने विषे सिद्धिवर्या तेम ऐरवतक्षेत्रमां २० तीर्थंकर क्यां सिद्धि वर्या ?

उत्तर—सुप्रतिष्ठगिरिने विषे सिद्धि वर्या.

यदुक्तंश्रीतीर्थोद्धारप्रकीर्णके.

" समेयंमिजिणंदावीसंपरिनिव्वुयाभरहवासे ॥ एरवएसुपइठेवीसंमुणिपुंगवासिद्धा ॥ १ ॥ "

४७ प्रश्न–श्री तीर्थंकर वीतरागदेवोने १८ दोष न होय ते कया ?

उत्तर—१ दानान्तराय.	७ रति.	१३ मिथ्यात्व.
२ लाभान्तराय.	८ अरति.	१४ अज्ञान.
३ वीर्यान्तराय.	९ भय.	१५ निद्रा.
४ भोगान्तराय.	१० [1] जुगुप्सा.	१६ अविरति.
५ उपभोगान्तराय.	११ शोक.	१७ राग.
६ हास.	१२ काम.	१८ द्वेष.

ए उक्त १८ दोष जाणवा. ते श्री तीर्थंकरदेवोने न होय.

उक्तञ्चाभिधानचिन्तामणौ.

" अन्तरायादानलाभवीर्यभोगोपभोगगाः ॥ हासोरत्यरतीभीतिर्जुगुप्साशोकएवच ॥ १ ॥ कामोमिथ्यात्वमज्ञानंनिद्राचाविरतिस्तथा ॥ रागोद्वेषश्चनोदोषास्तेषां[2]मष्टादशाप्यमी ॥ २ ॥ "

४८ प्रश्न–श्री सुविधिनाथथी श्री शान्तिनाथ पर्यन्त आठ तीर्थंकरोना सात आंतरामां तीर्थनो व्यवच्छेद काल केटलो ?

उत्तर—सातेनो भेळो थई पोणात्रण पल्योपम जाणवो.

---

१ खराब वस्तु देखी नाक मचकोडवुं ते जुगुप्सा कहेवाय.

२ तीर्थंकराणाम्

यतः

" चउभागो १ चउभागो २ तिणियचउभागा ३ पलियचउभागो ४ तिणेवयचउभागा ५ चउथ्थभागोय ६ चउभागो ७ ॥ १ ॥ " इतिवचनात्

४९ प्रश्न—श्री तीर्थंकर भगवानने प्रथमनी त्रण समिति होय पण छेल्ली बे समिति न होय कारण के तेमने भांडोपकरण नाशिकामल वीगेरेनो अभाव छे छतां श्री कल्पसूत्रमां पञ्चसमिति केम कही छे ?

उत्तर—श्री तीर्थंकर भगवानने भांडोपकरण नाशिकामल वीगेरेनो असंभव छतां पञ्चसमिति नाम खण्डित नही थवा माटे छेल्ली बे समिति कही छे एम श्री कल्पदीपिकामां निवेदन करेल छे अने तेज कारणथी श्री कल्पसूत्रमां पञ्चसमितिनो पाठ छे.

तथाचतद्दीपिका.

" एतच्चान्त्यसमितिद्वयंभगवतोभाण्डसिङ्घानाद्यसंभवेपिनामाखण्डनार्थमिथ्थमुक्तम् "

५० प्रश्न—सामान्य केवली तीर्थंकरने नमस्कार न करे एवो उल्लेख क्यांइ छे ?

उत्तर—सामान्य केवलि महाराजो तीर्थंकर महाराजोने नमस्कार न करे इत्यादि वातनो उल्लेख लोकप्रकाशमां छे.

५

तद्यथा.

" मुनयः केवलज्ञानशालिनोथजिनेश्वरान् ॥ त्रिश्चप्रदक्षिणीकृत्यकृत्वातीर्थनमस्कृतिम् ॥१॥ यथाक्रम-निविष्टानांपृष्टतोगणधारिणाम् ॥ निषीदन्तिपदस्थानांर-क्षन्तोगौरवंस्थितेः ॥ २ ॥ कृत्यकृत्यतयाताद्दक्कल्पत्वाच्च-जिनेश्वरान्ननमस्यन्तितीर्थन्तुनमन्त्यर्हन्नमस्कृतम् ॥३॥"

तथा सामान्य केवली तीर्थंकरने न वांदे एवा भावने सूचव-नारी एक गाथा श्रीधनपालकविकृतश्रीऋषभपञ्चाशिकामांछे.

तद्यथा.

" होहीमोहच्छेओतुहसेवाएधुवत्तिनिंदामि ॥ जं-पुणनवंदिअव्वोतथ्थतुमंतेणझिझामि ॥ १ ॥"

तथात्र श्री बाहुबळ केवलिनुं दृष्टान्त पण छे जेमके श्री बाहु-बळ केवली श्री ऋषभदेव भगवानने फक्त प्रदक्षिणा करीनेज केव-लिनी पर्षदामां बेठा छे पण भगवानने वांद्या नथी आ वात श्री शत्रुञ्जय माहात्म्यमां छे.

तद्यथा.

" सम्प्राप्यैवंव्रतिनामुनीशोदिव्यावरज्ञानविशुद्ध तत्त्वः ॥ प्रदक्षिणीकृत्यजिनंसदक्षःसंज्ञानिनांपर्षदमास-साद ॥ १ ॥"

---

१ धनपाल, शोभनाचार्यना संसारी भाइजाणवा.

२ बाहुबलकेवली.

तथा बीजुं दृष्टान्त १५०० तापस केवलि महाराजोनुं छे. जेमके तेपण श्रीवीरभगवानने वांद्या विना फक्त तीर्थनेज प्रणाम करी केवलिनी पर्षदामां बेठा छे इत्यादि वातनो उल्लेख श्रीभगवतीसूत्रनी टीकामां पण छे.

तथाचतट्टीका.

" किलभगवतागौतमेनचैत्यवन्दनायाष्टापदंगत्वा-प्रत्यागच्छतापञ्चदशतापसशतानिप्रव्राजितानिसमुत्पन्न-केवलानिचश्रीमन्महावीरसमवसरणमानीतानितीर्थप्रणा-मकरणसमनन्तरञ्चकेवलिपर्षदिसमुपविष्टानि गौतमेनचा-विदिततत्केवलोत्पादव्यतिकरेणाभिहितानियथाभोसाध-वोभगवन्तंवंदध्वमितिजिननायकेनचगौतमोभिहितोय-थागौतममाकेवलिनामाशातनांकार्षीस्ततोगौतमोमिथ्या-दुष्कृतमदादित्यादि "

किम्बहुनेत्यलंविस्तरेण.

५१ प्रश्न—तीर्थंकरने अर्थे करेलुं होय ते बीजा साधुओने कल्पे ?

उत्तर—जेम तीर्थंकरने अर्थे देवोए करेलुं समवसरण बीजा साधुओने कल्पे छे तेम शास्त्रोक्तयुक्तिवडे युक्त एवुं बीजुं जे कंइ होय तो तेपण कल्पे. एवुं पिण्डविशुद्धिनी अवचूरिमां कह्युं छे.

तथाचतदवचूरिः

" तीर्थकरार्थंदेवैःसमवसरणंकृतंयतीनांयथाकल्पते-तथापरमपि "

५२ प्रश्न—तीर्थङ्करने अर्थे देवोए करेलुं समवसरण तीर्थङ्कर केम भोगवे छे ?

उत्तर—तीर्थङ्करनामकर्मना विपाकोदयने ए प्रकारे वेदवामां आवे छे. माटे एमां दोष नथी. एम पिण्डविशुद्धिनी अवचूरिमां कह्युं छे.

तथाचतदवचूरिः

"यद्येवंसर्वज्ञार्थंदेवैःसमवसरणंकृतंकथममावुपभुङ्क्ते-उच्यतेतीर्थकरनामविपाकस्येथ्थंवेद्यमानत्वान्नदोषः"

५३ प्रश्न—कइ जग्योए देवता समवसरणनी रचना करे ?

उत्तर—जे जग्योए पूर्वे कोइ वखत समवसरण नथीथयुं, त्यां अने जे जग्योए कोइ इन्द्रादिक महर्द्धिक देवता भगवानने वांदवा आवे, त्यां अवश्य देवता समवसरणनी रचना करे.

यदुक्तंश्रीसमवसरणस्तवे.

"पुव्वमजायजथ्थउजथ्थ[1]इसुरोमहिद्धिमघवाइ ॥
तथ्थोसरणंनियमासययं[2]पुणपाडिहेराइं ॥ १ ॥"

५४ प्रश्न—समवसरणमां बारेपर्षदा बेसीने प्रभुनी देशना सांभले के केम ?

उत्तर—ना, बारेपर्षदा बेसीने सांभलती नथी, किन्तु चारप्रकारनी देवीओ अने साध्वीओ ए पांचपर्षदाओ उभी रहीथकी सांभले तथा चार प्रकारना देवता, नर, नारी अने साधुओ ए सातपर्षदाओ बेसीने सांभले, एवो श्रीआवश्यकसुत्र-

---

१ यत्रैति २ सततं पुनः प्रातिहार्याणि .

वृत्तिनो अभिप्राय छे अने श्रीआवश्यकचूर्णिनो अभिप्राय तो, एवो छे के साधुओ उत्कटिकासने (उकडु आसने) सांभले. वैमानिक देवीओ, अने साध्वीओ, उभीरहीने सांभले. शेष नव पर्षदा, बेसीने प्रभुनी देशना सांभले.

तथाचोक्तंश्रीसमवसरणस्तवे

" चउदेविसमणिउद्धठियानिविट्ठानरित्थिसुरसमणा ॥ इयपणसगपरिससुणंतिदेसणंपढमवप्पंतो ॥१॥ इयआवस्सयवित्तीवुत्तंचुन्नीइपुणमुणिनिविट्ठा ॥ वेमाणणिसमणीदोउद्धासेसठियाउनव ॥ २ ॥ "

५५ प्रश्न—समवसरणमां प्रभुना विश्रामार्थे देवताओ देवच्छन्दानी रचना क्यां करे ?

उत्तर—मध्यगढमां ईशान खुणे करे.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे.

" प्राकारेमध्यमेपूर्वोदीच्यां[1]दिशिदिवौकसः[2] ॥
देवच्छन्दं[3]विदधिरेस्वामिविश्रामहेतवे ॥ १ ॥ "

५६ प्रश्न—भगवाननी पहेला पहोरनी देशना पूर्ण थया पछी बीजे पहोरे गणधर महाराजा क्यां बेसी देशना दे ?

उत्तर—राजाना लावेल सिंहासनने विषे बेसी, अथवा भगवानना पादपीठने विषे बेसी देशना दे.

---

१ ऐशान्याम्. २ देवाः ३ प्रभुविश्रामस्थानम्.

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" ततोद्वितीयपौरुष्यामाद्योन्योवागणाधिपः ॥
सिंहासनेनृपानीतेपादपीठेथवार्हताम् ॥ १ ॥ "

५७ प्रश्न–श्री ऋषभदेवना प्रथम गणधरनुं नाम पुण्डरीक छे के ऋषभसेन छे ?

उत्तर—पुण्डरीक कहो, अथवा ऋषभसेन कहो ए एकज छे. कारण के ऋषभसेन ए पुण्डरीकनुं नामान्तर छे.

तथाहिश्रीलोकप्रकाशे.

" कल्पसूत्रेचप्रथमगणधरऋषभसेनइत्यभिधीयतेपुण्डरीकस्यैवनामान्तरमिदमित्यन्ये "

५८ प्रश्न–श्री ऋषभदेवस्वामिने प्रथम पारणे केटला सेलडीरसना घडा कह्या छे ?

उत्तर—श्री आवश्यकचूर्णिमां एक सेलडीरसनो घडो कह्यो छे अने श्रीपद्मानन्दकाव्य, हैमऋषभचरित्रमां तो सेलडीरसना घडा घणा कह्या छे.

तथाचोक्तंलोकप्रकाशे.

" अत्रचावश्यकचूर्णावेकइक्षुरसघटउक्तःपद्मानन्दकाव्यहैमऋषभचरित्रयोस्तुबहवउक्तासन्तीतिज्ञेयम् "

५९ प्रश्न–जो दीक्षा दिवसथी (चैतरवद ८ थी) पारणाना दिवस सुधी (वैशाख सुद त्रीज सुधी) गणीए तो वर्ष उपरांत

साधिक मास थाय छे. तेम छतां श्री ऋषभदेव भगवाने वर्षीपारणुं कर्युं एम केम कहेवाय छे ?

उत्तर—कंइंक अधिकनी विवक्षा करी नथी एम संभावना थाय छे एम श्रीलोकप्रकाशमां खुलासो करेलो छे.

६० प्रश्न–श्री नेमिनाथने केटला गणधर कह्या छे ?

उत्तर—श्रीकल्पसूत्रमां १८ अने श्रीप्रवचनसारोद्धारमां ११ कह्या छे, ते मतान्तर छे माटे बहुश्रुत कहे ते खरुं.

६१ प्रश्न–श्री नेमिनाथनी अपराजितविमानमां केटली स्थिति हती ?

उत्तर—श्री कल्पसूत्रने अनुसारे बत्रीस सागरोपमनी स्थिति हती.

तथाचतत्सूत्रम्.

" अपराजिआओमहाविमाणाओबत्तीसंसागरोव-मठिआओइत्यादि "

अने श्री कल्पकिरणावली तथा कल्पदीपिकामां तो ए ठेकाणे एवो पाठ छे के क्यांक तेत्रीस सागरोपम पण देखाय छे माटे ए पाठने अनुसारे करी तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति हती एम पण समजाय छे.

तथाचतत्पाठः

" बत्तीसत्तीक्वचित्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यपिदृश्यन्ते "

वळी श्री शीलोपदेशमाळामां तथा श्री नेमिनाथना रासमां, तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही छे. अने श्री कल्पसूत्रमां कहेली बत्रीस सागरोपमनी स्थितिने मतान्तरपणे प्रतिपादन करेली छे. वास्ते आ ठेकाणे बहुश्रुतमहाराजाओ कहे ते प्रमाण.

६२ प्रश्न—विजयादि चार विमानमां देवोनी जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति केटली निवेदन करेली छे ?

उत्तर—श्री प्रज्ञापनासूत्रमां जघन्य ३१ सागरोपमनी अने उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी स्थिति निवेदन करेली छे. तथा श्री समवायाङ्गसूत्रमां तो जघन्य ३२ सागरोपमनी अने उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी स्थिति निवेदन करेली छे.

तथाचोक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" एकत्रिंशद्वारिधयश्चतुर्षुविजयादिषु ॥ स्थितिर्जघन्योत्कृष्टातुत्रयस्त्रिंशत्पयोधयः ॥ १ ॥ इतिप्रज्ञापनाभिप्रायःसमवायाङ्गेतुविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणंभंतेदेवाणंकेवइयंकालंठिईपं०गोयमाजहन्नेणंबत्तीसंसागरोवमाइंउक्कोसेणंतेत्तीसंसागरोवमाइं "

६३ प्रश्न—पण्डितश्रीवीरविजयगणिवर्यकृतपञ्चकल्याणकपूजामां " देवदूष्य इन्द्रेदियुंरे रहेशे वर्षचत्ततीस नमो० " आम कह्युं छे. त्यां " चत्ततीस " शब्दे करी केटलां वर्ष जाणवां ?

उत्तर—चत्त एटले ४० अने तीस एटले ३० बन्ने मळी ७० वर्ष जाणवां कारण के श्रीपार्श्वनाथ भगवाननुं १०० वर्षनुं आयुष छे, तेमांथी ३० वर्ष घरमां वस्या ते बाद करतां बाकी ७० वर्ष रह्यां ते अहीं दीक्षा अवसरे इन्द्रे दीधेल देवदूष्य वस्त्रनी स्थितिआश्रि जाणवां अत्र देवदूष्य वस्त्रनी स्थिति पण श्री कल्पसुबोधिकामां दर्शावेल सदाय सचेलकपणानी अपेक्षाए तेटलीज छे, आवी प्रगट वात

छतां " चत्ततीस " एटले ३४ वर्ष जाणवां आम बोलनाराओने तो साक्षात् अंधारे कुटावा जेवुं थाय छे ते मोटी खेद भरेली वात छे. हा, जो, इहां " चउतीस " शब्द होय अने तेम बोलता होय, तो ते ठीक छे, पण इहां तो ते शब्दनो बीलकुल संभवज नथी, किन्तु " चत्ततीस " ए शब्दनोज संभव छे. अने ते शब्दे करी उपर लख्या मुजब ७० वर्षज जाणवां. अर्थात् इन्द्रे दीधेलुं देवदूष्य वस्त्र श्रीपार्श्वनाथस्वामि पासे ७० वर्ष रहेशे. कहेवानो ए तात्पर्यार्थ छे.

६४ प्रश्न—श्री वीरप्रभुना मातापिता कए देवलोके गयां ते कहो.

उत्तर—श्री आचाराङ्गसूत्रमां, बारमे देवलोके गयां अने श्री प्रवचन सारोद्धारमां, चोथे देवलोके गयां प्रतिपादन करेलां छे. पण तेनो निर्णय केवलिगम्य छे.

यदुक्तंश्रीहीरप्रश्ने.

" श्रीमहावीरस्यमातापितरावाचाराङ्गमध्येद्वादशेदेवलोकेप्रवनसारोद्धारेचतुर्थेगतौप्रतिपादितौस्तस्तन्निर्णयस्तुकेवलिगम्यः "

६५ प्रश्न—जेम पहेला छेल्ला तीर्थंकरना शरीरमान विषे भेद छे, तेम बळ विषे भेद केम नहीं ?

उत्तर—शरीरमान विषे भेद छतां पण बळ विषे भेद न होय शाथी के अपरिमित बळवाळा (अविशेष अनंतबळवाळा) सर्व तीर्थंकर कह्या छे.

यतः

" अपरिमियबलाजिणवरिंदा " इत्यागमप्रामाण्यात्

६६ प्रश्न-श्रीमहावीरस्वामिना तीर्थमां कया नव जीवोए तीर्थङ्करनाम कर्म उपार्जन कर्युं ते कहो.

उत्तर— १ श्रेणिक. ४ पोट्टिलअणगार. ७ शतक.
२ सुपार्श्व. ५ दृढायु. ८ सुलसा.
३ उदायी. ६ शंख. ९ रेवती.

आ उपर लख्यामुजब नवजीव समजवा.

तदुक्तंश्रीस्थानांगसूत्रे.

"समणस्सभगवओमहावीरस्सतित्थंमिनवहिंजीवेहिंतित्थयरनामगोयकम्मेनिव्वित्तिएतंजहासेणिएणंसुपासेणंउदाइणापुट्टलेणंअणगारेणंदढाउणासंखेणंसयएणंसुलसाएसावियाएरेवइए"

पूर्वोक्त नवजीव जे नामे जेटलामा तीर्थंकर थशेतेक०श्रेणिक-ते महापद्मनामे पहेला तीर्थंकर थशे. सुपार्श्व-ते सुरदेव नामे बीजा तीर्थंकर थशे. उदायी-ते सुपार्श्वक नामे त्रीजा तीर्थंकर थशे. पोट्टिल अणगार-ते स्वयंप्रभनामे चोथा तीर्थंकर थशे. दृढायु-ते सर्वानुभूतिनामे पांचमा तीर्थंकर थशे, शङ्ख-ते उदय नामे सातमा तीर्थंकर थशे. शतक-ते शतकीर्त्ति नामे दशमा तीर्थंकर थशे, सुलसा-तेचित्र गुप्तनामे १६ मा तीर्थंकर थशे. रेवती-ते समाधि नामे १७ मा तीर्थंकर थशे आ प्रासंगिक हकीकत श्रीसमवायांगसूत्रने अनुसारे लखी छे.

तथाचतत्सूत्रम्.

"महापउमे १, सुरादेवे २, सुपासेय ३ सयंपभे

---

१ "पद्मनाभ" एवुंपण नाम छे.

४ सव्वाणुभूई ५ अरहादेवस्सुएय ६ होरकई ॥१॥ उद-
ए ७ पेढालपुत्तेय ८ पोट्टिले ९ सयएइय १० मुणिसु-
व्वएय ११ अरहासव्वभावविऊजिणे ॥२॥ अममे १२ णि-
क्कसाएय १३ निप्पुलाएय १४ निम्ममे १५ चित्तगुत्ते
१६ समाहीय १७ आगमिस्सेणहोरकई ॥३॥ संवरे १८
अणिअट्टीय १९ विजये २० विमलेइय २१ देवोववाए
२२ अरहाअणंतविरिए २३ भद्देविय २४ ॥ ४ ॥ "

इति महापद्मादीनांनामक्रमः ॥ तत्पूर्वभवनामक्रमस्त्वेवम् ॥

" सेणिय १ सुपास २ उदए ३ पोट्टिलअणगार-
४ तहदढ्ढाउय ५ कत्तिअ ६ संखेय ७ तहानंद ८ सु-
नंदेय ९ सयएय १० ॥१॥ बोधव्वादेवइ ११ चेवसच्चइ १२
तहवासुदेव १३ बलदेवे १४ रोहिणी १५ सुलसा १६ चे-
वततोखलुरेवती १७ चेव ॥२॥ ततोहवइसयाली १८
बोधव्वेखलुतहाभयालीय १९ दीवायणेय २० कण्णे २१
ततोखलुनारए २२ चेव ॥३॥ अंबडेअ २३ तहासाइबु-
द्धेय २४ होइबोधव्वेउस्सप्पिणीआगमेस्साएतिथ्थयराणं-
तुपूव्वभवा ॥ ५ ॥ "

अत्र वासुदेव जीव १३ मा तीर्थंकर कह्या. परन्तु श्रीअंतगड-
दशासूत्रमां तो १२ मा तीर्थंकर कह्या छे. तत्त्वनी वात ज्ञानी जाणे.

६७ प्रश्न—पद्मनाभादि २४ तीर्थङ्कर क्या मोक्षे जशे ?

उत्तर—श्रीरैवतगिरिने विषे मोक्षे जशे. एम पं० श्रीवीरविजयगणि कृतदेववंदनमां क०

६८ प्रश्न–केटलाक कहे छे के रावण आवती चोवीशीमां तीर्थङ्कर थवाना छे ते वात खरी छे ?

उत्तर—श्रीसमवायाङ्गसूत्रादिकमां ज्यां श्री पद्मनाभादिक २४ तीर्थंकरना पूर्व भव संबंधी नामो दर्शावेल छे, त्यां "रावण" एवुं नाम बीलकुल आवतुं नथी माटे पूर्वोक्त वात खरी नथी. खरी वात तो ए छे के रावण अने लक्ष्मण बन्ने चौदमे भवे तीर्थंकर थइ मोक्षे जशे. आ ठेकाणे घणी विस्तार वात छे, ते श्रीहेमचन्द्राचार्यकृतश्रीजैनरामायणथी जाणवी.

६९ प्रश्न–उत्सर्प्पिणी कालमां छेल्ला तीर्थंकरनुं तीर्थ क्यां सुधी चालशे ?

उत्तर—श्री ऋषभदेव भगवाननो एक हजार वर्षे न्युन एक लाख पूर्वनो केवलज्ञानपर्याय कह्यो छे तेवा संख्याता ज्ञानपर्याय सुधी चालशे. एम श्री प्रवचनसारोद्धारमां कह्युं छे श्रीभगवतीसूत्रवृत्तिमां पण तेमज कह्युं छे.

यदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

"उस्सप्पिणीअंतिमजिणतित्थंसिरिरिसहनाणपज्जायासंखिज्जाजावईयातावयमाणंधुवंभविही ॥१॥" श्रीभगवतीसूत्रवृत्तावपितथैवप्रोक्तम्

७० प्रश्न–महाविदेहविजयमां एक केवलिजिन, अथवा छद्मस्थजिन विचरता होय त्यारे अन्य तीर्थंकरोनो जन्मादि होय ?

उत्तर—ना, अन्य तीर्थंकरोनो जन्मादि न होय.

यदुक्तंश्रीहीरप्रश्ने.

" महाविदेहविजयेषुविहरत्सुकेवलिजिनेषुछद्मस्थेषुवान्येषांजिनानांजन्मादिनस्यादिति "

७१ प्रश्न–श्री कल्पसूत्र नव व्याख्यानवडे वंचाय छे ते शुं परम्पराथी के कोइ शास्त्राधारथी ?

उत्तर—परम्पराथी, तेमज अन्तर्वाच्यशास्त्राधारथी पण श्री कल्पसूत्र नव व्याख्यानवडे वंचाय छे.

यदुक्तंश्रीहीरप्रश्ने.

" नवक्षणैःश्रीकल्पसूत्रंवाच्यतेपरम्परातोंतर्वाच्यमध्येनवक्षणविधानाक्षरसद्भावाच्च "

७२ प्रश्न–श्री कल्पसूत्रमां सर्वे ७२ स्वप्न कह्यां छे तेनां जुदा नामो क्यांइ हशे ?

उत्तर—हा, श्रीप्रश्नचिन्तामणिग्रन्थमां छे अने ते ग्रन्थ पण्डित श्री वीरविजयजी महाराजनो करेलो छे.

७३ प्रश्न–श्री तीर्थंकर भगवान् केवलि समुद्घात करे के केम ?

उत्तर—कर्मग्रन्थवृत्तिमां तथा पण्डित श्री रूपविजयजी महाराजनी करेली पञ्चकल्याणकनी पूजामां श्रीतीर्थंकरकेवलिभगवान् केवलिसमुद्घात करे एवो लेख छे.

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्रूपविजयगणिवर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीकस्तूरविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणिशिष्यपं०श्रीशुभविजयगणिशिष्यमु०श्रीलक्ष्मीविजयेनविरचितेश्रीप्रश्नोत्तरप्रदीपे

प्रथमःप्रकाशः

अथ द्वितीयःप्रकाशः

प्रणम्यश्रीमहावीरंसिद्धार्थनृपनन्दनम् ॥
ग्रन्थस्यास्यप्रकाशोयंद्वितीयोथवितन्यते ॥ १ ॥

१ प्रश्न–गृहवासे रहेला तीर्थङ्कर देव कोइनो दीक्षा महोत्सव करे ?

उत्तर–हा, करे दृष्टान्त तरीके श्रीअजितनाथ भगवाने पोताना पिताश्रीनो करेलो छे.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे.

" श्रीमानजितनाथोपिजितशत्रोस्तदैवहि ॥
ऋध्यामहत्याविधिवच्चक्रेनिष्क्रमणोत्सवम् ॥ १ ॥"

२ प्रश्न–श्रीअजितनाथ भगवानना पिताश्री दीक्षापाली क्यांगया ?

उत्तर–मोक्षेगया. एमश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमांकह्युंछे.

तथाचतच्चरित्रम्.

" उत्पन्नकेवलज्ञानःशैलेशीध्यानमास्थितः ॥
क्षीणाष्टकर्मा[1]संप्रापक्रमेणपरमंपदम् ॥ १ ॥ "

अने श्रीप्रवचनसारोद्धारना बारमा द्वारमांतो बीजे देवलोके गया एम कहेलुंछे तत्त्वनी वात श्रीसीमंधरस्वामी जाणे.

३ प्रश्न–सिद्धशिला तथा सिद्धना जीवो क्यांछे ?

उत्तर–सर्वार्थसिद्धविमानथी बार योजन उपर पीस्तालीस लाख योजन लांबी पहोली सिद्धशिला छे अने ते सिद्धशिला

---

१ जितशत्रुराजर्षिः

उपर त्रणकोस पछी चोथाकोसना छेला छठा भागमां लोकान्तपर्यन्त सिद्धना जीवो रहे छे.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे.

" ततोद्वादशयोजन्याऊर्ध्वंसिद्धशिलास्तितु ॥ पञ्चचत्वारिंशल्लक्षयोजनायामविस्तृता ॥ १ ॥ ततोप्युपरिगव्यूतत्रितयात्समनन्तरम् ॥ तुर्य्यगव्यूतषष्ठांशेसिद्धालोकाग्रतावधि ॥ २ ॥ "

४ प्रश्न–निर्जरा अने मोक्षमां शोविशेषछे !

उत्तर–देशथी कर्मनो क्षयथायते निर्जरा, अने सर्वथी कर्मनो क्षय थायते मोक्ष, ए विशेषछे.

यदुक्तंश्रीस्थानाङ्गसूत्रवृत्तौ.

" ननुनिर्जरामोक्षयोःकःप्रतिविशेषःउच्यतेदेशतः कर्मक्षयोनिर्जरासर्वतस्तुमोक्षइति "

५ प्रश्न–दश प्रकारना प्राण कयां ?

उत्तर–पांचइन्द्रिय (स्पर्शेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कर्णेन्द्रिय,) त्रण प्रकारनुं बल (मनोबल, वचनबल, कायबल,) श्वासोच्छ्वास, अने आयुष, ए दश प्राण भगवंते कहेलां छे. ते प्राणोनो विजोग करवो (ते प्राणोथी जीवनेरहित करवो) ते हिंसा कहेवाय छे.

यदाहनवतत्त्वावचूरिः

" पञ्चेन्द्रियाणित्रिविधंबलञ्चउच्छ्वासनिःश्वासम-

थान्यदायुः ॥ प्राणादशैतेभगवद्भिरुक्तास्तेषावियोजीक-रणन्तुहिंसा ॥ १ ॥ ”

६ प्रश्न–उक्त द्रव्य १० प्राणने मोक्षना जीवो धारण नथी करता छतां तेमने जीव केम कहोछो ?

उत्तर—मोक्षना जीवो अनन्त ज्ञानादिक भावप्राणने धारण करेछे ते अपेक्षाए तेमने पण जीव कहेवाय. एम श्रीप्रज्ञापना-सूत्र वृत्तिमां क०

७ प्रश्न–मनुष्यगतिथी आवेल कोइने क्यांइ चक्रवर्त्तिपणुं कह्युं छे.

उत्तर—श्रीआवश्यकनिर्युक्तिमां मनुष्यगतिथी आवेलने पण श्रीवी-रने पाछले भवे चक्रवर्तिपणुं कह्युंछे.

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

“श्रीआवश्यकनिर्युक्तौतुमनुष्यगतेरागतस्यापिश्री वीरस्यप्राग्भवेचक्रित्वमुक्तमित्यादि ”

८ प्रश्न–सुभूम चक्रवर्त्तिने केवी रीते चक्ररत्न उत्पन्न थएल छे ?

उत्तर—पर्शुरामेहणेलक्षत्रियोनी दाढाओथी भरेल स्थाल हतो तेज स्थाल सुभूमचक्रवर्त्तिने चक्ररत्नपणे परिणम्यो छे. एम श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रवृत्तिमां कहेल छे. विस्तारवात तेनी कथाथी जाणवी.

यदुक्तंश्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रवृत्तौ.

“ सुभूमचक्रवर्तिनःपर्शुरामहतक्षत्रियदाढाभृतस्था-लमेवचक्ररत्नतयापरिणतम् ” विस्तरवार्त्तातत्कथानकाद-वसेया

९ प्रश्न—वैताढ्यपर्वतनी तिमिश्रा नामनी गुफामां चक्रवर्त्तिना करेलां मांडलां केटलां कह्यां छे ?

उत्तर—आचार्यश्रीमलयगिरिमहाराजकृतक्षेत्रविचारबृहद्वृत्तिप्रमुखशास्त्रोना अभिप्राय प्रमाणे ९८ मांडलां कह्यां छे. अने श्रीआवशकसूत्रबृहद्वृत्ति, श्रीप्रवचनसारोद्धारबृहद्वृत्ति वीगेरे शास्त्रोना अभिप्राय प्रमाणे तो ४९ मांडलां कह्यां छे. ते संबंधी विस्तार श्रीलोकप्रकाशथी जाणवो.

१० प्रश्न—गुफामां चक्रवर्त्तिना करेलां मांडलां क्यांसुधी रहेछे ?

उत्तर—ज्यांसुधी चक्रवर्त्तिनुं राज्य होय त्यांसुधी मांडला वीगेरे रहेछे. आ श्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्तिनो अभिप्राय छे. अने श्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमां तो ज्यांसुधी चक्रवर्त्ति जीवे त्यांसुधी मांडला वीगेरे रहेछे, एम कह्युं छे एम जाणवुं.

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे-

"स्याद्यावच्चक्रिणोराज्यंतावत्तिष्ठन्तिसन्ततम् ॥ मण्डलानिचपद्येचगुहामार्गगतागते ॥ १ ॥ अयंश्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्त्यभिप्रायस्त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रेतु—उद्घाटितंगुहाद्वारंगुहान्तर्मण्डलानिच ॥ तावत्तान्यपितिष्ठन्तियावज्जीवतिचक्रभृत् ॥१॥ इत्युक्तमितिज्ञेयम् "

११ प्रश्न—चक्रवर्त्ती षट्खंडनो दिग्विजय करेछे तेमां अठ्ठम केटलाकरे ?

उत्तर—तेर अठ्ठम करे ते नीचे लख्या प्रमाणे जाणवा.

३ मागध, बरदाम, अने प्रभास, ए त्रण तीर्थदेवना त्रण अ०
२ सिन्धु, अने गङ्गा, ए बे देवीना बे अ०

१ वैताढ्य पर्वतना देवनो एक अ०

२ तिमिश्रा, अने खण्डप्रपाता, ए बे गुफाना अधिपति कृतमाल, अने नाट्यमाल, ए बे देवना बे अ०

१ क्षुलहिमवान पर्वतना देवनो एक अ०

१ वैताढ्य पर्वतना विद्याधर महाराजानो एक अ०

१ नवनिधानना देवनो एक अ०

१ राजधानी देवीनो एक अ०

१ राज्याभिषेक अवसरे एक अ०

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" तीर्थत्रयेसिन्धुगङ्गादेव्योर्वैताढ्यनाकिनः ॥ गुहेशयोःकृतमालनाट्यमालकसंज्ञयोः ॥१॥ हिमवद्गिरिदेवस्यविद्याधरमहीभृताम् ॥ निधीनांराजधान्याश्चाभिषेकावसरेपिच ॥ २ ॥ त्रयोदशाष्टमाएवंनिर्दिष्टाश्चक्रवर्त्तिनाम् ॥ "

१२ प्रश्न—गङ्गादेवीसाथे भरतचक्रिनो भोगविलास क्यां सुधीरह्यो ?

उत्तर—एक हजारवर्ष सुधी रह्यो.

यदुक्तंपूज्यपादश्रीभद्रबाहुस्वामिकृतश्रीआवश्यकनिर्युक्तौ

" भरहोगंगाएसद्धिंवाससहस्सभोगंभुंजतित्ति "

तथा श्रीधनेश्वरसूरिकृतश्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यमां कह्युछे के गंगादेवीसाथे विविध प्रकारना भोगोने भोगवतांथकां भरतचक्रवर्त्तिए एकदीवसनी पेठे एक हजारवर्षो निर्गमन कर्यां अनेवळी तेमज श्रीहैमऋषभचरित्रमां पण कह्युंछे.

यदुक्तंश्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्ये.

" भुञ्जानोविविधान्भोगाँस्तत्रचक्रीतयासह ॥ एकाहमिववर्षाणांसहस्रंसोत्यवाहयत् ॥ १ ॥ " तथैवश्रीहेमऋषभचरित्रेपि

१३ प्रश्न—चक्रवर्त्तियोना अस्थिओने देवताओ ग्रहण करेछेके केम ?

उत्तर—हा, योगधारण करनार चक्रवर्त्तिओना अस्थिओने पण देवताओ ग्रहण करेछे.

तथाहिश्रीलोकप्रकाशे.

" सुराआददतेस्थीनियोगभृच्चक्रिणामपि ॥ "

तथा श्रीशान्तिचन्द्रगणिमहोपाध्यायनी करेली श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रनी टीका छे. तेमां चारित्रयुक्तश्रीभरतचक्रवर्त्तिना अस्थिओने देवोए ग्रहण कर्यानो अधिकार छे ते त्यांथी जोइलेवो.

१४ प्रश्न—नथी त्यागकर्यो राज्यनो जेओए एवा चक्रवर्त्तिओ मरीने क्यां जायछे ?

उत्तर—श्रीभगवतीसूत्रनी टीकाने अनुसारे साते नरकपृथ्वीओविषे उत्कृष्टस्थितिपणे उपजेछे. अने श्रीहरिभद्रसूरिकृतश्रीदशवैकालिकटीका, श्रीहैमवीरचारित्रप्रमुखशास्त्रोने अनुसारे तो सातमीनरकपृथ्वीएज जाय छे, एम पण जाणवुं.

१५ प्रश्न—जेम चक्रवर्त्तिओनी सोळहजारदेवो सेवा करेछे, तेम अर्द्धचक्रवर्त्तिवासुदेवोनी आठहजार देवो सेवा करे के केम?

---

१ गङ्गया.

उत्तर—श्रीप्रज्ञापनासूत्रवृत्तिमां चक्रवर्त्ती, वासुदेव प्रमुख मनुष्योने पण केटलाक व्यन्तर देवो नोकरनी माफक सेवे छे एम कह्युं छे.

तथाचतत्पाठः

" मनुष्यानपिचक्रवर्तिवासुदेवप्रभृतिन्भृत्यवदुपचरन्तिकेचिद्व्यन्तराः "

तथा श्रीतीर्थोद्धारप्रकीर्णकमां वासुदेवना सघळा काममां आठहजार अभियोगदेवो (सेवकदेवो) कह्याछे.

तथाचतत्पाठः

" अट्ठयदेवसहस्साअभियोगासव्वकज्जेसुइत्यादि "

उक्त बन्ने पाठपरथी सिद्ध थायछे के वासुदेवोनी आठहजार देवो सेवा करेछे.

१६ प्रश्न—वासुदेवो क्यांना आव्या थाय छे.

उत्तर—पहेली, अने बीजी नरक पृथ्वीना आव्या तथा बारदेवलोक, नवग्रैवेयकना आव्या वासुदेवो थायछे. एवो संग्रहणीप्रमुखशास्त्रनो अभिप्रायछे. अने श्रीमहानिशीथसूत्रना पांचमा अध्ययनमां कुवलयप्रभाचार्यना व्यन्तरादिकभव गणाव्या छे तेमां छठो भव मनुष्यनो अने सातमोभव वासुदेवनो गणाव्यो छे, ते मतान्तर छे.

१७ प्रश्न—वासुदेवने केटली स्त्रीओ कही छे.

उत्तर—श्रीअन्तकृतदशा तथा प्रश्नव्याकरणसूत्रमां श्रीकृष्णमहाराजने रुक्मिणीप्रमुख १६००० स्त्रीओ कहेलीछे. तेमज श्रीअ-

जितप्रभाचार्यकृतश्रीशांतिनाथचरित्रमा त्रिपृष्ठवासुदेवने पण स्वयंप्रभाप्रमुख १६००० स्त्रीओ कहेली छे.

तथाहि.

" रूप्पिणीपामोरकाणंसोलसण्हंदेवीसहस्साणं "

इतिश्रीअन्तकृतदशासूत्रे

" सोलसदेवीसहस्सवरनयणहिययदईया "

इतिश्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रे.

" ययौनिजपुरंसोथतस्यचात्यन्तवल्लभा ॥
षोडशस्त्रीसहस्राणांमुख्यासाभूत्स्वयंप्रभा ॥१॥ "

इतिश्रीअजितप्रभाचार्यकृतश्रीशान्तिचरित्रे.

अने श्रीज्ञाताधर्मकथासूत्र तथा श्रीकल्पकिरणावली वीगेरे मां श्रीकृष्णवासुदेवने रुक्मिणी आदि ३२००० स्त्रीओ कही छे, पण ते अर्द्धचक्रवर्त्तिपणानी अपेक्षाए कही हशे अत्रतत्त्वनी वात बहु श्रुतमहाराजो जाणे.

तथाहि.

" रूप्पिणीपामोरकाणंबत्तीसाएमहिलासाहसीणं "

इतिश्रीज्ञाताधर्मकथासूत्रे.

" तथायतोभ्रातातेसमर्थोयथास्माकंद्वात्रिंशत्सहस्र-संख्याकानांनिर्वाहंकुरुतेतथेत्यादि "

इतिश्रीकल्पकिरणावल्याम्. अत्रतत्त्वन्तु बहुश्रुता जानन्ति

१८ प्रश्न–प्रतिवासुदेवनी माता केटलां स्वप्न देखे.

उत्तर—श्रीसोमतिलकसूरिकृतसप्ततिशतस्थानग्रन्थमां त्रण स्वप्न देखे एम कह्युं छे.

तथाचतद्ग्रन्थः

" जिणचक्कीणयजणणीनियंतिचउदशगयाईवरसुविणे॥सगचउतिणिइगाईहरिबलपडिहरिमंडलियमाया १"

तथा श्रीअजितप्रभसूरिकृतश्रीशान्तिनाथचरित्रमां महाविदेहमां थएल दमितारिप्रतिवासुदेवनी माताए त्रण स्वप्न दीठां एम कहेलुं छे.

अने श्रीहेमाचार्यकृतश्रीजैनरामायणमां रावणनी माता "कैकसी" सिंहने देखती हवी एम एकज स्वप्न कह्युं छे.

तद्यथा.

" अन्यदाकैकसीस्वप्नेविशन्तंस्वमुखेनिशि ॥ कुंभिकुंभस्थलीभेदप्रशक्तंसिंहमैक्षत ॥ १ ॥ "

१९ प्रश्न–रामस्त्रीसीता सती कया महाराजानी पुत्रीछे ?

उत्तर—पद्मचरित्रने अनुसारे मिथिलापतिजनकराजानी पुत्रीछे. अने वसुदेवहिंडीने अनुसारे लङ्कापतिरावणमहाराजानी पुत्रीछे. एवी रीते विचाररत्नाकरग्रन्थमां कह्युछे.

२० प्रश्न–द्रौपदी महासती काळकरीने क्यां गई ते कहो.

उत्तर—अनल्प पुण्यने धारण करनारी द्रौपदी ब्रह्मदेवलोकने पामतीहवी. एवुं श्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यमां तथा श्रीज्ञाताध-

मेंकथासूत्रादिकमां कहेलुंछे. अने श्रीउत्तराध्ययनसूत्रवृत्तिमां अच्युतदेवलोके गइ एमकहेलुंछे. ते मतान्तरछे.

२१ प्रश्न–युधिष्टिर विगेरे [1]पांचपांडवोने द्रौपदी पासे जवाना वारा हता के केम ?

उत्तर—हा, वाराहता अनेते मर्यादा नारदमुनिए बतावीहती अत्र विशेषाधिकार पाण्डवचरित्रादिकथी जाणवो.

२२ प्रश्न–नारदमुनि सम्यग्दृष्टिछे, के मिथ्यादृष्टिछे ?

उत्तर—श्रीपद्मचरित्रादिशास्त्रोने अनुसारे सम्यग्दृष्टिअणुव्रतधारीछे, एम समजायछे अने श्रीज्ञातधर्मकथासूत्र, प्रश्नव्याकरणसूत्रवृत्ति वीगेरे शास्त्रोने अनुसारे ते मिथ्यादृष्टि छे एम समजायछे.

२३ प्रश्न–पद्मोत्तर राजाए पोताना मित्र देवपासे द्रौपदीनुं हरण कराव्यु ते देव कइ निकायनो हतो ?

उत्तर—भुवनपतिनिकायनो हतो एम श्रीपांडवचरित्रथी समजायछे

२४ प्रश्न–भीष्मपिता कएठेकाणे कोनीपासे चारित्र लेइ क्यां गया ?

उत्तर—ब्रह्मचर्यव्रतधारक,गङ्गापुत्र,भीष्मपितामह, [2]कुरुक्षेत्रनी नजीकमां रहेल कोइ पर्वतनी गुफामां श्रीमुनिचन्द्रसूरिना-

---

१ युधिष्टिर, भीमसेन, अर्जुन, सहदेव, अने नकुल, ए पांचपांडुराजानापुत्र तेथी पांडव जाणवा. तेमां प्रथमना मुख्य त्रण पुत्र कुंतीराणीथी अने ते सीवायना बे पुत्र माद्री राणीथी उत्पन्न थएला छे. एम जाणवुं.

२ कुरुक्षेत्र, एटले जे ठेकाणे कौरव अने पांडवोनु युद्धथयु ते एक मोटुं रणमेदान के जेने हाल पाणिपत कहेछे.

शिष्यश्रीभद्रगुप्ताचार्यनी पासे चारित्र लेइ अनशनकरी अच्युतदेवलोके गया. आ वात पण पांडवचरित्रमां छे.

२५ प्रश्न–पांडवो वीशकोडी मुनिसाथे श्रीसिद्धाचलपर सिद्धिवर्याछे. ए ठेकाणे " कोडि " एटले वीश एम केटलाएक बोलेछे तेनुं केम ?

उत्तर—श्रीहीरप्रश्नमां ए संबंधी एक प्रश्नछे तेना प्रत्युत्तरवचनानुंसारे करी एठेकाणे " कोडि " एटले " कोटि " अने ते सोलाखरूप जाणवी पण वीशरूप न जाणवी आम प्रगट समजाय छे.

तथाचतत्पाठः

" तथाश्रीशत्रुञ्जयस्योपरिपञ्चपाण्डवैःसमंसाधूनांविंशतिकोट्यःसिद्धाइतिश्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यादौप्रोक्तमस्ति-साकोटिविंशतिरूपाशतलक्षरूपावेति । अत्रशतलक्षरूपा-कोटिरवसीयतेनतुविंशतिरूपेतिबोध्यम्.

पूर्वोक्तश्रीहीरप्रश्ननुं प्रमाण छतां ए ठेकाणे " कोडि " एटले वीश एम बोलनाराओने नवमा सामायिक व्रतनी पूजामां " लाख ओगणसाठ बाणु कोडि पचवीश सहस नवसें जोडी पचवीस पल्योपम झाझेरो ते बांधे आयुसुर-केरो हे० ॥ ५ ॥ " आवी रीते कह्युंछे त्यां तथा जगचिंतामणिनी गाथाओमां तेमज बीजेठेकाणे पण वांधो आवशे विचारीजोजो. किम्बहुनेत्यलम्.

२६ प्रश्न–देवताओ श्रीजिनेश्वर भगवाननी दाढावीगेरे लेइजइ शुंकरेछे ?

उत्तर— पोतपोतावी सुधर्म सभामां माणवक नामा चैत्यस्तंभने विषे वज्ररत्नमय गोलवृत डाबडाछे तेमां स्थापेछे. भावभक्तिथी पूजा वन्दनादिक करेछे तेमनी आशातना न थवामाटे सुधर्म सभामां पोतानी इन्द्राणीयो साथे हास्यविनोद विषयादि सुखने सेवता नथी, अने ज्यारे विमानादिक कारणे देवताओने परस्पर मोटा युद्ध थायछे त्यारे महत्तर देवताओ तेमनुं नमणजल छांटी तेने उपशमावेछे. इत्यादि घणो अधिकारछे परन्तु ते अत्रेनहिं लखतां शास्त्रान्तरोथी जाणवो.

२७ प्रश्न–सर्वेदेवोनो श्रीजिनदाढादि ग्रहण करवामां अभिप्राय सरखो हशे के केम ?

उत्तर— ना, केटलाक देवो श्रीजिनभक्तिथी, केटलाक देवोजित (आचार)थी, अने केटलाक देवो धर्मबुद्धिथी, एम जुदा जुदा अभिप्रायथी श्रीजिनदाढादिक ग्रहण करेछे. अधिक विषय श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रनी टीकाथी जाणवो.

२८ प्रश्न–जेनुं चित्त धर्मने विषे अस्थिर छे तेनो आत्मा केवो जाणवो.

उत्तर—वस्तुतत्त्वने नही समजनारो तेमज वस्तुतत्त्वने नहीं माननारो गङ्गापाठकनी पेठे दुष्टात्मा जाणवो गङ्गापाठकनी कथा आ प्रमाणे लाटदेशने विषे भरुअच्चनगरमां गंगानामना पाठके घणाबाळकनिशाळियाओने भणावी गणावीने घणुं धन एकठुं कर्युं. पछी वृद्धावस्थाए परण्यो ते स्त्री तरुण होवाथी तेने विषय समाववो विषम थइ पडयो. तेथी नर्मदानदीने सामेकांठे कोइक पुरुष साथे रंगाणी छे तेथी निरन्तर रात्रिए घडाए करी नर्मदानदी उतरीने पार

जाय त्यां मनगमतो विषय सेवीने पाछी आवे. घणी माया केळवीने बूढा भर्त्तारनुं मन रीझवे. दिवसे कागडाने बलि नाखवा जाय त्यारे बूढा भर्त्तारने कहे के, हुं कागडाथी बीहुंछुं. हृदयफुट बूढो भर्त्तार पण सत्य मानतो तेनी रक्षा करवा पोताना छात्रोने मोकले. कोइक अवसरे तेने तेना बूढा भर्तारे कह्युं के अमुक मनुष्यने अमुक कार्य माटे हमेशां तेडी आवजे, स्त्रीए कह्युं के हुं पुरुष साथे बोली जाणुं नहीं. त्यारे बापडो पाठक पोते बोलावी लावे. ते देखी एक छात्रे विचार्युं, के ए सरळना लक्षण नहीं किन्तु कूटकपटना लक्षण छे.

यतः

" अत्याचारमनाचारमत्यार्जवमनार्जवम् ॥
अतिशौचमशौचञ्चषड्विधंकूटलक्षणम् ॥ १ ॥ "

एम विचारीने एनां स्त्रीचरित्रो जोवा लाग्यो, ते जोतां जोतां रात्रियें नर्मदानदी उतरती दीठी. एवामां सामो आवतो चोर कुतीर्थे (उन्मार्गे) उतर्यो, ते चोरने मगरे पकड्यो ते देखी स्त्री बोली कुतीर्थे (उन्मार्गे) शुं करवा उतर्यो ? तोपण भलुंथयु. हजु कइ गयुं नथी. तुं ए मगरमच्छनी आंखो ढांक एटले ते छोडीदेशे एम कह्युं ते चरित्र जोनार छात्रे सांभलीने विचार्युं के, अहो जुओ स्त्रीनुं साहसपणुं केवुं छे.

यत.

" अनृतंसाहसंमायामूर्खत्वमतिलोभता ॥
अशौचंनिर्दयत्वञ्चस्त्रीणांदोषाःस्वभावजाः ॥ १ ॥ "

वळी एकदिवसे बलिनाखत्राअवसरे कागडाथी रक्षा करवामाटे पाठकना आदेशथी तेज छात्र स्त्रीनीसाथे आव्यो छे. बलिनाखताते छात्र बोल्यो.

यतः

" दियाकागाणबीहेसिरत्तिंतरिसिनम्मयं ॥
कुतिथ्थाणियजाणासिअच्छीणंढंकणाणिय ॥१॥ "

ते सांभलीने स्त्रीए विचार्युके, महारी वात ए जाणतो देखायछे तेवारे बोलीके लोकस्वभाव एवोज देखायछे. माटे मौनकरो. आजथी नर्मदा उतरवुं मूक्युं. त्यारपछी चंचलपणे करी तेज छात्र साथे संयोगथयो. एकदिवसे देशान्तर जवामाटे तेज छात्रने घरभलावी पाठक देशान्तर गया पाछळथी घरमां एकमृतकलेवरलावी राते अग्निलगाडीने ते छात्रसाथे स्त्री नीकलीगइ. प्रातःकाले पाठक घेर आव्यो घरबल्युं ते संबंधी सर्व स्वरूप जाण्युं. त्यारे हा प्रिये मरी गइ, एम घणो खेद करतो मृतकार्य करी ते स्त्रीना हाडकां लेइने गङ्गाभणी मार्गे चाल्यो जाय छे. ते स्त्रीने पण छ मास पर्यन्त छात्र साथे रम्या पछी कोइक वातने लीधे रुसणुं थयुं छे. त्यारे ते स्त्रीने पश्चात्ताप उपन्यो के भर्त्तार मूकीने हुं इहां क्यां आवी ? एवुं पोतानुं सर्व स्वरूप भर्तार त्यां आवी पहोंच्यो, तेने कयुं, त्यारे पाठक बोल्यो. तुं महारी स्त्रीसरखी देखाय छे खरी, पण तेतो तुं नथी तेना अस्थितो आ महारी गांठे बांध्यां छे. त्यारे स्त्रीयें तेने पूर्वनी अनेक प्रकारनो निशानीयो बतावी, तोपण ते हाडकां बतावे पण माने नहीं. त्यारे स्त्रीयें छात्र

देखाड्यो, तेने जोइ पाठके कह्युं के, ए म्हारा छात्रसरखो देखाय छे. पण ते स्त्रीना हाडकां तो म्हारी पासे छे. त्यारे ते स्त्री खेद पामीने भर्त्तारने तजती हवी. एवा पाठकसरखा पुरुष कोइनुं कह्युं सांभले नहीं धर्मने विषे उजमाल थाय नहीं तेनो आत्मा दुरात्मा जाणवो. ए कथा श्रीआवश्यकनिर्युक्त्यादिग्रन्थोमां छे.

२९ प्रश्न–कोनो संसारमां प्रचार न होय ?

उत्तर—पूजा, पच्चखाण, पडिक्कमण, पौषध, अने परोपकार ए उक्त पांच प्रकार जेने छे, तेनो संसारमां प्रचार न होय.

यतःप्रोक्तम्.

" पूआपच्चखाणंपडिकमणंपोसहोपरोवयारोअपंच-
पयाराजस्सउनपयारोतस्ससंसारे ॥ १ ॥ "

३० प्रश्न–विद्या ग्रहण करवाना केटला उपाय छे ?

उत्तर—विनयवडे करीने विद्याग्रहण कराय छे, घणुं द्रव्य आपवावडे करीने विद्याग्रहण कराय छे, अने विद्यावडे करीने पण विद्याग्रहण कराय छे. ए त्रण उपाय छे. पण चोथो उपाय नथी. कह्युं छे के

यतः

" विनयेनविद्याग्राह्यापुष्कलेनधनेनवा ॥
अथवाविद्ययाविद्यानान्योपायश्चतुर्थकः ॥ १ ॥ "

३१ प्रश्न–जे गुरुए उपकारबुद्धिथी जेने भणावेल होय ते जो ते गुरुने गुरुपणे न माने तो ते केवो जाणवो ?

उत्तर—पक्को कृतघ्न जाणवो. तेमज ते एक जातनो निन्हव जा-

णवो. शुं घणुं कहीए एकअक्षरना पण दातारगुरुने जो न माने तो, ते सोवार कुतरानी योनिमां उत्पन्न थइने एटले कुतराना १०० भव करीने पछी चाण्डालोना कुळोमां पण ते उत्पन्न थाय छे. कह्युं छे के.

यतः

" एकाक्षरप्रदातारंयोगुरुंनाभिमन्यते ॥
श्वानयोनिंशतंगत्वाचाण्डालेष्वपिजायते ॥ १ ॥ "

३२ प्रश्न–जम्बूद्वीपना महाविदेहमां ९६ मागधादि तीर्थ क्यां छे, अने तेने साधतां त्यांना चक्रवर्त्तिओ क्यां बाण नाखे छे ते कहो.

उत्तर—पूर्वमहाविदेहमां १६ विजयना ४८ तीर्थ सीतानदीमां छे. तेमज पश्चिममहाविदेहमां १६ विजयना ४८ तीर्थ सीतोदानदीमां छे माटे तेने साधतां त्यांना चक्रवर्त्तिओ त्यां बाण नाखे छे. ए अधिकार श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रवृत्तिमां तथा क्षेत्रसमासवृत्तिमां छे.

३३ प्रश्न–केवलीभगवान् पडिलेहणा करे के नहीं ?

उत्तर—जो जीव संसक्तवस्त्रादि होय, तो पडिलेहणा करे अन्यथा न करे एम श्रीभद्रबाहुस्वामिए श्रीओघनिर्युक्तिमां कह्युं छे.

३४ प्रश्न–आ अमुक जीव आठ कर्मनो अन्त करशे, एम केवली जाणे छे तेम छद्मस्थ जाणे के नहीं ?

उत्तर—जेम केवली जाणे तेम छद्मस्थ न जाणे परन्तु केवलिप्रमुखना वचन सांभळीने अथवा प्रमाणथी जाणे. विशेष वात श्रीभगवतीसूत्रथी जाणवी.

३५ प्रश्न–ज्ञान अने प्रमाणमां शो विशेष छे ?

उत्तर—कंइ विशेष नथी शाथी के जे स्वपरवस्तुने निश्चय करनारुं ज्ञान तेज प्रमाण.

यदुक्तंश्रीवादिदेवसूरिकृतप्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कारे "स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणम्" इति

अने ते प्रमाण प्रत्यक्ष, अने परोक्ष, एवा बे भेदवाळुं छे. तेमां जे प्रत्यक्ष, ते अनिन्द्रियजन्य एवां अवधि, मनःपर्याय, अने केवल, ए त्रण ज्ञानरूप छे. तेमां पण अवधि, अने मनःपर्याय, ए बे ज्ञान देशप्रत्यक्ष छे. अने केवलज्ञान ते सकलप्रत्यक्ष छे. हवे बीजो भेद जे परोक्ष, ते इन्द्रियजन्य एवां मति, अने श्रुत, ए बे ज्ञानरूप छे. वळी कोइ ठेकाणे मति, अने श्रुत, ए बे ज्ञानने व्यवहारथी प्रत्यक्ष व्यपदेश पण मानेलो छे. आ ठेकाणे भारे विस्तार छे, ते श्रीनन्दीसूत्र,तत्त्वार्थवृत्ति,रत्नाकरावतारिकादिग्रन्थोथी-समजवो.

३६ प्रश्न–चार प्रमाण छतां पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरमां बे प्रमाण केम कह्यां ?

उत्तर—अनुमान, उपमान, अने आगम, ए त्रण प्रमाणनो परोक्ष प्रमाणमां अन्तर्भाव करीने बे प्रमाण कह्यां छे.

३७ प्रश्न–आजकाले आ भरतक्षेत्रमां जातिस्मरण, अने अवधिज्ञान पामीए के नहीं ?

उत्तर—तेवा गुण नहिं व्यवच्छेद थवाथी कोइ वखते पामीए पण खरा एम श्रीलोकप्रकाशप्रमुखशास्त्रोथी समजाय छे.

३८ प्रश्न–जातिस्मरणज्ञानवाळो पोताना केटला पाछला भवदेखे ?

उत्तर—संख्याताभवने देखे एम श्रीआचाराङ्गसूत्रनीबृहद्वृत्तिथी समजाय छे. अने श्रीचन्द्राचार्यकृतयोगविधिथी एक, बे, त्रण, यावत् नवभव देखे एम समजाय छे.

तथाहि.

"जातिस्मरणन्तुनियमतःसंख्येयान्भवान्पश्यति"

३९ प्रश्न-" पञ्चाङ्गी " कोनेकहीए ?

उत्तर—सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, अने टीका, उक्तसूत्रादिक पांचने " पञ्चाङ्गी " कहीए. अनेतेभवभीरुजीवोनेप्रमाणछे.

४० प्रश्न-६ छेदसूत्रनां नामकहो.

उत्तर—निशीथ, महानिशीथ, दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार, अने पञ्चकल्प, ए ६ छेदसूत्रनां नामजाणवा.

४१ प्रश्न-" व्याख्याप्रज्ञप्ति " एकोनुंनामछे ?

उत्तर—श्रीभगवतीसूत्रनुंनामछे.

"ग्रन्थान्तरपरिभाषयाध्ययनमुच्यते"

४३ प्रश्न-श्रीभगवतीसूत्रनाप्रान्तभागमां तथा श्रीसमवायाङ्गसूत्रमां श्रीभगवतीसूत्रना ८४००० पद कह्यांछे. अने श्रीनन्दीसूत्रमां श्रीभगवतीसूत्रना २८८००० पद कह्यां छे तेनुं केम ?

उत्तर—तेजठेकाणे श्रीसमवायाङ्गसूत्रनी टीकामां कह्युं छे के श्री आचाराङ्गसूत्रना १८००० पद छे त्यांथी ठाणबमणा-गणतां श्रीभगवतीसूत्रना २८८००० पद थाय छे ते मतान्तर छे.

तथाचतत्पाठः

" मतान्तरेणत्वष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्यएतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्चशेषाङ्गानांव्याख्याप्रज्ञप्तेर्द्वेलक्षे-अष्टाशीतिसहस्राणिपदानांभवन्ति "

४४ प्रश्न–सूत्रना एकपदनुं केटलुं प्रमाण होय ते कहो.

उत्तर—पद छे ते विशिष्टसम्प्रदायगम्य छे. एम श्रीभगवतीसूत्रनी टीकामां कह्युं छे.

तथाचतत्पाठः

" पदानिचविशिष्टसम्प्रदायगम्यानि "

तथा श्रीसमवायाङ्गसूत्र, अने नन्दीसूत्रनी टीकामां कह्युं छे के ज्यां अर्थनी प्राप्ति, (समाप्ति) थाय ते पद कहेवाय.

तथाचतत्पाठः

" यत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदम् "

तथा कर्मग्रन्थनी टीकामां कह्युं छे के हालमां तथाविधआम्नाय (सम्प्रदाय)ना अभावथी पदनुं प्रमाण जाणवामां नथी.

तथाचतत्पाठः

" पदस्यतथाविधाम्नायाभावात्प्रमाणंनज्ञायते "

अने श्रीविचाररत्नसारग्रन्थमां तो एक पदना "५१०८८-४६२१॥" आटला श्लोक थाय छे एम कहेलुं छे.

तथाचतत्पाठः

" एकावन्नंकोडिओलक्खाअट्ठेवसहस्सचुलसिहिंस-
यछक्कसाढाएकवीसपयगंथा ॥ १ ॥ "

तत्त्वन्तुकेवलिनोजानन्ति.

४५ प्रश्न-दृष्टिवादना केटला भेदछे. अने कया भेदमां १४ पूर्वजाणवा?

उत्तर—परिकर्म, सूत्र, पूर्वगत, अनुयोग, अने चूलिका, ए पांच भेद दृष्टिवादना कह्याछे. तेमां " पूर्वगत " नामना त्रीजा भेदमां १४ पूर्व जाणवां.

यदुक्तंश्रीसमवायाङ्गसूत्रेनन्दीसूत्रेच.

" सेकिंतंदिठिवाएदिठिवाएणंसव्वभावपरूवणयाआ-
घविज्जंतिसेसमासओपंचविहेप०तं०परिकम्मंसुत्ताइंपुव्व-
गयंअणुओगोचूलियाइत्यादियावत्सेत्तंसुताइं । सेकिंतं-
पुव्वगयंपुव्वगयंचउद्दसविहेप०तं०उप्पायपुव्वंइत्यादि "

४६ प्रश्न-कालिक, उत्कालिक, सूत्र कोने कहीए ?

उत्तर—दिवसना अने रात्रिना पहेलाछेल्लाबेपहोरमांज जे भणाय ते श्रीउत्तराध्ययन वीगेरे कालिकसूत्रो जाणवां. अने कालवेला वर्जीने जे भणाय ते श्री दैशवैकालिक वीगेरे उत्कालिकसूत्रो जाणवां.

यदुक्तंश्रीनन्दीसूत्रवृत्तौ.

" यद्दिवसनिशाप्रथमपश्चिमपौरुषीद्वयएवपठ्यते-
तत्कालिकंकालेननिर्वृत्तंकालिकमितिव्युत्पत्तेःयत्पुनःका-

लवेलावर्ज्जंपठ्यतेतदूर्ध्वंकालिकादित्युत्कालिकं ॥ आ- ह्चचूर्णिकृत्-तथ्थकालियंजंदिणराइणपढमपोरिसीसुपढि- ज्जइजंपुणकालवेलावज्जंपढिज्जइतंउक्कालियं " इति

अथवा *आगाढायोगसाध्यजे छे, ते कालिकसूत्रो जाणवां. अने *अनागाढायोगसाध्यजे छे, ते उत्कालिकसूत्रो जाणवां.

यदाहश्रीसिद्धान्तागमस्तवावचूरिः

" कालिकमागाढायोगसाध्यमुत्कालिकमनागाढायोगसाध्यमिति "

४७ प्रश्न—बे घडीना परिमाणवाली अकालसन्ध्या केटली छे ?

उत्तर—दिनरातनी बे घडीना परिमाणवाली अकालसन्ध्या चार छे, ते नीचे प्रमाणे—

प्रथमासन्ध्या—के जे सूर्योदयपहेलानी, पश्चिमासन्ध्या—के जे सूर्यास्तसमयनी, त्रीजी मध्यान्हसन्ध्या, चोथी अर्द्धरात्रसन्ध्या, एदिवसरातनीचारसन्ध्याए साधु साध्वीए स्वाध्याय (सज्झायध्यान) करवो न कल्पे.

तदुक्तंश्रीस्थानाङ्गसूत्रे.

" नोकप्पइणिग्गंथाणवाणिग्गंथीणवाचउहिंसंज्झाहिंसज्झायंकरेत्तएतं०पढमाए[1] १ पच्छिमाए[2] २ मज्झन्हे ३ अद्धरत्ते ४ "

---

* आगाढायोग, अनाढायोगनुं स्वरूप गुरुगमथी जाणवुं.

१ प्रथमासंध्यानुदितेसूर्ये २ पश्चिमासंध्यासूर्यास्तमयसमये इतित टीकायाम्.

अने वळी एजपूर्वोक्तचार सन्ध्याए स्वाध्याय न कराय एम खरतरगच्छीयश्रीजिनदत्तसूरिकृतसन्देहदोलावलीसूत्रमां पण कह्युं छे.

तथाचतत्पाठः

" चउपोरसिओदिवसोदिणमज्झंतेअदुन्निघडिआओ। एवंरयणीमज्झेअंतंमिअताओचत्तारि ॥ १ ॥ " (ताश्चतस्त्रः) प्रस्तावादेतासुचतस्त्रष्वपिसन्ध्यासुस्वाध्यायोनक्रियतइत्यत्रतात्पर्यार्थः

४८ प्रश्न–उक्तचारअकालसन्ध्यासमये शामाटे स्वाध्याय न कराय?

उत्तर—" सुयनाणंमिअभत्ति " ए गाथाए करी श्रीआवश्यक सूत्रनी श्रीतिलकाचार्यकृतटीकामां अकाले भणतां घणा दोषो बतावेलाछे. वळी अन्यदर्शनमां पण अकालसन्ध्याए भणवुं निषेधेलुं छे.

यतः

" सन्ध्याकालेचसम्प्राप्तेकर्मचत्वारिवर्ज्जयेत् ॥ आहारंमैथुनंनिद्रांस्वाध्यायश्चचतुर्थकम् ॥ १ ॥ आहाराज्जायतेव्याधिर्मैथुनाच्चकुलक्षयः ॥ दरिद्रताचनिद्रायांस्वाध्यायान्मरणंभवेत् ॥ २ ॥ " यद्वा " भूतपीडानिद्रयास्यात्स्वाध्यायाद्बुद्धिहीनता " इत्यपिक्वचिद्द्वितीयश्लोकपश्चार्द्धपाठः

४९ प्रश्न–टीप्पणामां राहुनी मस्तकमात्र अने केतुनीकबंध (धड) मात्र आकृतिछे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर—अमृतनुं पानकरवा वखते देवपंक्तिमां देवरूपे बेसीने अमृतनुं पान करतो एवो जे राहु तेने देखीने विष्णु तेना मस्तकने छेदता हवा. त्यारथी मस्तकभागमांराहु, अने कबंध (धड) भागमां केतु एम बेरूप तेना जाणवां अने तेथीज टीप्पणामां पण राहुनी मस्तकमात्र अने केतुनी कबंध (धड) मात्र आकृतिछे. आ वात लौकिकपूराणनी अपेक्षाए जाणवी. नहिंतो राहु सम्पूर्णसकलशरीरना अवयवादिविशेषशोभासहित एवो एक महर्द्धिक ग्रहछे.

तदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे.

" सम्पूर्णसर्वावयवीविशिष्टालङ्कारमौल्याम्बररम्यरूपः ॥ महर्द्धिकोराजतिराहुरेषलोकप्रसिद्धोननुमौलिमात्रम् ॥ १ ॥ "

ते राहुनो विशेष अधिकार श्रीभगवतीसूत्रथी जाणवो.

५० प्रश्न–आयंबीलमां " हिंग " कल्पे के केम ?

उत्तर—श्रीचन्द्रसूरिकृतश्रीलघुप्रवचनसारोद्धारमां कह्युंछे के आयंबीलमां "हिंग" प्राए न कल्पे शाथी के तेमां कृतदोषप्रसङ्ग रह्योछे, तेनो पाठ नीचेमुजब.

तथाहि.

" पायंहिंगुनकप्पइकयदोसप्पसंगओजम्हा "

५१ प्रश्न–" पञ्चसौगन्धिक " ताम्बूल कोने कहीए ?

उत्तर—जेमां एलायची, लवंग, कर्पूर, कंकोल, अने जायफळ, ए पांच सुगंधी वस्तुओ आवे ते पंचसौगंधिक तांबूल कहेवाय. अने तेवो तांबूल आनंदश्रावके मुखवासमां मोकळो राख्यो हतो ते वात श्रीउपासकदशाङ्गसूत्रवृत्तिमां छे.

तथाचतत्सूत्रम्.

" तयाणंतरंचणंमुहवासविहिपरिमाणंकरेइणण्णथ्थ-पंचसोगंधिएणंतंबोलेणंअवशेषंमुहवासविहिंपच्चक्खामि "

तत्सूत्रवृत्तिर्यथा.

" पंचसौगंधिएणंतिपंचभिरेलालवंगकर्पूरकंकोल-जातिफललक्षणैःसुगंधिभिर्द्रव्यैरभिसंस्कृतंपंचसौगंधिकम् "

८२ प्रश्न—स्त्रीरत्ननीसंखावर्त्तायोनिमां जीवो गर्भपणे उपजेछे, पण निष्पन्नथतानथी तेनुं शुं कारण ?

उत्तर—अतिप्रबलकामाग्निना परितापथी विध्वंशपणाने पामे छे. एम श्रीपन्नवणासूत्रनी वृत्तिमां कह्युं छे.

तथाचतत्सूत्रवृत्तिः

" अतिप्रबलकामाग्निपरितापतोध्वंसगमनादितिवृद्धवादः "

तथा श्रीहीरप्रश्नोत्तरमां पण कह्युं छे के स्त्रीरत्नना स्पर्शथी लोहपुरुषनुं पण गलन थइ जाय इत्यादि.

तत्पाठोयथा.

" स्त्रीरत्नस्पर्शाल्लोहपुरुषगलनमुत्कृष्टातिशयितकामविकारजनितप्रबलोष्णताविशेषात "

५३ प्रश्न–औदारिकशरीरवाळी स्त्रीने कोइ देवता भोगवे तो ते स्त्री-गर्भ धरे के केम ?

उत्तर—ना, ते स्त्रीगर्भ न धरे देवतानुं वैक्रियशरीरछे माटे अने जे चक्रवर्त्तिना वैक्रियशरीरथी बीजी स्त्रीओ गर्भ धरे छे तेतो चक्रवर्त्तिने सत्ताए औदारिकशरीरना पुद्गल छे. माटे गर्भ धरे छे. आ अधिकार पं० श्रीदेवविजयगणिकृत-प्राकृतभाषारूपश्रीप्रश्नोत्तरसमुच्चयग्रन्थमांछे. तेमज आ वात श्रीसंग्रहणीसूत्रना बालावबोधमां कांइक जुदा रूपमां छे.

५४ प्रश्न–स्त्रीने गर्भोत्पत्ति क्यारे थाय छे, अने तेनो केटलो काळ कह्यो छे ?

उत्तर—ऋतुसमयस्नान[1] कर्यापछी पुरुषना संयोगे स्त्रीने गर्भोत्पत्ति थाय छे. अने तेनो काळ बार मुहूर्त्त सुधीनो कह्यो छे. शाथी के त्यांसुधी शुक्रशोणित अविध्वस्तपणे रहे छे पछी विध्वस्तपणाने पामे छे.

यदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

"रिउसमयण्हायनारीनरोवभोगेणगप्भसंभूई ॥
बारसमुहुत्तमज्झेजायइउवरिंपुणोनेय ॥ १ ॥"

५५ प्रश्न–पोतानी माताना उदरमां जीव गर्भपणे वधारेमांवधारे क्यां सुधी रहे ते कहो.

उत्तर—तीर्यंचआश्रि कोइ जीव आठवर्ष सुधी रहे त्यारपछी प्रसव थाय. अथवा खरी पडे. मनुष्यआश्रि कोइ महापापी

---

१ स्त्रीने मासमासने आंतरे योनिद्वारथी त्रणदिवससुधी निरन्तरपणे लोही श्रवेछे त्यारपछी ते शुद्धिने अर्थे स्नान करेछे तेने ऋतुसमयस्नान कहीए.

जीव वातपित्तादिकरोगना कारणथी, अथवा मंत्रादिक प्रयोगथी थंभाणो थको सिद्धराजजयसिंहनीपेठे १२ वर्ष सुधी रहे. वळी कोइ जीव १२ वर्ष सुधी रही काल करी फेर कर्मवशे त्यांज आवीने उपजे बीजां १२ वर्ष रहे. एम २४ वर्ष सुधी पण रहे.

यतःप्रोक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

" उक्किठागप्भठिईतिरियाणंहोइअठवरिसाइं ॥
गप्भठिईमणुस्सीणुक्किठाहोइवरिसबारसगं ॥ १ ॥
गप्भस्सकायठिईनराणचउवीसवरिसाइं ॥ "

५६ प्रश्न–गर्भमां रहेलो जीव ओजआहार करे के लोमआहार करे के प्रक्षेपआहार करे ?

उत्तर—पहेले समये जीव ओजआहार करे कारण के अपर्याप्तो छे पर्याप्तो थयापछी लोमआहार करे अने प्रक्षेपआहारनी भजना (करे अथवा न करे.)

तदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

" ओयाहाराजीवासव्वेअपज्जत्तगामुणेयव्वा ॥ पज्जताउणलोमेपक्खेवेहुंतिभईयव्वा ॥ १ ॥ "

५७ प्रश्न–चउविहारपच्चखाण; स्त्रीसाथे संयोग करतां भांगे के केम ?

---

१ सिद्धराजजयसिंहने शोक्यमाताए मंत्रे करी १२ वर्ष सुधी थंभी राख्यो पछी एक सिद्धयोगिए उपाय करी छुटकबारो कर्यो अने तेथी तेनुं " सिद्धराजजयसिंह " एवुं नाम राख्युं.

उत्तर——नभांगे, पण मुखचुंबनकरतां भांगे. माटे चतुर्विधाहार-प्रत्याख्यानकरनार पुरुषे उपयोग राखवो, आ अधिकार श्राद्धविधिग्रन्थनी विधिकौमुदीनामनी टीकामां छे.

५८ प्रश्न—मुक्ताफल सचित्तछे के अचित्तछे ?

उत्तर——उत्पत्तिस्थानमां सचित्तछे अने त्यांथी नीकल्यापछी विंधेलां अथवा न विंधेलां मुक्ताफल अचित्तछे. शाथीके श्रीअनुयोगद्वारसूत्रमां अचित्तपरिग्रहमां गणावेलछे.

यदुक्तंश्रीहीरप्रश्ने.

"तथामौक्तानिसचित्तान्यचित्तानिवाकुत्रकथितानि-सन्तीति । अत्रमौक्तिकानिविद्धान्यविद्धानिवाचित्तानि-ज्ञेयानियतःश्रीअनुयोगद्वारसूत्रेमौक्तिकरत्नादीन्यचित्त--परिग्रहमध्येकथितानिसन्तीति"

५९ प्रश्न—मुक्ताफलनी उत्पत्ति क्यां थती हशे ?

उत्तर——समुद्रनी छीपमां, हस्तिनामस्तकदन्तमां इत्यादि घणेठेकांणे मोतिनी उत्पत्ति कही छे.

यतः

" हस्तिमस्तकदन्तौतुदंष्ट्राशुनवराहयोः ॥
मेघोभुजङ्गमोवेणुर्मत्स्योमौक्तिकयोनयः ॥ १ ॥ "
इति वचनात् ॥

६० प्रश्न—उतावळथी चालनार घोडाना पेटमां " खबरक खबरक " शब्द थायछे. तेशुं पाणीनो शब्द हशे ?

उत्तर—घोडानी दक्षिणकुक्षिमां "ककड" नामनो वायु होयछे. ते उतावळथी चालतां अथवा दोडतां एवो शब्दथायछे. ए वात श्रीभगवतीसूत्रना दशमाशतकना त्रीजा उद्देशामांछे

६१ प्रश्न—एकसमयेवायुना वैक्रियशरीर केटलां होय ?

उत्तर—पल्योपमने असंख्यातमेभागे जेटला समय तेटलां वायुकायना वैक्रियशरीर होय एम श्रीप्रज्ञापनासूत्रवृत्तिमां कहेलुंछे

६२ प्रश्न—भाषानुं संस्थान केवे आकारे होय ?

उत्तर—वज्राकारे होय. शाथीके भाषाना पुद्गल लोकान्तसुधी जाय छे. आ वात श्रीप्रज्ञापनासूत्रमां तथा नयचक्रमांछे.

६३ प्रश्न—गर्भजतिर्यञ्चपञ्चेन्द्रियजीवोनी तथामनुष्यपञ्चेन्द्रियजीवोनी मिश्रायोनि केमकही हशे ?

उत्तर—जे शुक्रशोणितपुद्गलोने योनिए ग्रहणकर्यां छे, ते सचित्त जाणवां अने जे ग्रहण नथीकर्यां ते अचित्त जाणवां. एम सचित्त अचित्तना योगेकरी तेमनी मिश्रायोनिकही छे. आठेकाणे केटलाक आचार्योनो एवोपण मतछे, के शोणित छे ते सचित्तछे अने शुक्रछे ते अचित्तछे तेथी मिश्रायोनि कहीए. त्यारेवळी बीजा आचार्यो एमकहेछे, के शुक्र, शोणित, बे अचित्तछे अने योनिप्रदेश सचित्तछे तेथी तेमनी मिश्रायोनि कहीए.

तथाहिश्रीलोकप्रकाशे.

"सचित्ताचित्तरूपातुमिश्रायोनिःप्रकीर्त्तिता॥ नृतिरश्चांयथायोनौशुक्रशोणितपुद्गलाः॥१॥ आत्मसाद्विहितायेस्युस्तेसचित्तापरेन्यथा॥ सचित्ताचित्तयोगेनयोनेर्मि-

श्रत्वमाहितम् ॥ २ ॥ युग्मम् योषितांकिलनाभेरधस्ता-
च्छिराद्वयंपुष्पमालावेक्षकाकारमस्तितस्याधस्तादधोमुख-
संस्थितकोशाकारायोनिस्तस्याश्चबहिश्चूतकलिकाकृतयो-
मांसमञ्जर्योजायन्तेताः किलासृक्स्पन्दित्वादृतौस्रवन्ति-
तत्रकेचिदसृजोलवाः कोशाकारकांयोनिमनुप्रविश्यस-
न्तिष्ठन्तेपश्चाच्छुक्रसंमिश्राँस्तानाहारयञ्जीवस्तत्रोत्पद्य-
तेतत्रयेयोन्यात्मसात्कृतास्तेसचित्तायेतुनस्वरूपतामापा-
दितास्तेचित्ताः ॥ अपरेवर्णयन्त्यसृक्सचेत्तनंशुक्रमचे-
त्तनमिति ॥ अन्येब्रुवतेशुक्रशोणितमचित्तंयोनिप्रदेशाः
सचित्ताइत्यतोमिश्रेतितुतत्त्वार्थवृत्तौद्वितीयाध्याये ”

६४ प्रश्न—हंस, उदकमिश्रितक्षीरने जुदूं करीने पीए छे, ते शाथी ?

उत्तर—हंसनी जीभमां एक जातनो खटाश गुण रह्यो छे, के जेथी दुध कूचारूप थइ जुदूं थाय छे एटले पाणीने वर्जीने केवल दुधनेज ते पीए छे.

तदुक्तंश्रीनन्दीसूत्रवृत्तौ.

“ अम्लत्तणेणजीहाएकूचियाहोइखीरमुदयंमिहंसो-
मोत्तूणजलंआवियइपयं ”

अत्र प्रसङ्गोपातलखीएछीए के जेमहंसो, क्षीरनीर एकठांछते नीरने तजीने निर्मलक्षीरने ग्रहण करे छे. तेम सत्पुरुषो पण परना गुणदोष एकठाछते दोषने तजीने गुणोनेज ग्रहण करे छे.

यतःप्रोक्तम्

" गुणदोषसमाहारेगुणान्गृन्हन्तिसाधवः
क्षीरनीरसमाहारेहंसाःक्षीरमिवामलम् ॥ १ ॥ "

अने तेथी ते सत्पुरुषो आ जगतमां श्लाघा करवालायक छे. माटे हे उत्तमजीवो. हे भव्यो तमे तेवा सत्पुरुषोनी सोबत करशो. सत्पुरुषोनी सोबत कल्पवल्लीनी पेठे हमेशां शुं शुं उत्तमकार्य नथी करती अर्थात् सर्व उत्तमकार्यो करे छे. जुओ के ते कीर्त्तिनुं मूल नाखे छे, पापने दली नाखे छे, आनंदने उपजावे छे, परिश्रमने रोके छे, बुद्धिना विभवने उत्पन्न करे छे, शत्रुओने नाश करे छे, कल्याणने एकठुं करे छे, मनोहर बुद्धिने आपे छे, तेमज बली भयने आच्छादित करे छे, एम पूर्वोक्त सर्व कार्यने करे छे.

यतः

" कीर्त्तिंकन्दलयत्यघंदलयतिप्राल्हादमुल्लासय
त्यायासंनिरुणद्धिबुद्धिविभवंसूतेनिशितेरिपून्॥
श्रेयःसञ्चिनुतेचबन्धुरधियंधत्तेपिधत्तेभयं
किंकिंकल्पलतेवनैवतनुतेसद्यःसतांसङ्गतिः ॥१ ॥"

परन्तु हे सज्जनो हे सभ्योपरना गुणोने तजीने छता अछता दोषोनेज ग्रहण करनारा एवा जे दुर्जनमाणसो होय तेनी सोबत नहीं करशो. दुर्जनमाणसो कागडाना जेवा स्वभाववाळा होय छे. जेमके कागडो सर्व वस्तुनुं भक्षण करे, पण विष्टानुं भक्षण कर्याविना तृप्ति न पामे तेम दुर्जन

माणसँ पण परना अवर्णवाद बोल्या विना हर्ष न पामे. अर्थात्परना अवर्णवाद बोले त्यारेज हर्ष पामे. अहो शुं घणुं कहीए कागडो दुधेधोयोथको पण धोलो न थाय राजहंसपणाने न पामे तेम दुर्जनमाणस सत्कारकर्योथको पण सज्जनपणाने न पामे. उलटो सज्जनमाणसोना प्रते अनेकप्रकारे क्लेशने देवावाळो थाय छे.

यतःप्रोक्तम्

"नविनापरिवादेनहृष्टोभवतिदुर्जनः ॥
काकःसर्वरसान्पीत्वाविनामेध्यंनतृप्यति ॥ १ ॥
खलःसत्क्रियमाणोपिददातिकलहंसताम्[1] ॥
दुग्धधौतोपिकिंयातिवायसो[2]कलहंसताम्[3] ॥ २॥"

किम्बहुना अर्थात् तेवा दुर्जननीचमाणसोनी सोबत न करवी एज उत्तम भव्य जीवोने श्रेयकारी छे. जुओके हंसे नीचकागडानी सोबतकरी तो अन्ते मृत्युने पाम्यो तेनी कथा नीचे मुजब.

एक दिवसे कोइ एकराजाए झाडनी हेठे पोतानो घोडो उभोराख्यो, अनेपोतेपण उभोरह्यो. एवामां तेज झाडनी उपर एकराजहंस तथा एक कागडो ए बन्ने पक्षिओ बेठाहता तेमां कागडाए राजाना उज्वलवस्त्र देखीने तेनीउपर विष्टानाखी, तेनाथी वस्त्र खराब थयां, ते जोइ राजाने रीसचडी ते वारे धनुषपर बाण चडावी फेंक्युं, तेवखते कागडो उडीगयो अने ते बांण हंसने वाग्युं, तेथी ते हंस तर-

---

१ क्लेशम् २ काकः ३ राजहंसत्वम्.

फडतो नीचे राजानी आगळ आवी पड्यो. तेना साम्हुं जो इने राजा बोल्यो के आवो उज्ज्वलकागडो में कोइदिवस जोयोनथी. ए अपूर्वआश्चर्यकारीवात देखाय छे. त्यारे जमीन उपर पडेलो हंस कहेछे, के हुं कागडो नथी, हुंतो उज्ज्वलहंसछुं. पण आ नीचकागडाना सङ्गथी मृत्युने पाम्योछुं. कह्युंछे के.

" नाहंकाकोमहाराजहंसोहंविमलेजले ॥
नीचसंगप्रसंगेनमृत्त्युरेवनसंशयः ॥ १ ॥" इति

६५ प्रश्न—साधु, असाधुनी, कोइनी पण निंदा न करवी, अने जे करे ते भवान्तरमां केवा अवतार पामे ते कहो.

उत्तर—"टुंटामुंगाअंधादारिद्दाघोरदुरकबाहुला
सूलाभिन्नसरीरासाहुअसाहुणनिंदाए ॥ १ ॥"

ए गाथामां प्रदर्शित टुंटा, मुंगा, आंधळा, वीगरे अवतारने पामे छे. वळी जे बाह्यक्रिया बतावी भोळा जीवोने ठगे छे. परना अवर्णवाद बोले छे. पोताना आत्मानी प्रशंसा करे छे. तेवा जीवोने क्यांथी बोधि (धर्मनी प्राप्ति) होय. पण तेवा जीवोतो उलटा पोताना आत्माने आ संसाररूप समुद्रमां बोळे छे.

यतः

" परवंचणेणरत्तापरापवाएणअप्पसंसणय ॥
ताणंकत्तोबोहिपरमप्पाणयाचबोलेइ ॥ १ ॥ "

आ ठेकाणे पूज्यपादमहोपाध्यायश्रीयशोविजयजी म-

हाराजनी करेली परपरिवादनामना १६ मां पापस्थानकी सज्झाय वांचवाथी वधारे समजवामां आवशे के परनिंदा करनारने केवो कह्यो छे. अने तेनां करेलां तप, जप, क्रिया केवां कह्यां छे इत्यादि, माटे भवभीरूप्राणिये कोइ पण जीवनी निंदा न करवी. अने करवी तो पोताना आत्मानी करवी.

६६ प्रश्न–दुर्जनमूर्खमाणसने पण्डितपुरुषो पोतानी सोबतमां लेइ धर्मोपदेश देइ सुधारे तो ते शुं न सुधरे ?

उत्तर—ना, ते न सुधरे. कह्युं छे के चन्दनना वृक्ष विषे झेरी सर्प्प हमेशां विंटायो रहे छे तथापि पोतानामां रहेल झेरने छोडतो नथी. तथा सेलडीनो गांठो सदाय सेलडीसाथे वळग्यो रहे छे पण पोतानी खारास मेलतो नथी. अने वळी कस्तूरीथी अर्चेल लसण ते पण पोताना दुष्टगंधने तजतुं नथी इत्यादि घणा दृष्टान्तोछे. तेम पण्डितपुरुषोनी सोबतथी पण दुर्जनमूर्खमाणस पोतानामां स्वाभाविक रहेल दुर्जनपणाने तजतो नथी. अने तेथीज ते सुधरतो नथी. वळी एवा दुर्जनमाणसने पण्डितपुरुषोनो जे उपदेश ते पण शांतिने माटे नथी थतो पण क्रोधने माटे थाय छे. सर्प्पने पायेलुं दुध अमृतने माटे न थाय किन्तुकेवलविषनेज वधारनारुं थाय छे.

यतः

" उपदेशोहिमूर्खाणांप्रकोपायनशान्तये ॥
पयःपानंभुजङ्गानांकेवलंविषवर्द्धनम् ॥ १ ॥ "

वळी जले करी अग्निने, छत्रे करी सूर्यना आतापने, तिक्षणअंकुशे करी मदोन्मत्तहाथीने, दंडे करी बळद तथा गर्द्ध-

भने, औषधना संग्रहे करी व्याधिने, अने नानाप्रकारना मंत्रप्रयोगे करी विषनेवारी शकायछे. इत्यादि शास्त्रकथितसर्वेनुं औषध छे. पण एक दुर्जनमूर्खमाणसनुं औषध नथी. अर्थात् पूर्वोक्तअग्निप्रमुखनिवारवाने यथायोग्यसर्वउपायछे. पण दुर्जनमूर्खमाणसनी मूर्खताने दूरकरवाने प्राये कोइ तेवो उपाय नथी.

यदाहश्रीराजर्षिभर्तृहरिः

"शक्योवारयितुंजलेनहुतभुक्छत्रेणसूर्यातपोनागेन्द्रोनिशिताङ्कुशेनसमदोदण्डेनगोगर्द्धभौ ॥ व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्चविविधैर्मंत्रप्रयोगैर्विषंसर्वस्यौषधमस्तिशास्त्रविहितंमूर्खस्यनास्त्यौषधम् ॥ १ ॥" इत्यलम्.

६७ प्रश्न–श्रीजिनप्रतिमाने विषे आचार्य वासक्षेपकरे ?

उत्तर—हा, प्रतिष्ठासमये करे.

यतः

" गन्धाँश्चचूर्णवासाँश्चचक्रेचिक्षेपचक्रभृत् ॥
प्रतिमायामिवाचार्यःप्रतिष्ठासमयेस्वयम् ॥१॥"

इतिश्रीहेमचन्द्राचार्यकृतश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रोक्तत्वात्तथैवप्रतिष्ठाकल्पादावुक्तत्वाच्चेति.

६८ प्रश्न–दीक्षादिअवसरे वासक्षेपनाखवानो रीवाज क्यांथी सरु थयो हशे ?

उत्तर--श्रीऋषभदेवस्वामीथी मांडी आजसुधी तेवखते वासक्षेप-
नखायछे अने तेवात श्रीजैनशास्त्रमां घणे ठेकाणे छे.

६९ प्रश्न-ज्योतिष्क जिनालयोनुं मान केवीरीते समजवुं ?

उत्तर--श्रीलोकप्रकाशमां श्रीविनयविजयोपाध्यायजी कहे छे के ज्योतिष्कजिनालयोनुं मान प्राये कोइपण जिनागममां उपलब्ध थतुंनथी तेथी अमोएपण कह्युंनथी. तेपाठ नीचेप्रमाणे छे.

तथाचतत्पाठः

"ज्योतिष्कगतचैत्यानांनमानमुपलभ्यते ॥
प्रायःक्वाप्यागमेतस्मादस्माभिरपिनोदितम् ॥१॥"

७० प्रश्न-श्रीजिनमन्दिरमां चैत्यवन्दना क्यांबेसीने थाय ते कहो.

उत्तर--जेपुरुषवर्गछे, ते श्रीजिनप्रतिमानी जमणीबाजु उत्कृष्टथी ६० हाथ, जघन्यथी ९ हाथ वेगळो बेसी चैत्यवन्दना करे. शाथीके श्वासोच्छ्वासादिकना कारणथी उत्पन्न थती आशातनाने दुरकरवा माटे एवीरीते स्त्रीवर्ग आश्रि वातजाणवी. फक्तविशेष एटलोके स्त्रीवर्गछे ते श्रीजिनप्रतिमानी डाबीबाजुं बेसे. इत्यादि वात श्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्तिमां छे. तेनी मूलगाथा आ प्रमाणेछे.

तथाचतद्गाथा

"दाहिणवामंगठिओनरनारिगणाभिवंदएदेवे
उक्किठसठिहथ्थुग्गहेजहन्नेणंकरनवगे ॥ १ ॥"

७१ प्रश्न—इरियावहिपडिकमीने चैत्यवन्दना थाय के केम ?

उत्तर—जे उत्कृष्टचैत्यवन्दनाछे, ते इरियावाहिपडिकमीने थाय अने जे जघन्य, मध्यम चैत्यवन्दना छे, ते इरियावहिपडिकम्या विनापण थाय.

यदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्तौ.

"उत्कृष्टाचैत्यवन्दनैर्यापथिकीप्रतिक्रमणपूर्विकैवभवतिजघन्यमध्यमेतुचैत्यवन्दनेऐर्यापथिकीप्रतिक्रमणमन्तरेणापिभवतः"

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्रूपविजयगणिवर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीकस्तूरविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणिशिष्यपं०श्रीशुभविजयगणिशिष्यमु०श्रीलक्ष्मीविजयेनविरचितेश्रीप्रश्नोत्तरप्रदीपेद्वितीयःप्रकाशः

॥ अथ तृत्रीयःप्रकाशः ॥

नमस्कृत्यजगन्नाथंजगत्पूज्यंजिनेश्वरम् ॥ ग्रन्थस्यास्यप्रकाशश्चतृतीयश्चतनोम्यहम् ॥ १ ॥

१ प्रश्न-श्रीजैनमार्गमां जीवना केटला भेद छे ?

उत्तर—बे. संसारी जीव, अने मोक्षना जीव.

२ प्रश्न-संसारी जीव, अने मोक्षना जीव, कया समजवा ?

उत्तर—चार गतिरूप संसारमां जे रह्या छे, ते संसारी जीव जाणवा, अने ते अनन्तानन्त छे. अने चारगतिरूप संसारमांथी नीकळी पांचमी मोक्षगतिने जे पाम्या छे, ते मोक्षना जीव जाणवा. ते एक निगोदने अनन्तमे भागे अनन्ता छे.

३ प्रश्न-संसारीजीवना अने मोक्षजीवना अनन्तज्ञानादिकभावप्राणमां तफावत हशे ?

उत्तर—हा, संसारी जीव कर्मसहित छे. तेथी तेना भावप्राणमलिनछे निर्मल नथी, अने मोक्षजीव कर्मरहित छे. तेथी तेना भावप्राण अत्यन्त निर्मल छे.

४ प्रश्न-जीवोने कर्मसंयोग क्यारे थयो ते कहो ?

उत्तर—प्रवाहनी अपेक्षाए करी जीवोने कर्मसंजोग अनादिकाळनो छे. "अणाइयंतंपवाहेण" इति व० नवो संयोग नथी के तेनी आदि कहीए.

५ प्रश्न-प्रवाहनी अपेक्षाए करीने पण जीवोने कर्मसंयोगसादि छे एम आपणे मानीए तो केम ?

उत्तर—ना, एम न मानवुं. एम मानीए तो पूर्वे जीवो कर्मरहित निर्मल हता पाछळथी कर्मकर्याथी कर्मसंयोगने पाम्या छे, एम आपणे मानवुं जोइशे. अने एम मानवाथी कर्मरहितनिर्मल-मुक्तजीवोने पण कर्मसंयोगनो संभव थशे. अने तेम थवाथी मुक्त जीवोने अमुक्तता प्राप्त थशे. माटे एवी रीते मानवुं ते योग्य न गणाय, किन्तु प्रवाहनी अपेक्षाए करी जीवोने कर्मसंयोग अनादिकाळनो छे, नवो संयोग नथी एम मानवुं एज योग्य गणाय.

६ प्रश्न—जीवोने कर्मसंयोग जो अनादिकाळथी छे, तो ते कर्मनो वियोग पाछो शाथी थाय छे ?

उत्तर—जेम कांचन अने उपलनो संयोग अनादिकाळथी छे तोपण अग्नि प्रमुख सामग्रीवडे करी उपलनो वियोग थाय छे. तेम जीवोने पण सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्रनी प्रबळतारूप अग्निए करीकर्मरूप मलनो वियोग थाय छे.

यदाहमहाभाष्यकारश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणः

" जहइहयकंचणोवलसंजोगोणाइसंतइगओवि ॥
वुच्छिज्जइसोवायंतहजोगोजीवकम्माणं ॥ १ ॥ "

७ प्रश्न—सर्व जीव आश्रि कर्मसंयोग अनादिसान्त छे के केम ?

उत्तर—ना, भव्यजीव आश्रि अनादिसान्त छे. अभव्य जीव आश्रि " आत्माकाशयोगवत् " अनाद्यनन्त छे.

---

१ पाषाण (पृथ्वीकायनो एक भेद.)

८ प्रश्न—जो भव्यजीव आश्रिकर्मसंयोग अनादिसान्त छे तो सर्व भव्यजीवो मोक्षे जवाथी काले करी भव्यजीव रहित आ लोक थशे ?

उत्तर—ना, शाथी के अनन्त एवा अतीतकाळे अनन्ता भव्यजीवो सिद्धिवर्या छे तोपण ते सर्वे एक निगोदने अनन्तमे भागे जाणवा तेमज अनन्त एवा अनागतकाले पण अनन्ता बीजा भव्यजीवो सिद्धि घरसे ते पण समुदित सर्वे एक निगोदने अनन्तमे भागेज जाणवा. अने तेथी हवे एवो कोइ काल नथी के जे काले सिद्धना जीवो वृद्धि पाम्या थका एक निगोदना अनन्तमा भागथी अधिका थाय. ज्यारे श्री जिन भगवान् पासे कोइ ते संबधि प्रश्न करे त्यारे श्रीजीनभगवान् उत्तर एवोज आपे के एक निगोदनो अनन्तमोभाग सिद्धि वर्यो छे. माटे कोइ काळे भव्यजीव रहित आ लोक नहिं थाय.

तथाहिश्रीलोकप्रकाशे.

“ अनन्तेनापिकालेनयावन्तःस्युःशिवंगताः ॥ सर्वेप्येकनिगोदैकानन्तभागमिताहिते ॥ १ ॥ कालेनभाविनाप्येवमनन्तामुक्तिगामिनः ॥ चिन्त्यन्तेतैःसमुदितास्तथापिनाधिकास्ततः ॥ २ ॥ एवञ्च ॥ नतादृग्भविताकालः सिद्धाःसोपचयाअपि ॥ यत्राधिकाभवन्त्येकनिगोदानन्तभागतः ॥ ३ ॥ तथाहुःजइयाहोईपूच्छाजिणाणमग्गंमिउत्तरंतइया ॥ इक्कस्सनिगोअस्सयअणंतभागोसिद्धिगओ ॥ ४ ॥ ”

तथाध्यात्मसारेपि.

" भव्योच्छेदोनचैवंस्याद्गुर्वानन्त्यान्नभोंशवत् ॥
प्रतिमादलवत्कापिफलभावेपियोगतः ॥ १ ॥
नैतद्वयंवदामोयद्भव्यःसर्वोपिसिध्यति ॥
यस्तुसिध्यतिसोवश्यंभव्यएवेतिनोमतम् ॥ २ ॥ "

विस्तारवात श्रीभगवतीसूत्रमां ज्यां जयंतीश्राविकानो अधिकार छे त्यांथी जाणवी.

९ प्रश्न–निगोदकोने कहीए ?

उत्तर––अनन्ता जीवोना एक साधारण शरीरने निगोद[१] कहीए. तेवा असंख्याता निगोदना समुदायने एक गोलोकहीए, अने तेवागोळा आलोकमां लोकाकाशप्रदेश प्रमाणे असंख्याता छे.

यदुक्तंश्रीसंग्रहणीसूत्रे.

"गोलायअसंखिज्जाअसंखनिग्गोयओहवइगोलो-
इक्किक्कमिनिगोएअणंतजीवामुणेयव्वा ॥ १ ॥ "

अत्र विशेष विषय श्रीप्रज्ञापना, लोकप्रकाशादिथी जाणवो.

१० प्रश्न–आलोकमां अभव्य जीवो केटलाछे ?

---

१ निगोदना बे भेदछे सूक्ष्म अने बादर, तेमां चर्मचक्षुए करीजे अदृश्य छे ते सूक्ष्म अने जे दृश्यछे ते बादर के, जे कंद वीगेरे अनंत काय वनस्पतिछे ते,

उत्तर—जघन्ययुक्तचोथे अनन्ते कह्याछे. तेथीते अभव्य जीवो अनन्ता छे. अने जघन्ययुक्तानन्तनु स्वरूप चोथा कर्मग्रन्थथी अथवा लोकप्रकाशथी जाणवुं.

११ प्रश्न—अभव्यजीवो कोइकाले ओछावधता थता हशे ?

उत्तर—ना, कारणके जे अभव्यजीवोछे ते भव्य न थाय, अने जे भव्य जीवोछे ते अभव्य न थाय तोपछी अभव्य जीवोने ओछा वधतानी क्यां वातरही.

१२ प्रश्न—भव्य, अभव्य जीवनुं लक्षणशुं ?

उत्तर—हुं भव्यछुं अथवा अभव्यछुं. एम पोताना अन्तःकरणमां जे जाणे ते नियमाभव्य जीवजाणवो कारणके अभव्यजीवने एवी शङ्काहोतीनथी बश एजभव्य अभव्यजीवनुं लक्षण जाणवुं.

यदुक्तंश्रीआचाराङ्गसूत्रवृहद्वृत्तौ.

" अभव्यस्यहिभव्याभव्यत्वशङ्कायाअभावात् "

१३ प्रश्न—अभव्यजीव भावथी " पाद[1]पोपगमन " अनशन करे ?

उत्तर—द्रव्यथी करे भावथी न करे.

१४ प्रश्न—अभव्यजीव चारित्र ग्रहण करे ?

उत्तर—हा, द्रव्यथी अनंती वार ग्रहण करे. परन्तु मोक्षे न जाय फक्त क्रियाबले करी नवमाग्रैवेयक सुधीजाय.

१५ प्रश्न—अभव्यजीवना प्रतिबोधेला भव्यजीवो मोक्षे जाय ?

---

१ पृथ्वीउपरछेदाइपडेलवृक्षनी माफक अत्यन्त स्थिरपणे जेमां रहेवायछे ते " पादपोपगमन " अनशन जाणवुं.

उत्तर—हा, भव्यजीवना प्रतिबोधेला मोक्षेजाय तेनाथी अभव्यजीवना प्रतिबोधेला अनन्तगुणा मोक्षे जाय. ए अधिकार नयचक्रमांछे.

१६ प्रश्न—प्रसिद्धथएला अभव्यजीवो केटलाछे ?

उत्तर—“ संगम १ कालयसूरि २ कपिला ३ अंगार ४ पालयादोवि ६ ए सत्त अभव्वा उदायी निवमारओ ७ चेव ॥ १ ॥॥ एउक्तगाथामां कहेला एवा आ चोवीशीमां प्रसिद्धथएला अभव्यजीवो सातछे, ते नीचेप्रमाणे,

१ लो—संगमोदेवके जेणे एक रात्रिमां श्रीमहावीरस्वामिने वीश उपसर्गकर्या ते.

२ जो—कालकसूरीओ कसाई के जे राजगृही नगरीमां रही दररोज ५०० पाडानो वधकरतो हतो ते,

३ जी—कपिलादासी के जे श्रेणिक महाराजाना कहेवाथी पण पोताने हाथे मुनिदान देवानुं नस्वीकारतीहवी ते.

४ थो—अङ्गारमर्दकाचार्य के जेने ५०० शिष्योहता ते.

५ मो—पालकपापीके जेणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिना शिष्य श्रीस्कन्दकाचार्यना ४९९ शिष्योने तेमज स्कन्दकाचार्यने घाणीमां घाली पीलीनाख्या ते.

६ ठो—पालककुमार श्रीकृष्णमहाराजानो पुत्र के जेणे घोडानी लालचे प्रद्युम्नकुमार पहेलां श्रीनेमिनाथ भगवानने द्रव्यवन्दन कर्युं ते.

७ मो—उदायीराजाने मारनार “ विनयरत्नसाधु ” आ उक्त सात प्रसिद्धअभव्यजीवोनी विस्तार वात शास्त्रान्तरोथी जाणवी.

१७ प्रश्न—कोइ अभव्यजीव स्वर्गादि सुखनी इच्छावडे द्रव्यचारित्रने पामीने भणेतो केटलुं श्रुतपामे ?

उत्तर——श्रीविशेषावश्यकसूत्रवृत्तिमां अज्ञानरूपे अगीयार अंग कह्यां-छे वळी खरतरगच्छीयश्रीक्षमाकल्याणकृतप्रश्नोत्तरसार्द्धशतकमां अङ्गारमर्दकाचार्यादिने पूर्वधरलब्धिविना सूत्रपाठ मात्र नवपूर्वान्तश्रुतकहेलुंछे. वळी कोइ ग्रन्थमां अभव्यजीवो पूर्वधरलब्धिविना पण भिन्नदशपुर्वान्तश्रुतने पामेछे. एमपण कहेलुंछे. तत्त्वनीवात केवळी जाणे.

१८ प्रश्न—अभव्यजीवो श्रीसिद्धाचलतीर्थनी स्पर्शना न करे एवा अक्षरो क्यांइछे ?

उत्तर——हा, श्रीधनेश्वरसूरिविरचितश्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यमां छे.

तद्यथा.

" अभव्याःपापिनोजीवानामुंपश्यन्तिपर्वतम् ॥
लभ्यतेचापिराज्यादिनेदंतीर्थंहिलभ्यते ॥ १ ॥ "

परन्तु द्रव्यथी के भावथी स्पर्शना न करे. ए वात जे समजवानीछे, ते बहुश्रुतने हाथ छे.

१९ प्रश्न—श्रीजिनभगवाननी देशना अभव्योने तत्त्व जणावनारी केम नथी थती ?

उत्तर——अभव्योने विषे श्रीजिनभगवाननी ते देशना जीवादिक नव तत्त्वोने जणावनारी जे नथीथती, तेमांते अभव्योनुंज दुर्गुणपणुं छे, पण तेमां भगवाननो कंइ दोषनथी दृष्टान्ततरीके सूर्यनो उदयथए छते प्रकृतिथीज दुष्टकर्मोवाला

घुवडोने प्रकाश नहीं थतो, जणाएलो छे, तेनी पेठे अहीं पण जाणीलेवुं.

यदुक्तंदेशनाष्टके.

" अभव्येषुचभूतार्थायदसौनोपपद्यते ॥
तत्तेषामेवदौर्गुण्यंज्ञेयंभगवतोनतु ॥ १ ॥
दृष्टश्चाभ्युदयेभानोःप्रकृत्याक्लीष्टकर्मणाम् ॥
अप्रकाशोह्युलूकानांतद्वदत्रापिभाव्यताम् ॥ २॥ "

वळी अभव्यजीवोने वन्ध्यास्त्री समान कह्याछे जेमके वन्ध्या स्त्रीने पुरुषनोयोगबने छते पण पुत्रोत्पत्ति न थाय. तेम अभव्यजीवोने श्रीजिनभगवाननी देशनानो योगबने छते पण तत्त्व बोध न थाय.

२० प्रश्न–परमाधामि जीवो भव्यछे के अभव्य छे ?

उत्तर––श्रीहीरप्रश्नमां परमाधामि जीवोबन्ने प्रकारना कह्या छे. वळी (६२) मार्गणायंत्रमांपण अभव्यमार्गणामां परमाधामि जीवमा भेद विकल्पे गणावेलाछे. अने अभव्यकुलकमां अभव्य जीवो परमाधामिपणे न उपजे एम कह्युं छे. माटे तत्त्वनीवात बहुश्रुत जाणे.

२१ प्रश्न–परमाधामि जीवो कोणछे ?

उत्तर—भवनपतिविशेषअसुरकुमारमां रहेवा वाळा एक जातना देवो छे. अने ते नारकी जीवोने विविधप्रकारनी महामहा तीव्रवेदनाओ उपजावे छे.

२२ प्रश्न–परमाधामि जीवोनी करेली वेदनाओ केटलीनरक पृथ्वीओ ने विषे छे ?

उत्तर––पहेली त्रण नरकपृथ्वीओने विषेछे, एम संग्रहणीसूत्रप्रमुखग्रन्थोमां निवेदन करेलुं छे. अने श्रीहेमचन्द्रसूरिविरचितत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रमां चोथी नरकपृथ्वीनेविषेपण परमाधामिकृतवेदना कहीछे एम जाणवुं.

२३ प्रश्न–मरण अवसरे जीवने शरीरमांथी नीकळवानो कयो मार्ग प्रभुए प्ररूप्यो हशे ?

उत्तर—ते वखते कायामांथी नीकळवानो पांच प्रकारे मार्ग प्ररूप्यो छे. ते आ प्रमाणे–पगथी नीकले, साथलथी नीकले, हृदयथी नीकले, मस्तकथी नीकले, अने सर्वाङ्गथी नीकले.

तथोक्तंश्रीस्थानाङ्गसूत्रे

" पंचविहेजीवस्सणिज्जाणमग्गेपण्णत्तेतंजहापाएहिं १ उरूहिं २ उरेणं ३ सिरेणं ४ सव्वंगेहिं ५ ॥ "

२४ प्रश्न–उक्त पांच प्रकारे जीव शरीरमांथी नीकलतो थको कइ गतिने पामे ?

उत्तर—पगथी नीकलतो थको जीव नरकगतिने पामे, साथलथी नीकलतो थको जीव तिर्यग्गतिने पामे, हृदयथी नीकलतो थको जीव मनुष्यगतिने पामे, मस्तकथी नीकलतो थको जीव देवगतिने पामे, अने सर्वाङ्गथी नीकलतो थको जीव सिद्धिगतिने पामे.

तथोक्तंपूर्वोक्तसूत्रे

" पाएहिंणिज्जाणमाणेनिरयगामी भवइ १ उरूहिंणि

ज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ २ उरेणंणिज्जाण माणेमणुयगामी भवइ ३ सिरेणंणिज्जाणमाणे देव गामी भवइ ४ सव्वंगेहिंणिजाणमाणेसिद्धिगतिपज्ज-वसाणे ५ पण्णत्ते"

२५ प्रश्न-स्त्रीए प्रार्थना करेलो पुरुष केवो जाणवो ?

उत्तर—न करवानुं पण करे तेवो जाणवो. अत्र राजा भोज तथा कालिदासकविनुं दृष्टान्त जाणवुं अने ते दृष्टान्त नीचे मुजब-धारा नगरीने विषे एक अतिरूपवती वेश्या रहेती हती तेमां ते नगरीनो राजा भोज तथा कालिदासकवि ए बे घणा आसक्त थया हता. एक समये कालिदासना कहेवाथी ते वेश्या, एवी हठमां आवी के भोजराजाने कह्युं के, आजतो मारूं कह्युं करवुं पडशे के तमो गधेडानीपेठे चारे पगे थइने तमारा उपर हुं बेसुं त्यारे तमारे आ घरना चोकमां भ्रमण करतां जवुं ने घोडानीपेठे खुंखारा करवा. तेम करशो तोज मारा अंगनो संग थशे. पछी राजाए पण आ कालिदासनुं काम छे एम स्त्रीहठ जाणी तेम कबूल थइ ते वात करी. पछी राजाए वेश्याने शीखव्युं के ज्यारे कालिदासकवि तारी पासे आवे त्यारे डाढी मुछो मुंडावी तारो संग करे ते वात कबूल थाय तोतो मारे कोइ प्रकारनो शोक न रहे. पछी ते वात तेणीए कबूल करी. पछी ज्यारे कालिदास आव्या त्यारे वेश्याए ते वात कबूल करावी, कालिदासे डाढी मुछो मुंडावी वेश्याने प्रसन्न करी. पछी कालिदास ज्यारे राजसभामां आव्या त्यारे भोजराजाए कविनी मस्करी करी के, हे

कविश्रेष्ठ कालिदास तमोए कया पर्वमां मुंडन कराव्युं त्यारे कालिदासे कह्युं के जे तीर्थक्षेत्रमां जे पर्वमां गधेडा, घोडानीपेठे खुंखारता हता ते तीर्थक्षेत्रमां तेज पर्वमां अमारुं मुंडन थयुं छे. एवो उत्तर श्लोकमां आप्यो. ते श्लोक आ प्रमाणे—

" कालिदास कविश्रेष्ठ कुत्र पर्वणि मुंडनम् ॥
अनश्वा यत्र हेषन्ते तत्र पर्वणि मुंडनम् ॥ १ ॥ "

माटे स्त्रीनी प्रार्थनाथी न करवानुं पण पुरुषो करे छे. विस्तारवात भोजप्रबंधमां छे.

२६ प्रश्न—शुक्लपाक्षिक, अने कृष्णपाक्षिक जीवोकोने कहीए ?

उत्तर—कंइ न्यूनअर्द्धपुद्गलपरावर्त्तसंसार छे बाकी जे जीवोने ते शुक्लपाक्षिक जाणवा अने तेनाथी अधिकसंसारवाला जे जीवो छे, ते कृष्णपाक्षिक जाणवा.

उक्तञ्चतदेवश्रीप्रज्ञापनावृत्तौ.

" जेसिमवड्ढोपुग्गलपरियट्टोसेसओयसंसारो ॥
तेसुक्कपरिकयाखलुअहिएपुणकण्हपरिकओ ॥ १ ॥ "

आ ठेकाणे पाठान्तरवात घणी छे, ते पण्डितश्रीवीरविजयगणिकृतश्रीप्रश्नचिन्तामणिग्रन्थथी जाणवी.

२७ प्रश्न—कृष्णपाक्षिक जीवो कइ दिशाए उपजे छे ?

उत्तर—घणुकरीने दक्षिण दिशाए उपजे छे.

तथाहिश्रीप्रज्ञापनासूत्रवृत्तौ.

"कृष्णपाक्षिकाश्चप्राचुर्येणदक्षिणस्यांदिशिसमुत्पद्य-

---

१ पुद्गलपरावर्त्तस्वरूप कर्मग्रन्थादिकथी जाणवुं.

न्तेनशेषासुदिक्षुतथास्वाभाव्यात्तच्चतथास्वाभाव्यंपूर्वाचा-र्यैरेवंयुक्तिभिरुपबृंह्यतेतद्यथाकृष्णपाक्षिकादीर्घतरसंसार--भाजिनउच्यन्तेदीर्घतरसंसारभाजिनश्चबहुपापोदयाद्भव--न्तिबहुपापोदयाश्चक्रूरकर्म्माणःक्रूरकर्माणश्चप्रायस्तथास्वा-भावात्तद्भवसिद्धिकाअपिदक्षिणस्यांदिशिसमुत्पद्यन्तेनशे-षासुदिक्षुयतःउक्तंपायमिहक्रूरकम्माभवसिद्धियाविदाहिण लेसुनेरइयतिरियमणुयासुराइठाणेसुगच्छंति ॥ १ ॥ ”

२८ प्रश्न–मुनिमहाराजो कइ दिशा सन्मुख रही आवश्यक क्रिया करे ?

उत्तर—पूर्वदिशा अथवा उत्तरदिशा सन्मुख रही प्रतिक्रमण करे.

यतःप्रोक्तम्.

“ पुव्वाभिमुहाउत्तराभिमुहाआवस्सयंपकुव्वंति ” इति साधुदिनकृत्येतथैवश्रीस्थानाङ्गद्वितीयस्थानेपि

२९ प्रश्न–मुनिमहाराजोए केडे कंदोरो बांधवो कया शास्त्रमां कहेलो छे ?

उत्तर—श्रीआवश्यकवृत्ति, धर्मरत्नप्रकरणवृत्ति, श्रीउत्तराध्यय-नवृत्ति, वीगेरेमां कह्युंछे के श्रीआर्यरक्षितसूरिए, साधु थएला एवा पोताना पिताश्रीने कंदोरो बांध्यो छे ते आचरणाए करी हालमां पण मुनिमहाराजो केडे कंदोरो बांधे छे एवो वृद्धवाद छे.

३० प्रश्न–साधुओने भिक्षार्थे शय्यातरने घरे जवुं कल्पे के केम ?

उत्तर—उत्सर्गमार्गआश्रि न कल्पे परन्तु “ दुविहे गेलन्नंमी० ” ए गाथामां कहेल तथाविध कारणोनो सद्भाव छतां कल्पे ?

३१ प्रश्न–केटला कोशथी आणेलो अशनादिक आहार साधुओने कल्पे ?

उत्तर—बे कोशमध्येथी आणेलो अशनादिक आहार साधुओने क-ल्पे, पण बे कोशउपरांतथी आणेलो न कल्पे. कारण के ते मार्गातीत थवाथी अकल्पनीय छे,

यदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

" असणाइयंकप्पइकोसदुगप्भंतराओआणेउं ॥
परओआणिज्जंतंमग्गाईयंतमकप्पं ॥ १ ॥ "

३२ प्रश्न—पहेले पहोरे लावेलुं जे अशनादि, ते मुनिओने चोथे पहोरे भोजन करवाने कल्पे ?

उत्तर—त्रण पहोर सुधी भोजन करवाने कल्पे पछी कालातिक्रान्त थवाथी चोथे पहोरे भोजन करवाने न कल्पे.

यदुक्तंश्रीप्रवचनसारोद्धारे.

" पढमप्पहराणीयंअसणाइजईकप्पएभोत्तुं ॥
जावतिजामेतिजामेउद्धंतमकप्पंकालइक्कत्तं ॥ १ ॥ "

तथैव श्री भगवतीसूत्रेपि.

३३ प्रश्न—संखडि प्रत्ये भिक्षार्थे साधुने जवुं न कल्पे त्यां "संखडी" एटले शुं. अने तेनी केवी रीते व्युत्पत्ति थाय छे ते फरमावो.

उत्तर—ओदनपाकरूप, अथवा जेमां घणा माणस जमनार होय एवा जमणवाररूप "संखडि" जाणवी. इतिश्री कल्पवृत्त्यादौ.

तद्यथा.

" ओदनपाकरूपाजनसंकुलजेमनवारादिरूपावा-संखडिः " विशेषोत्रश्रीकल्पवृत्त्यादिभ्योवसेयः " संखंड्यंतेविराध्यंतेप्राणिनोयत्रसासंखडिः" इतिश्रीआचाराङ्गसूत्रबृहद्वृत्तौ.

जेमां घणा प्राणिओनो नाश थाय ते " संखडि " आवीतेनी व्युत्पत्ति श्रीआचाराङ्गसूत्रनी टीकामां करीछे. माटे हेभव्यो माता,

पितादि पुंठे संखडि (जंमणवार) न कराय तोज श्रेष्ट कहेवाय किम्बहुनेत्यलम्.

३४ प्रश्न–परिहारविशुद्धिकमुनिमहाराजोने निद्राहोय ?

उत्तर—ते मुनिमहाराजो प्राये अल्पनिद्रावाला होय यतः "पाय अप्पानिद्दा " इति वचनात्.

३५ प्रश्न–अगीतार्थमुनि एकाकीपणे विचरे ?

उत्तर—श्रीजैनशास्त्रमां गीतार्थमुनिनो तथा गीतार्थमुनिनिश्राए अगीतार्थमुनिनो विहार कह्योछे पण केवलअगीतार्थमुनिनो बिहारकह्यो नथी शाथीके केवलअगीतार्थमुनिविहारमां श्रीतीर्थङ्कर गणधर भगवाने अनेक दोष कह्याछे. माटे बे प्रकारना विहार सिवाय त्रीजो वि० नथी क०

यतः प्रोक्तम्

" गीयथ्थोयविहारोबीओगीयथ्थमीसिओचेव ॥
इत्तोतइयविहारोणाणुन्नाओजिणवरेहिं ॥ १ ॥ "
पाठान्तरे " गीयथ्थनीसिओभणिओ " इति

३६ प्रश्न–स्थविरकल्पिकमुनिमण्डलीमां " वृषभ " कोने कहेलछे ?

उत्तर—श्रीप्रवचनसारोद्धारवृत्तिमां गीतार्थने " वृषभ " कहेलछे.

३७ प्रश्न–संवेगी छतापण जोते अगीतार्थ होयतो तेनीपासे आलोयणा लेवीके केम ?

उत्तर—ना, नलेवी. कारणके ते स्याद्वादमार्गनो अजाण होवाथी यथार्थ चारित्रनी शुद्धिने जाणे नहीं, तेथी न्यूनाधिक आलोयणा आपे, जेथी ते पोताने तथा आलोयणा लेनारने उलटा संसारमां पाडे.

यतः प्रोक्तम्

" अगीयथ्थोनविजाणइसोहिंचरणस्सदेइऊणाहिअं ॥
तो अप्पाणं आलोयगंचपाडेइसंसारे ॥ १ ॥ "

शि०—त्यारे कोनीपासे आलोयणा लेवी ?

गु०—पोताना गच्छना आचार्यादिक पासे लेवी. तेमने अभावे एक सामाचारीवाला बीजा गच्छना आचार्यादिक पासेलेवी. तेमना अभावे अन्य सामाचारीवाला संवेगीगच्छना आचार्यादिक पासेलेवी. तेमने अभावे गीतार्थपार्श्वस्थनी पासेलेवी. तेनो अभाव होयतो गीतार्थ सारूपिक (स्वेत वस्त्र धारण करनार, मस्तके केशनहीं राखनार, काछडी नहिं वालनार, रजोहरण तथा ब्रह्मचर्य विनानो, तेमज स्त्री वगरनो, अने भिक्षाग्राही) तेनी आगल लेवी. तेनोपण अभावहोय तो पश्चात्कृतपासे (गीतार्थचारीत्रतजीने थएला गृहस्थनी पासे) आलोयणा लेवी. तेने अभावे राजगृही वीगेरे नगरीओनी बहार गुणशिलादिस्थानमां ज्यां अर्हन्त, गणधरादिकोए घणीवार प्रायश्चित्त आपेलुं जे देवताए जाणेलुंहोय, ते ठेकाणे जइ, ते सम्यग् दृष्टि देवताने, अठमादि तप आराधन वडे प्रत्यक्ष करी तेनी आगळ आलोयणा लेवी. कदी जो ते देवता चवी जइने बीजो उत्पन्न थयो हशे, तो ते महाविदेह वीगेरे क्षेत्रमां अर्हन्तभगवानने पूछी आवीने प्रायश्चित आपशे. जो तेनो पण अभाव होय तो अर्हत्प्रतिमानी आगळ आलोयणा करीने पोतानी मेळे प्रायश्चित अङ्गीकार करवुं. हवे जो तेनो पण अभाव होयतो पूर्व, अथवा उत्तरदिशा तरफ मुख राखी अर्हन्तसिद्धोनी समक्ष पण आलोयणा लेवी.

यतःप्रोक्तम्

" आयरिआइसगच्छेसंभोइअइअरगीयथ्थपासथ्थो ॥
सारूवीपछाकडदेवयपडिमाअरिहसिद्धो ॥ १ ॥ "

अत्र विशेषविस्तरार्थिओने श्रीश्राद्धजीतकल्पवृत्तिवीगेरे-ग्रन्थो जोवाथी घणीज वधारे वात समजवामां आवशे.

३८ प्रश्न–कोइ लज्जादि कारणथी गुरु पासे करेल पापकर्मनी आलोयणा न ले तो ते आराधक कहेवाय के केम?

उत्तर—ना, ते आराधक न कहेवाय. सल्यसहितने आराधकपणुं नथी कह्युं.

यतः

" लज्जाइगारवेणंबहुस्सुअमएणवादुच्चरियं ॥
जोनकहेइगुरुणंनहुसोआराहगोभणिओ ॥ १ ॥ "

इतिशास्त्रवचनात्

३९ प्रश्न–आहारकलब्धिवंत चौद पूर्वधर मुनि भवभ्रमण करे?

उत्तर—हा, प्रमादपरवशथया थका भवभ्रमण करे.

यतः

" चउदसओहीआहारगाविमणनाणवीयरागावि ॥
हुंतिपमायपरवसातयणंतरमेवचउगइया ॥ १ ॥ "

इतिवचनात्.

४० प्रश्न–साध्वीने नवकल्पविहार होय?

उत्तर—पञ्चकल्पविहार होय शाथी के चार मास प्रमाणवाळो एक

वर्षाकल्प, अने बीजा चारकल्प, साध्वीने बेमासवडे एक कल्प गणाय. एम श्रीवृहत्कल्प, पञ्चकल्पचूर्णिमां क०

तथाचतत्पाठः

" अज्जाणंपुणपंचवसहीओघेतव्वाओकम्हाजम्हा-तासिंदुमासंकप्पोइत्यादि "

४१ प्रश्न–साधुओ तथा साध्वीओ रात्रिए वसतिद्वार बंध करे के नही ?

उत्तर—साध्वीओए रात्रिए अवश्य कमाड प्रमुखवडे करी वसतिद्वार बंध करवुं अने जो वस्तिद्वार बंध न करे तो प्रत्यनीक, चौर, श्वापद, पारदारिक, इत्यादि दुष्ट जीवोनो प्रवेश थवाथी प्रायश्चित आवे, एम कहेलुं छे. हवे जे जिनकल्पिक साधुओ छे, ते सर्वथा वसतिद्वार बंध न करे, शाथी के ते निरपवादानुष्टान विषे तत्पर छे. वळी श्रीजिनभगवाननी तेमने विषे तेवी आज्ञा छे. अने जे स्थविरकल्पिक साधुओ छे, ते तो कारण छते यतनावडे करी वसतिद्वार बंध करे. इत्याद्यधिकंश्रीवृहत्कल्पभाष्यवृत्त्योर्द्वितीयखण्डेकथितमस्ती–तिज्ञेयम्.

४२ प्रश्न–मुनिमहाराजो परस्पर केटलुं अन्तर राखी शयन करे ?

उत्तर—उत्कृष्टथी बे हाथनुं परस्पर अन्तर राखी शयन करे, एम जो न करे तो अनेक प्रकारना दोषनो संभव थाय छे इत्यादि.

४३ प्रश्न–मुनिमहाराजो पात्रांथी केटले दूर शयन करे ?

उत्तर—उंदर वीगेरे जीवोने निवारण करवा वीश अंगुल दूर शयन करे तेथी अधिक दूर शयन न करे आ ठेकाणे घणो विस्तार छे ते श्रीभद्रबाहुस्वामिकृतओघनिर्युक्तीथी जाणवो.

४४ प्रश्न—महाविदेहक्षेत्रमां केटलां चारित्र पामीए ?

उत्तर—त्रण चारित्र (सामायिक, सूक्ष्म सम्पराय, अने यथाख्यात) पामीए, परन्तु बीजुं छेदो पस्थापनीय, अने त्रीजुं परिहार विशुद्धिक, ए बे चारित्र न पामीए.

यतः

" तिन्नियचारित्ताइंबावीसजिणाणएरवएभरहे ॥
तहपंचविदेहेसुबीयंतईयंनविहोइ ॥ १ ॥ "

इतिवचनात्.

४५ प्रश्न—मुनिओने व्रीहिपलाल कल्पे ?

उत्तर—हा, कारणे यतनापूर्वक सालिप्रमुखधान्यपलाल (तृण विशेष) कल्पे.

यतः

" तणपणगंपुणभणियंजिणेहिंजियरागदोषमोहेहिं
सालीवीहियकोद्दवरालयरण्णेतणाइंच ॥ १ ॥ "

इतिवचनात्.

दृष्टान्त तरीके श्रीकेसीगणधरे श्रीगौतमगणधरने पलाल आसनपर बेसार्या छे एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनी टीकामां कह्युं छे.

४६ प्रश्न—मुनिओ चर्म पादुका पहेरे ?

उत्तर—ना, न पहेरे "श्रमणाअनुपानच्चरणाः" इतिवचनात्. पण तथाविधकारणे लुगडाना मोजां पहेरे छे. अने श्रीप्रवच-

नसारोद्धारपरथी तो एम पण समजाय छे के चर्मपादुका पण पहेरे.

४७ प्रश्न–काणा माणसने दीक्षा अपाय के केम ?

उत्तर–" क्वचित्काणोभवेत्साधुःक्वचित्खल्वाटनिर्धनः ॥
दीर्घदन्तःक्वचिन्मूर्खःक्वचिद्गानवतीसती ॥१॥" पुनः
" षष्टिर्वामनकेदोषाअशीतिर्मधुपिङ्गले ॥
शतञ्चटुंटमुंटेषुकाणेसंख्यानविद्यते ॥ १ ॥ "

एम शास्त्रोक्तवचनप्रमाणथी काणों माणस दोषनिधान, तेमज शासननिंदाकरावनार लज्जामणो गणाय छे. तेथी तेने वर्ज्यो छे. वास्ते दीक्षा न अपाय. ए विना बीजा पण दीक्षाने अयोग्य घणा छे. ते वात श्रीप्रवचनसारोद्धारनी टीकाथी जाणवी.

४८ प्रश्न–केटलाक कहे छे के साधुना गुणनी परीक्षा करीनेज साधुने वांदवा, अन्यथा न वांदवा तेनुं केम ?

उत्तर—श्री जैनशास्त्रमां एवो एकान्त नियम नथी. वास्ते जे एवी रीते बोलनारा छे ते विविध श्री जैनशास्त्रना अनभिज्ञ जाणवा. अर्थात् श्रीजैनस्याद्वादमतना जे जाणकार पुरुषो छे ते एम नथी बोलता परन्तु जे अज्ञानि जीवो छे तेज एम बोले छे, इति रहस्यार्थः

४९ प्रश्न–" शिष्यक स्थापना कल्प " कोने कहीए ?

उत्तर—जेणे पिण्डनिर्युक्तिप्रमुखशास्त्राभ्यास कर्यो नथी, ते आहारना दोषने (४२ दोषने) न जाणे, तेवा नवा शिष्ये

१ जेने माथे टाल होय ते खल्वाट कहेवाय.

लावेलो आहार बीजा साधुओने न कल्पे ते " शिष्यक स्थापना कल्प " कहेवाय.

यदुक्तंश्रीदशवैकालिकदीपिकायाम्.

" येननवीनशिष्येणपिण्डनिर्युक्त्यादिपठितंनास्ति-सआहारदोषान्नजानातितेनानीतआहारपिण्डोग्रहीतुंसा--धूनामकल्पःसशिष्पकस्थापनाकल्पइति "

५० प्रश्न—दिक्षावसरे नूतन नाम स्थापवाना अक्षरो क्यांई हशे ?

उत्तर—हा, श्रीविचाररत्नाकरग्रंथमां, तेमज श्रीहरिभद्रसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां छे जोवाथी समजाशे.

५१ प्रश्न—खरां क्षमतक्षामणा कोणे कर्यां ?

उत्तर—मृगावतीजीए कर्यां के जेत्रिकरणशुद्धे इरियावहि पडिकमतां इरियावहिना १८२४१२० मिच्छामिदुक्कड देतां केवलज्ञानने पाम्यां. ते इरियावहिना १८२४१२० मिच्छामिदुक्कडना भेद केवी रीते थाय ते नीचे प्रमाणे—

सर्वे जीवना ५६३ भेद जाणवा. तेने " अभिहया " सन्मुख आवतां हण्या, इत्यादि दशपदसाथे गुणतां ५६३० भेद थाय, तेने रागद्वेष साथे गुणतां ११२६० भेद थाय तेने मन, वचन, काया, साथे गुणतां ३३७८० भेद थाय, तेने पुनः करण, करावण, अनुमोदन साथे गुणतां १०१३४० भेद थाय, तेने अतीत, अनागत, वर्त्तमानकाल साथे गुणतां ३०४०२० भेद थाय, तेने अरिहंत, सिद्ध, साधु, देव, गुरु, अने आत्मा, ए छनी साथे गुणतां १८२४१२० मिच्छामिदुक्कडना भेद थाय. एम बीजाए पण ए रीते सर्व जीवनी साथे क्षमतक्षामणा करवां इतिरहस्यम्

५२ प्रश्न—छद्मस्थगुरु, केवल ज्ञानवाळी साध्वीने वांदे के केम ?

उत्तर—श्रीअन्यकासुताचार्ये, पोतानी पासे वैयावच्च निमित्ते रहेनारी पुष्पचूला महासतीसाध्वीने केवलज्ञाननी उत्पत्ति जाणे छते पण वंदना करी नथी एम श्रीआवश्यकसूत्रबृहद्वृत्तिपरथी समजाय छे. माटे छद्मस्थगुरु केवलज्ञानवाळी साध्वीने न वांदे.

५३ प्रश्न—नेत्रासनप्रमुखआसनपर मुनिओ बेसे ?

उत्तर—धर्मकथादिनिमित्ते राजकुळादिस्थाने प्रतिलेखनादिपूर्वक बेशे. एम श्रीदशवैकालिकटीकापरथी समजी शकाय छे. इत्यादि.

५४ प्रश्न—स्नातकमुनिना जे पांच भेद कह्या छे ते शुं संभवे ?

उत्तर—श्रीभगवतीसूत्रमां स्नातकमुनिना जे पांच भेद कह्या छे ते शब्दनयनी अपेक्षाए कह्या छे. दृष्टान्ततरीके शक्र, पुरंदर, शब्दनी पेठे, माटे ए ठेकाणे संदेह करवा जेवुं नथी. हा, जो अवस्थाभेदेभेदपाड्याहोयतो संदेह करवा जेवुं रहे. पण तेम तो भेद पाडेला छेज नहीं अने ते संबंधी खुलासो त्यांज तेनी टीकामां करेलो छे. ते नीचे प्रमाणे.

तद्यथा.

"इहचावस्थाभेदेनभेदोनकेनचिद्वृत्तिकृतेहान्यत्रचग्रन्थेव्याख्यातस्ततश्चैवंसंभावयामःशब्दनयापेक्षयैवतेषांभेदोभावनीयःशक्रपुरंदरवदिति"

५५ प्रश्न—श्रीस्थूलभद्रजीनी पांचमी बेननुं नाम शुं ?

उत्तर—सेणा, अथवा एणा, एवुं नाम छे.

यदुक्तंश्रीकल्पकिरणावल्याम्.

"सेणावेणेत्यादौक्वचित्सेणास्थानएणेत्यपि"

५६ प्रश्न—श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता श्रीश्यामाचार्यजी श्रीसुधर्मास्वामिथी केटलामे पाटे छे ?

उत्तर—२३ मे पाटे छे. एम श्रीपन्नवणासूत्रमां कहेलुं छे.

तथाचतत्सूत्रम्.

" वायगवरवंसाओतेवीसइमेणधीरपुरिसेण ॥
दुद्धरधरेणमुणिणापुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं ॥ १ ॥ "

एतत्सूत्रवृत्त्येकदेशोयथा.

" त्रयोविंशतितमेनतथाचसुधर्मस्वामिनआरभ्य-
भगवानार्यश्यामस्त्रयोविंशतितमएव "

५७ प्रश्न—श्रीश्यामाचार्यजी कया महाराजाना शिष्य जाणवा ?

उत्तर—श्रीनन्दीसूत्र तथा तपगच्छपट्टावलीवृत्तिना अनुसारे तत्त्वार्थादिग्रन्थोना कर्त्ता श्रीउमास्वातिवाचकमहाराजनाशिष्य जाणवा अनेते श्रीवीरभगवानथी ३७६ वर्षे स्वर्गे गयाछे.

यदुक्तं श्रीनन्दीसूत्रे

" एलावच्चसगोत्तंवंदामिमहागिरिसुहत्थिंच ॥
तत्तोकोसियगोत्तंबहुलस्सबलिस्सहं वंदे ॥ १ ॥ "
हारियगोत्तंसाइंचवंदिमोहारियंचसामज्जं ॥
वंदेकोसियगोत्तंसंडिल्लंअज्जजीयधरं ॥ २ ॥ "

विस्तरस्तुतट्टीकायाम्.

यदुक्तंश्रीतपगच्छपट्टावलीवृत्तौ.

" श्रीआर्यमहागिरिशिष्यौबहुलबलिस्सहौयमलभ्रातरौ

तत्रबलिस्सहस्यशिष्यस्तत्त्वार्थादिग्रन्थकृत्स्वातिस्तस्यापिशिष्यः श्यामार्यः प्रज्ञापनाकृत्सचवीराच्छतत्रयाधिकषट्सप्ततिवर्षैःस्वर्गभाक्तच्छिष्योपिजीतमर्यादाकृत्साण्डिल्पः " इति.

५८ प्रश्न–श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणपूर्वे कोणहता ?

उत्तर—श्रीमन्महावीरस्वामिनुं संहरण करनार. सौधर्मेन्द्रना पदातिकटकना अधिपति, " हरिणैगमेषी " एवेनामे देव हता, ते त्यांथीचवी श्रीवीरशासनमां श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणथया, के जेमणे श्रीमहावीरनिर्वाणथी ९८० वर्षे पाठान्तरे ९९३ वर्षे पुस्वकारूढ कर्यो. ते संबंधी विस्तार वात श्रीकल्पकिरणावली, श्रीकल्पसुबोद्धिका, वीगेरे टीकाओमां छे.

५९ प्रश्न–अजीवसंयम तथा अजीवअसंयम तेशुं ?

उत्तर—अजीवकाय एवां जेपुस्तकादिकोना ग्रहणपरिभोगनी निवृत्तितेअजीवसंयम अने तेनाथीविपरित ते अजीवअसंयम एम श्रीठाणांगसूत्रनी टीकामां कहेलुंछे. अने श्रीप्रवचनसारोद्धारनी टीकामां तो अजीवरूपपुस्तकादिकोने पण दुःषमाकालदोषथी तथाविधप्रज्ञा, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम, अनेबल, इत्यादि वडे हीन आजकालना शिष्यजनोना अनुग्रहार्थे प्रतिलेखनाप्रमार्जनपूर्वकयतनावडे धारण करवाथी अजीव संयम कह्योछे.

६० प्रश्न–अजीवरूपपुस्तकादिकना ग्रहण परिभोगथी आरंभ, समारंभादिदोषो लागता हशे ?

उत्तर—हा, कारणके अजीवस्वरूपपुस्तकादिकने विषे जे आश्रित जीवो होय, ते जीवो आश्रि आरंभसमारंभादिदोषो लागे छे. विशेषार्थिओए श्रीठाणांग सूत्रनी टीका जोवी.

६१ प्रश्न—पुस्तकादिक तो धर्मना उपकरण छे, एम कहीने ममत्वादि भावथी जेओ पुस्तकादिकोनो संग्रह परिभोग करे छे, तेओने परिग्रहदोष लागतो हशे के केम ?

उत्तर—हा, धर्मोपकरणना छलथी ममत्वादि भावे पुस्तकादिकोने जेओ ग्रहण करनारा छे, तेवाओने उद्देसी परिग्रह वीगेरे घणा दोषो श्रीमुनिसुंदरसूरिकृतश्रीअध्यात्मकल्पद्रुमग्रन्थमां कहेला छे. ते वांचवाथी बरोबर समजवामां आवशे.

६२ प्रश्न—मनना दंभनो त्याग कर्यो नथी ने तप, संयम, केशलोचादिधर्मकर्मकरे तो ते फले ?

उत्तर—ना, ते न फले. एवुं महोपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृत श्रीअध्यात्मसारग्रन्थमां कथन छे.

तथाचतद्ग्रन्थः

" किंव्रतेनतपोभिर्वादंभश्चेन्ननिराकृतः ॥
किमादर्शेनकिंदीपैर्यद्यान्ध्यंनदृशोर्गतम् ॥ १ ॥ "
केशलोचधराशय्याभिक्षाब्रह्मव्रतादिकम् ॥
दंभेनदुष्यतेसर्वंत्रासेनेवमहामणिः ॥ २ ॥
सुत्यजंरसलांपट्यंसुत्यजंदेहभूषणम् ॥
सुत्यजाःकामभोगाद्यादुस्त्यजंदंभसेवनम् ॥ ३ ॥
इत्यादि "

अत्र दृष्टान्त तरीके लक्ष्मणा साध्वीए घणो तप कर्यो पण ते तप फळीभूत न थयो शाथी के तेना मननो दंभ गयो नहतो, वळी दंभी माणस पोताना आत्मानी प्रशंसा करतो थको परनी निंदामां तत्पर थइ महा कठिन कर्मने बांधे छे. अने बीजा भोळा लोकोने पोताने विषे ममत्वबुद्धि बंधावी मतांधकरी अनेकदुःखमयभवरूपसमुद्रमां गोथां खवरावे छे. माटे आत्मार्थिजीवोए अनर्थनिबंधनदंभनो तेमज बाह्यत्यागी दंभीमाणसनो पण त्याग करवो. अत्र कहेवानो एज तात्पर्यार्थ छे.

६३ प्रश्न–अनुक्रमे शुद्ध एवी अध्यात्मयोगक्रिया केटले गुणठाणे होय ?

उत्तर—चोथा गुणठाणाथी मांडी यावत् चौदमा गुणठाणा सुधी होय.

तथोक्तंश्रीअध्यात्मसारग्रन्थे.

“ अपुनर्बंधकाद्यावद्गुणस्थानंचतुर्द्दशम् ॥
क्रमशुद्धिमतीतावत्क्रियाध्यात्ममयीमता ॥१॥ ”

६४ प्रश्न–कया जीवनी क्रिया अध्यात्मगुणवैरिणी जाणवी ?

उत्तर—भवाभिनंदी जीवनी.

यदुक्तंश्रीअध्यात्मसारग्रन्थे.

“ आहारोपधिपूजर्द्धिगौरवप्रतिबंधतः ॥
भवाभिनंदीयांकुर्यात्क्रियांसाध्यात्मवैरिणी ॥१॥ ”

६५ प्रश्न–भवाभिनंदीजीव केवो होय ?

उत्तर—" क्षुद्रोलोभरतिर्दीनोमत्सरीभयवाञ्शठः ॥ अ-
ज्ञोभवाभिनन्दीस्यान्निष्फलारंभसंगतः ॥ १ ॥ "

इतिश्रीअध्यात्मसारश्लोकोक्तलक्षणवालो भवाभिनदीजीव जाणवो.

६६ प्रश्न–कया जीवनी क्रिया अध्यात्मगुणने वृद्धिकरनारी जाणवी?

उत्तर—" शान्तोदान्तःसदागुप्तोमोक्षार्थीविश्ववत्सलः ॥
निर्दंभांयांक्रियांकुर्यात्साध्यात्मगुणवृद्धये ॥ १ ॥"

इतिश्रीअध्यात्मसारश्लोकोक्तलक्षणवाळाजीवनी क्रिया अध्यात्मगुणने वधारनारी छे इत्यादि.

६८ प्रश्न–समूर्छिमतिर्यंश्चपञ्चेन्द्रियजीवोने छेल्लुं एक संहनन अने संस्थान होय के केम ?

उत्तर—श्रीजीवाभिगमसूत्रना अभिप्राये करीने एक छेल्लुं संहनन अने संस्थान जाणवुं अने छठा कर्मग्रन्थना अभिप्राये करीने तो छए संहनन अने संस्थान जाणवां.

६८ प्रश्न–देवताओने दांत तथा केश होय ?

उत्तर—श्रीउववाइयसूत्रमां देवताओने दान्त तथा केश कहेला छे.

तथाचतत्पाठः

" पंडुरससिसकलविमलणिम्मलसंखगोखीरफेणदग-
रयमुणालियाधवलदंतसेढी ॥ तथाअंजणघणकसिणरुय-
गरमणीयणिद्धकेसा " इति.

अने श्री संग्रहणी सूत्रमां नथी कह्या.

तथाचतत्पाठः

" केसट्ठिमंसनहरोमरहिया " इति.

अने वली श्रीजीवाभिगमसूत्रनी वृत्तिमां तो देवताओने दांत तथा केश होय, पण ते वैक्रिय रूपे होय. स्वाभाविक रूपे न होय. शाथी के तेमनुं शरीर वैक्रिय छे. एम कहेलुं छे.

तथाचतत्सूत्रवृत्तिपाठः

"दन्ताःकेशाश्चामीषां वैक्रियादृष्टव्यानस्वाभाविका-वैक्रियशरीरत्वादिति "

६९ प्रश्न–मेरूपर्वतना चोथा पण्डकवनमां व्यन्तरना आवासो हशे ?

उत्तर—हा, त्यां पण तेमना आवासो छे.

यदुक्तंश्रीप्रज्ञापनावृत्तौप्रथमपदेव्यन्तरशब्दव्युत्पत्त्यवसरे.

" आवासाःत्रिष्वपिलोकेषुततऊर्ध्वलोकेपण्डकवनादौ "

७० प्रश्न–अनुत्तरविमानना देवो श्रीशत्रुञ्जयतीर्थनी त्रिकरणयोगथी सेवाभक्तिकरे ?

उत्तर—पोताना विमानमां रह्या थका मनेकरी भावभक्तिकरे.

यदुक्तं श्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्ये.

" ग्रैवेयकानुत्तरस्थामनसात्रिदिवौकसः ॥
सेवन्तेयंसदातीर्थराजंतस्मैनमोनमः ॥ १ ॥ "

वली ते देवो श्रीतीर्थङ्करदेवना पांच कल्याणक अवसरे पण अत्रेनआवे त्यां रह्या भावभक्ति करे इत्यादि.

७१ प्रश्न—देवताओने पांच पर्याप्ति कही. तेनुंशुं कारण ?

उत्तर—भाषापर्याप्ति अने मनःपर्याप्तिना समाप्तिकालान्तरने प्राये शेषपर्याप्तिना समाप्तिकालान्तरनी अपेक्षाये अल्पपणुं छे तेथी ए बे पर्याप्तिने एकपणे गणी छे ते कारणथी देवताओने पांच पर्याप्ति कहीछे. एम श्रीराजप्रश्नीय (रायप्पसेणीय) सूत्रवृत्तिमां आचार्यश्रीमलयगिरिजी महाराज फरमावेछे.

तद्यथा.

" इहभाषामनःपर्याप्तयोःसमाप्तिकालान्तरस्यप्रायः शेषपर्याप्तिकालान्तरापेक्षयास्तोकत्वादेकत्वेनविवक्षणमितिपंचविहाएपज्जत्तिएपज्जत्तिभावंगच्छइइत्युक्तमिति "

७२ प्रश्न—स्वर्गमां वनखण्ड वृक्ष पुष्प फलादिक जे कह्युंछे ते पृथ्वी परिणामरूपे के वनस्पतिपरिणामरूपे समजवुं ?

उत्तर—बन्ने परिणामरूपे समजवुं.

७३ प्रश्न—स्वर्गमां पुष्करणी (वाव) वीगेरे स्थलेमच्छादिक, जे, कह्याछे, ते जीवपरिणामरूपे छे, के ते आकारमात्रधरनाराओ छे ?

उत्तर—पृथ्वीपरिणामरूपे आकारमात्रधरनाराओछे एम समजायछे शामाटे के देवलोकनी वावडीओमां मच्छादि जलचरजीवो कह्या नथी.

यतः

" सुरलोअवाविमज्झेमच्छाइनत्थिजलयराजीवा "

इतिवचनात्.

७४ प्रश्न–देव, देवीसाथे मूलशरीरे करी, के उत्तर वैक्रियशरीरेकरी भोगकर्म करे ?

उत्तर—जेवी पोतानी इच्छा ते प्रमाणे करे अर्थात् मूलशरीरे पण भोगकर्मकरे अने उत्तरवैक्रियशरीरे पण भोगकर्म करे एम श्रीभगवत्यादिजैनशास्त्रोमां कह्युछे.

तद्यथा.

" यथेच्छयोभयथापिभोगोभवति " इतिश्रीभगवत्यादिजैनशास्त्रेषु.

७५ प्रश्न–विजयराजधानीनो कील्लो केटलो उंचो कह्यो छे ?

उत्तर—श्रीजीवाभिगमसूत्रमां ३७॥ योजन उंचो कह्यो छे. अने श्रीसमवायांगसूत्रमां ३७ योजन उंचो कह्यो छे.

यदुक्तंश्रीजीवाभिगमसूत्रे.

" सेपागारेसत्ततीसंजोयणाइंअद्धजोयणंचउड्ढंउच्चत्तेणंप० " इति

यदुक्तंश्रीसमवायाङ्गसूत्रे.

" सव्वासुणंविजयवेजयंतजयंतअपराजियासुरायहाणीसुपागारासत्ततीसंसत्ततीसंजोयणाइंउड्ढंउच्चतेणंप० "

अल्पपणानी विवक्षा नही करी ३७ योजन कह्यां हशे एम संभवे छे तत्त्वन्तुतत्त्वविदोजानन्ति.

७६ प्रश्न–अणपन्नीय, पणपन्नीय, आदि आठ व्यन्तरविशेषनिकाय क्यां वसे छे ?

उत्तर—रत्नप्रभापृथ्वीउपरना जे एकहजार योजन छे तेना उपरथी तेमज नीचेथी सो सो योजन दूर करीने मध्ये आठसो योजनमां जेम पिसाचादि आठ नि० वसे छे तेम ते पण अणपन्नीय, पणपन्नीय, आदि आठ निकाय वसे छे एम श्रीपन्नवणासूत्रमां कहेलुं छे.

तथाचतत्सूत्रम्.

" कहिणंभंतेवाणमंतराणंदेवाणंपज्जत्तापज्जत्ताणंठाणापण्णत्ताकहिणंभंतेवाणमंतरादेवापरिवसंतिगोयमाइमीसेरयणप्पभाएपुढवीएरयणमयस्सकंडस्सजोयणसहस्सबाहल्लस्सउवरिएगंजोयणसयंउग्गाहित्ताहिठाविएगंजोयणसयंवज्जित्तामझेअट्ठसुजोयणसएसुएथ्थणंवाणमंतराणंदेवाणंतिरियमसंखेज्जाओभोमेज्जाओणगरवाससयसहस्साहवंतीतिमरक्खायंतेणंइत्यादि ॥ तथ्थणंबहवेवाणमंतरादेवापरिवसंतितंजहापिसायभूयाजरकायावत्अणपन्नीयपन्नीयइत्यादि "

अने श्रीसंग्रहणीसूत्रमां तो रत्नप्रभा पृथ्वी उपरना प्रथम शतयोजन मध्ये अण० पण० आदि आठनि० वसेछे एम कहेलुं छे.

तथाचतत्पाठः

" इयपढमजोयणसयेरयणाएअठ्ठवंतराअवरे ॥
तेसुइहसोलसिंदारुयगअहोदाहिणुत्तरओ ॥ १ ॥ "

वली श्रीयोगशास्त्रवृत्तिमां तेमज श्रीअजितनाथचरित्रमांतो रत्नप्रभा पृथ्वी उपरना जे सोयोजनछे तेना उपरथी तेमज नीचेथी दशदश योजन मुकीने एशी योजन मध्ये अण० पण० आदि आठनि० वसेछे एम कह्युंछे.

यदुक्तंश्रीयोगशास्त्रवृत्तौ.

" रत्नप्रभायामेवप्रथमशतकस्याधउपरिचदशदश-योजनानिमुक्त्वामध्येशीतौयोजनेषुअणपन्नीयपणपन्नी-य० इति

यदुक्तंश्रीअजितनाथचरित्रे

" रत्नप्रभायाःप्रथमेयोजनानांशतेतथा ॥
योजनानिपरित्यज्यदशाधोदशचोपरि ॥ १ ॥
संत्यशीतौयोजनेषुव्यन्तराष्टनिकायकाः ॥
तत्राप्रज्ञप्तिकःपञ्चप्रज्ञप्तिर्रूषिवादितः ॥ २ ॥ इत्यादि "

अत्रापितत्त्वंतत्त्वविदोजानन्ति

७७ प्रश्न–एकावतारी देवोने छ मास आयुष्य बाकी रहे छते च्यवन चिन्हो उपजे ?

उत्तर—ना, न उपजे. किन्तु उलटो सातोदय जाणवो. जूओ श्रीपरिशिष्टपर्वणिग्रन्थमां तथा श्रीसूयगडांगसूत्रवृत्तिमां शुं लख्युं छे.

तथाहिश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितश्रीपरिशिष्टपर्वणि-ग्रन्थे.

" [१]राजन्नेकावताराणामन्तकालेपिनाकिनाम् ॥

---

१ श्रेणिकनृपंप्रति श्रीवीरवाक्यमिति.

तेजःक्षयादिच्यवनलिङ्गान्याविर्भवन्तिन ॥ १ ॥ ”

तथाश्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रवृत्तावपि.

“विपच्यमानतीर्थकरनाम्नोदेवस्यच्यवनकालेषएमासयावदत्यन्तंसातोदयएवेत्यादि ”

विशेषाधिकार श्रीलोकप्रकाश कल्पदीपिकादिथीजाणवो.

७८ प्रश्न—लवसप्तमदेवता कया समजवा ?

उत्तर—सर्वार्थसिद्धविमानना देवता समजवा, तेओ सात लवप्रमाण मनुष्यायुष्क ओछुंहोवाथी शीवमार्गना विसामा तरीके त्यांउत्पन्न थायछे. जो सातलवप्रमाणमनुष्यायुष्क वधारे होत तो छठतपकर्मथी जेटलुं कर्म क्षयथाय तेटलुं शेषरहेलुं कर्म तेटली वखतमां क्षयकरी मोक्षे जात इतितात्पर्यार्थः विशेष वात श्रीभगवतीसूत्रथी समजवी.

७९ प्रश्न—चोवीश प्रभुना चोवीश लंछन कहो ?

उत्तर—श्रीऋषभादि चोवीशजिनना नीचे लख्या मुजब अनुक्रमे चोवीश लंछन जाणवां.

१ वृषभ.	९ मगरमच्छ.	१७ बकरो.
२ हस्ती.	१० श्रीवत्स.	१८ नंद्यावर्त्त.
३ घोडो.	११ गेंडो.	१९ कलश.
४ वानर.	१२ महिष.	२० कूर्म.
५ क्रौञ्चपक्षी.	१३ वराह.	२१ नीलोत्पलकमल.
६ पद्मकमल.	१४ सीचाणो.	२२ शंख.
७ स्वस्तिक.	१५ वज्र.	२३ सर्प्प.
८ चन्द्र.	१६ हरिण.	२४ सिंह.

यदुक्तंश्रीअभिधानचिन्तामणौ.

" वृषोगजोश्वःप्लवगःक्रौञ्चोब्जंस्वस्तिकःशशी ॥
मकरःश्रीवत्सःखङ्गीमहिषःशूकरस्तथा ॥ १ ॥
श्येनोवज्रंमृगःछागोनंद्यावर्त्तोघटोपिच ॥
कूर्मोनीलोत्पलंशंखःफणीसिंहोर्हतांध्वजाः ॥ २ ॥ "

उक्त चोविश लंछन जाणवाथी चोवीश प्रभुजीनी प्रतिमाओने ओलखी शकायछे अत्र ए रहस्यार्थ छे.

८० प्रश्न–श्रीऋषभादि चोवीश जिनना वर्ण कहो ?

उत्तर—श्रीपद्मप्रभ, वासुपूज्य, ए बे तीर्थङ्कर रक्तवर्णा. श्रीचन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, ए बे तीर्थङ्कर उज्वलवर्णा. श्रीमुनिसुव्रत, नेमिनाथ, ए बे तीर्थङ्कर कृष्णवर्णा. श्रीमल्लिनाथ, पार्श्वनाथ, ए बे तीर्थङ्कर नीलवर्णा. अने ते सीवायना १६ तीर्थङ्कर काञ्चनवर्णा (पीतवर्णा) जाणवा.

यदुक्तंश्रीअभिधानचिन्तामणौ.

" रक्तौचपद्मप्रभवासुपूज्यौशुक्लौचचन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ ॥
कृष्णौपुनर्नेमिमुनी[1]विनीलौश्रीमल्लिपार्श्वौकनकत्विषोन्ये॥१॥"

८१ प्रश्न–श्रीऋषभादि चोवीश जिन कया कुळमां उत्पन्न थया ?

उत्तर—बावीश तीर्थङ्कर श्रीइक्ष्वाकु कुळमां उत्पन्न थया. अने श्रीमुनिसुव्रत, नेमिनाथ, ए बे तीर्थङ्कर हरिवंशकुळमां उत्पन्न थया.

---

१ नेमिमुनिसुव्रतौ.

यदुक्तंश्रीअभिधानचिन्तामणौ.

" इक्ष्वाकुकुलसंभूतास्याद्द्वाविंशतिरर्हताम् ॥
मुनिसुव्रतनेमीतुहरिवंशसमुद्भवौ ॥ १ ॥ "

८२ प्रश्न–परमार्थ जाण्या विना अर्थ कहे ते केवो जाणवो ?

उत्तर—एक गामडीया मूर्ख पुरुषनी पेठे हसवा योग्य जाणवो तेनी कथा नीचे लख्या प्रमाणे जाणवी.

कोइक गामने विषे कोइक मूर्खहतो ते दैवयोगे समस्त रागरागिणीनी जाण एवी कन्यापरण्यो. पछी ते स्त्रीने आणु करवागयो. त्यांसासरे ते मूर्खना साळा हता, तेमणे विचारकर्यो के, आपणे प्रभाते पंचम राग करीशुं ने तेने पूछीशुं. ते विचार तेनी बहेने सांभल्यो. तेणीएं भर्त्तारिने कह्युके, तमने माराभाइओ रागनी वात पूछे त्यारे कहेजोके ए पंचम रागथयो पछी प्रभाते साळाए तेमज पूछ्युं, त्यारे मूर्खे कह्युं के ए पंचम राग छे. ते सांभळी साळाए मनमां विचार्युं के, एतो शृङ्ग पूछ विनानो पशु छे. पण कांइक घरनो भेद मळ्यो जणाय छे एम चिंतवी नगर बहार जइने चारे काने विचार कर्यो के, आपणे प्रातःकाळे धन्याश्री राग करवो.

यतः

" षट्कर्णोभिद्यतेमंत्रश्चतुष्कर्णोनभिद्यते ॥
द्विकर्णस्यतुमंत्रस्यब्रह्माप्यन्तंनगच्छति ॥ १ ॥ "

एम करी प्रातःकाळे धन्याश्री राग करीने पूछयुं के, ए कयो राग ? ते वारे मूर्ख बोल्यो ए छठो राग. ते सांभळी साळा ताळी देइने मांहोमांही हसवा लाग्या. मूर्ख बोल्यो. रे मूर्खो हसोछो शुं ? काले तमे पंचमराग कर्यो हतो. माटे आज छठोज राग युक्त छे. जे कारणे पांच पछी छ एम तो बालगोपाळ पण जाणे छे ते सांभळी वळी साळा घणुंज हसवा लाग्या त्यारे तेनी स्त्रीए जणाववा माटे धान्यनी तोल्लडी देखाडी. ते देखी मूर्ख बोल्यो. जाण्युं जाण्युं ए तो लुड राग छे. त्यारे वळी अत्यन्त हांसी योग्य थयो माटे परमार्थ जाण्या विना अर्थ करे ते तेना जेवो जाणवो इति रहस्यम्.

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्री मद्रूपविजयगणिव-र्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्री कस्तूरविजय गणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणिशिष्यपं० श्रीशुभवि-जयगणिशिष्यमु० श्रीलक्ष्मीविजयेनविरचितेश्रीप्रश्नो-त्तरप्रदीपेतृतीयःप्रकाशः

अथ चतुर्थःप्रकाशः

ॐनमःश्रीसर्वज्ञजिनंनम्यगुरुञ्चगणधारिणम् ॥
ग्रन्थस्यास्यचतुर्थञ्चप्रकाशंप्रकरोम्यहम् ॥ १ ॥

१ प्रश्न–सर्व संवररूप चारित्रकए गुणठाणे होय ?

उत्तर—१४ मे अयोगि केवलि गुणठाणे होय.

२ प्रश्न–तामलि तापसने क्यारे समकितनी प्राप्ति थइ ?

उत्तर—तामलि तापस, अन्तकाळ वखते साधुओना दर्शनथी समकित पाम्यो छे. एवो प्रघोष श्रीजिनेश्वरसूरिकृत कथा रत्नकोशमां छे. अने श्रीभगवतीसूत्रमां तो इशानेंद्र थइ पछीथी समकित पाम्यो एम कह्युं छे.

३ प्रश्न–विग्रहगतिने पामेलो कोइ जीव अग्निकाय मध्येथी जतो थको दझाय के केम ?

उत्तर—न दझाय. शाथी के ते कार्मण शरीरवाळो छे, अने तेथी ते सूक्ष्म छे, माटे त्यां अग्नि वीगेरे शस्त्र न संक्रमे.

यदुक्तंश्रीभगवतीवृत्तौ.

" नध्मायतेयतोविग्रहगतिसमापन्नोहिकार्मणशरीरत्वेनसूक्ष्मःसूक्ष्मत्वाच्चतत्रागन्यादिकंशस्त्रंनक्रामति "

४ प्रश्न–वैक्रिय शरीरवाळो जीव अग्नि मध्येथी जतो थको दझाय ?

उत्तर—वैक्रिय शरीरना सूक्ष्मपणाथी तेमज तेनी गतिना शीघ्रपणाथी ते न दझाय.

यदुक्तंश्रीभगवतीवृत्तौ.

" नध्मायतेसूक्ष्मत्वाद्वैक्रियशरीरस्यशीघ्रत्वाच्चतद्‌गतेः "

५ प्रश्न–पृथ्वी वीगेरे पांच स्थावरकायने स्वामीओ हशे ?

उत्तर—जेम दिशाओने इन्द्र, अग्नि, आदिक नक्षत्रोने अश्वि, यम, दहन, आदिक दक्षिण तथा उत्तर लोकार्द्धने शक्र, इशान, स्वामिओ कह्या छे. तेम पांच स्थावरकायने पण नीचे लख्या मुजब अनुक्रमे पांच स्वामिओ श्रीठांणांगजीमां कह्या छे. इन्द्र, ब्रह्म, शिल्प, संमति, अने प्राजापत्य,

तत्सूत्रपाठोयथा.

" पंचथावरकायाहिवईप०तं०इंदेथावरकायाहिवई---जावपयावएथावरकायाहिवई " विस्तरस्तट्टिकायाम्.

६ प्रश्न–जेम वादरपृथ्व्यादि पांच स्थावरकायने विषे प्रत्येके एकपर्याप्तकजीवनिश्राए बीजा असंख्याता अपर्याप्तकजीवो कह्याछे तेम सूक्ष्म पांच स्थावरकायने विषे एज रीते के केम ?

उत्तर—सूक्ष्म पांच स्थावरकायने विषे तो प्रत्येके एकअपर्याप्तक-निश्राए पर्याप्तक जीवो कह्या छे. अने ते पण श्रीपन्न-वणासूत्र वीगेरेना अनुसारे संख्याता जाणवा अने श्रीआ-चाराङ्गसूत्र वृहदवृत्तिने अनुसारे तो असंख्याता जाणवा.

तथाचतत्पाठः

" अपर्याप्तकनिश्रयापर्याप्तकाःसमुत्पद्यन्तेतत्रचै---कोपर्याप्तकस्तत्रनियमादसंख्येयाःपर्याप्तकाःस्युः "

इत्याचाराङ्गवृहद्वृत्तौ

७ प्रश्न—विकलेन्द्रिय जीवो मनुष्यमां आव्या थका मनःपर्याय ज्ञानने पामे ?

उत्तर—केटलाक पामे. पण अन्तक्रिया प्रत्ये न करे आवी रीते श्रीजैनागममां कह्युं छे. आ ठेकाणे तात्पर्यार्थ ए छे के ऋजुमतिमनःपर्यायज्ञानने पामे पण विपुलमतिमनःपर्यायज्ञानने न पामे शाथी के विपुलमतिमनःपर्यायज्ञानवाळाने तद्भव-सिद्धि कही छे.

८ प्रश्न—जीवविचार प्रकरणमां जे "ग्राहा" जीवो कह्या छे ते स्वरूपे केवा होय ?

उत्तर—सोयना दोरा जेवा पातळा तेमज लांबा होय छे के जो ते जीवो पाणी मध्ये हाथीना पगे वळगे तो हाथीने पण पाणीथी बहार नीकळवुं मुस्केल थइ पडे. लोकमां ते जीवो ने "तांतूआ" कहे छे.

९ प्रश्न श्रीप्रज्ञापनासूत्रमां प्रथमपदविषे "शिशुमारा" जीवो कह्या छे ते कया ?

उत्तर—ते जीवो जळना काचबा जाणवा. अथवा पाडा जेवा मोटा जाणवा.

यदुक्तंजीवविचारवृत्तौ.

"शिशुमाराजलकूर्मायदाहुःश्रीहेमचन्द्रपादाःशिशुमारस्त्वम्बुकूर्मः॥ यद्वापानीयमध्येमहिषसदृशाभवन्तितेशिशुमारामहाकायाः"

१० प्रश्न—कुकडा तथा मोरना मस्तक मध्ये रहेली शिखा सचित्त छे, अचित्त छे, के मिश्र छे ?

उत्तर–कुकडानी चूडा सचित्त छे. मोरनी चूडा मिश्र छे. एम श्री आचाराङ्गसूत्रवृत्ति मध्ये कहेलुं छे.

तथाचतत्सूत्रवृत्तिः

" सचित्ताचूडाकुक्कुटस्यमिश्राचूडामयूरस्य "

११ प्रश्न–अग्नि विषे उंदरनी उत्पत्ति हशे ?

उत्तर–हा, इटना नींभाडा वीगेरे अग्निमां उंदरो उत्पन्न थाय छे एम श्रीअनुयोगद्वारवृत्तिमां कह्युं छे. वळी केटलाक जीवो सचित्त अग्नि प्रमुखमां उंदर प्रमुखपणे उपजे छे एम श्रीसूयगडांगसूत्रना बीजा श्रुतस्कंधना त्रीजा अध्ययननी वृत्तिमां कह्युं छे.

यदुक्तंश्रीअनुयोगद्वारवृत्तौ.

" इष्टकापाकाद्यग्निर्मूषिकावासइत्युच्यतेतत्रह्यग्नौकिल-मूषिकाःसमूर्च्छन्तीति "

यदुक्तंश्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रवृत्तौ.

" अपरेतुजीवाःसचित्तेतेजःकायादौमूषिकादित्वे-नोत्पद्यन्ते " इति

१२ उंदरना लोमनुं रत्नकंबलवस्त्र बने छे ते वात खरी हशे ?

उत्तर–हा, ते वात खरी छे. यतः " मूषकरोमजंवस्त्रम् " इतिश्रीस्थानाङ्गसूत्रपञ्चमस्थानवृत्तिवचनात्. अने वळी ए रत्नकंबल वस्त्र ज्यारे मेलुं थाय छे त्यारे अग्निमां नाखवाथी ते शुद्ध थाय छे कारण के अग्निमां उत्पन्न थएल उंदरोना लोमनुं ते वस्त्र बनेलुं छे इत्यादि एक शास्त्रलेख छे.

१३ प्रश्न—नपुंसकमासमां जे उत्तम वनस्पति छे ते फळे के केम ?

उत्तर—ना, नफले. किन्तु नपुंसक मासने तजीने बीजे मासेज फले एम श्रीआवश्यकनिर्युक्तिमां श्रीभद्रबाहुस्वामीजी कहेछे. यतः "जइफुल्लाकणिआरडा॰" इत्यादि गाथा वचनात् अत्ररहस्यार्थ एछेके, अचेतना एवी वनस्पति ते पण जो नपुंसक मासने तजी बीजा मासने गणतीमां लेछे, तो पछी पण्डितोए ते प्रमाणे वरतवुं तेमां शी नवाई छे. ए विषय, वधारे विवादभर व्याख्यान वालोछे. अने ते श्रीकल्पकिरणावल्यादिश्रीजैनग्रन्थोमांछे. ते जोवाथी बरोबर समजाशे.

१४ प्रश्न—चूडेली (जीवविशेषः) द्वीन्द्रियजीवछे के त्रीन्द्रियजीवछे ?

उत्तर—श्रीआराधनपताकामां त्रीन्द्रियजीवगणेलो छे. अने जीवविचारमां द्वीन्द्रियजीवगणेलो छे. तत्त्वनीवात केवली जाणे.

१५ प्रश्न—अतिस्निग्धपणाने लीधे त्रीजेआरे पण बादरअग्निनो अभाव कह्योछे तो श्रीऋषभदेवजीना समयमां तेनी उत्पत्ति शाथी कही ?

उत्तर—त्रीजा आराना प्रान्तभागमां श्रीऋषभदेवजीना समयमां अग्निनी उत्पत्ति कहीछे ते ठेकाणे कंइ बाधा आवती नथी शाथी के त्यां अल्पकालनी विवक्षा करीनथी इति तत्त्वम्.

१६ प्रश्न—एम संभलायछे के कोइकना उदरमां "गृहेकोकिला" उत्पन्न थायछे तेनुं शुंकारण ?

---

१ अधिकमासमां.

२ भुजपरिसर्प्पविशेषः लोकेतु "गरोली" इतिनाम्नाप्रसिद्धा.

उत्तर—उदरमां गृहगोधिका उत्पत्तिनुं कारण श्रीनिशीथचूर्णिमां कहेलुंछे. ते नीचे प्रमाणे-

यदुक्तंश्रीनिशीथचूर्णौ.

" गिहकोइलअबयवसंमिस्सेणभुत्तेणपोटेकिलगिहकोइलासमुच्छंतित्ति " सुलभार्थः

१७ प्रश्न-मोतीने पृथ्वीकायपणुं संभवे ?

उत्तर—हा, नानाविधत्रसस्थावरना शरीरोमां उत्पत्तिनो संभव छतां पण मोतीने पृथ्वीकायपणुंज संभवछे. एम श्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रनी टीका परथी सिद्धथायछे अने ते जोवाथी केटलीक वधारे वात समजाय तेमछे.

१८ प्रश्न-सर्प्पनुं "पवनभक्षी" नामछे ते शुं पवनने भक्षण करतो हशे ?

उत्तर—हा, पवनने पण भक्षण करेछे. शाथीके तेनो जातिप्रत्यय ते आहारछे. यतः "सर्प्पाः पिबन्ति पवनं नच दुर्बलास्ते" इतिवचनात् वली श्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रना बीजा श्रुतस्कन्धना त्रीजा अध्ययननी टीकामां पण कह्युंछे के सर्प्पोवायुनो पण अहार करेछे अने तेओनी तेज जातिप्रत्यय आहार वडे करीने वृद्धि थायछे जेमके दुध प्रमुख वडे करीने इति

१९ प्रश्न-एक शृंगाटक फलमां (सींघोडामां) केटलाजीवो कह्याछे ?

उत्तर—बेजीवो कह्याछे. यतः " दोणियजीवाफलेभणिया " इति श्रीप्रज्ञापनावचनात्

२० प्रश्न-" कुट्टमित " शब्दस्त्रीओना केवा विलास भेदमां जोडायछे?

उत्तर-पुरुष ज्यारे व्यामोहथी स्त्रीओना केशने तथा स्तनने अने वळी अधर वीगेरे अंगोने यथोचित ग्रहण करेछे. त्यारे स्त्रीओने

घणो हर्षथायछे छतां पण संभ्रम पूर्वक मस्तकचेष्टाथी तेमज हस्तचेष्टाथी तेम नहीं करवा पुरुषने जणावेछे अर्थात् घणा हर्षथी उत्पन्न थएल सुखने ठेकाणे पण दुःखनो उपचार करेछे. तेवा एक स्त्रीओना विलास भेदने पण्डितो "कुट्टमित" कहेछे माटे " कुट्टमित " शब्द स्त्रीओना तेवाएक विलास भेदमां जोडायछे इति रहस्यार्थः

यतः

" केशस्तनाधरादीनांग्रहेहर्षेपिसंभ्रमात् ॥
प्राहुःकुट्टमितंनामशिरःकरविधुननम् ॥ १ ॥ "
इतिशब्दस्तोममहानिधिगतश्लोकवचनात्.

श्रीअभिधानचिन्तामणिकोषमां स्त्रीओना स्वाभाविक एवा लीला वीगेरे दश अलङ्कार कह्याछे तेमां आ " कुट्टमित " सातमो अलङ्कारछे तेनुं लक्षण तेना टीप्पनमां अर्द्धश्लोकवडे करीने बतावेलछे ते नीचे प्रमाणे.

" दुःखोपचारःसौख्येपिहर्षात्कुट्टमितंमतम् ॥ "

अर्थ उपर प्रमाणेज जाणवो.

२१ प्रश्न–स्त्रीओनामायाकपटथी पुरुष ठगाय के ?

उत्तर–हा, शंकर जेवा ठगायाछे शंकरनी कथा आ प्रमाणे एक दिवस महादेवजी पोतानी स्त्रीगङ्गा अने पार्वती पासे कहेवा लाग्या के हुं संसारमार्गथी उद्विग्न थइ गयेलोछुं माटे हवेथी महारे तमारी बेहुनी साथे कांइ कामनथी हुंतो हवे तपज करीश. एम कहीने शंकर कैलासपर्वतप्रत्ये गया, त्यां ते पर्वतनी गुफामां पद्मासन वाळीने ध्यानमां

बेठा, पार्वतीए जाण्युं जेशिवजी तपस्यामां बेठाछे. पण ते संसारथी उद्विग्नहुंछुं एम कहीगयाछे, माटे तेना तपनो हुं भंगकरुं, एम धारीने पोते भिल्लडीनो वेष धरीने त्यांजइ शंकर पासे रहीने नाना प्रकारना हाव भाव कटाक्ष वीगेरे विलास करवा मांड्या, तेवारे ध्यान मूकीने शिवजी ते भिल्लडीनी प्रार्थना करवा लाग्या. के हे भद्रे तुं महारी स्त्रीथा त्यारे भिल्लडी बोलीके महारो स्वामीतो भिल्लछे. ते पछवाडे चाल्यो आवेछे. माटे जो तेम हुं करुं तो ते भिल्ल मने अने तमने बेहुने शिक्षा आपे त्यारे शिवजी कहेवा लाग्या के हे सुंदरी में त्रिपुरासुर जेवा लक्ष दैत्योने मारीनाख्या तो तहारो स्वामी बीचारो शी गणतीमांछे त्यारे भिल्लडी कहेछे. के जो एमहोयतो तमो महारी पासे नागा थइ नाचो तो हुं तमारी स्त्रीथाउं त्यारे ते भिल्लडीने वश पडेला महादेवे नग्न थइ नाचवा मांडयुं ते जोइ पार्वतीने हास्य आव्युं त्यारे शिवजी समजी गया के आतो पार्वतीछे एमजाणीने लज्जित थइ मनमां खेदपाम्याजे अरे आ शुं थयुं हुं कहेतो हतो के हुं संसारथी विरक्त छुं अने मने माया कपटे करी एणीए छल्यो तेथी हुं परवश थइ गयो एम समजी लज्जा पाम्या. जुओ एम शंकर पण ठगाया माटे स्त्रीओना माया कपटमां न फसातां तेणीओनो त्याग करवो एज श्रेष्ट छे.

२२ प्रश्न–लौकिकशास्त्रमां चार आश्रम कह्या छे ते कया अने ते क्यारे कोने होय ?

उत्तर—१ पहेलो ब्रह्मचर्याश्रम–ते बाल्यावस्थामां वेदवेदाङ्गादिरूपविद्याभ्यासिओने जाणवो.

२ बीजो गृहस्थाश्रम–ते यौवनावस्थामां भोगाभिलाषिओने जाणवो.

३ त्रीजो वानप्रस्थाश्रम–ते वृद्धावस्थामां मुनिवृत्तिवाळाओने जाणवो.

४ चोथो भिक्षाश्रम–ते अन्तावस्थामां परमात्मध्यानवडेदेहत्यागिओने जाणवो. एम रघुवंशनी टीकाथी जाणीए छीए.

२३प्रश्न–लौकिकमते सीता पोतानुं सत्यपणुं जणावी क्यां गयां हशे?

उत्तर—पाताळमां गयां छे अर्थात्पृथ्वीदेवी प्रगट थइ सीताने पाताळमां लेइ गयां छे. एवी लौकिकमते वात छे.

यदुक्तं कालिदासकविकृतरघुवंशे.

" अथवाल्मीकिशिष्येणपुण्यमावर्जितंपयः ॥
आचम्योदीरयामाससीतासत्यांसरस्वतीम् ॥८०॥
वाङ्मनःकर्मभिःपत्यौव्यभिचारोयथानमे ॥
तथाविश्वंभरेदेविमामान्तर्धातुमर्हसि ॥ ८१॥
एवमुक्तेतथासाध्व्यारंध्रात्सद्योभवाद्भुवः ॥
शातहृदमिवज्योतिःप्रभामण्डलमुद्ययौ ॥ ८२ ॥
तत्रनागफणोत्क्षिप्तसिंहासननिषेदुषी ॥
समुद्ररसनासाक्षात्प्रादुरासीद्वसुंधरा ॥ ८३ ॥
सासीतामङ्कमारोप्यभर्तृप्रणिहितेक्षणम् ॥
मामेतिव्याहरत्येवतस्मिन्पातालमभ्यगात् ॥८४॥ "

२४ प्रश्न–सूर्यना किरणोनी वधघट थती हशे?

उत्तर—श्रीकल्पसूत्रनी दीपिकामां लौकिकशास्त्रनी अपेक्षाए वधघट कही छे. ते नीचे लख्या प्रमाणे.

चैत्रमासमां	सूर्यना	किरणो	१२००
वैशाखमासमां	सूर्यना	कि०	१३००
ज्येष्ठमासमां	सूर्यना	कि०	१४००
श्रावणमासमां	सूर्यना	कि०	१४००
भाद्रपदमासमां	सूर्यना	कि०	१४००
आषाढमासमां	सूर्यना	कि०	१५००
आश्विनमासमां	सूर्यना	कि०	१६००
कार्त्तिकमासमां	सूर्यना	कि०	११००
माघमासमां	सूर्यना	कि०	११००
मार्गशीर्षमासमां	सूर्यना	कि०	१०५०
फाल्गुनमासमां	सूर्यना	कि०	१०५०
पौषमासमां	सूर्यना	किरणो	१०००

उक्त रीते वधघट जाणवी.

यदुक्त्यादिः

" शतानिद्वादशमधौ[1]त्रयोदशैवमाधवे[2] ॥
चतुर्द्दशपुनर्ज्येष्ठेनभोनभस्ययो[3]स्तथा ॥ १ ॥
पञ्चदशैवत्वाषाढेषोडशैवंतथाश्विने ॥
कार्त्तिकेत्वेकादशचशतान्येवंतप[4]स्यपि ॥ २ ॥
मार्गेतुदशसार्द्धानिशतान्येवंचफाल्गुने ॥
पौषएवपरंमासिसहस्रंकिरणारवेः ॥ ३ ॥ " इति

१ चैत्रे २ वैशाखे. ३ श्रावणभाद्रपदयोः ४ माघेपि

२५ प्रश्न—बत्रीस लक्षणो पुरुष कयो समजवो ?

उत्तर—शास्त्रोक्तबत्रीसलक्षण जेने विषे पामीए ते बत्रीस लक्षणो पुरुष जाणवो. ते ३२ लक्षण आ प्रमाणे छे.

छत्र, कमल, धनुष; रथ, वज्र, काचबो, अंकुश, वाव, स्वस्तिक, तोरण, सरोवर, सिंह, वृक्ष, चक्र, शंख, हस्ती, समुद्र, कलश, प्रासाद, मत्स्य, जव, (धान्य विशेष). यज्ञस्तंभ, स्तूप, (स्थुभ) कमण्डलु, (संन्यासीनुं जळपात्र) पर्वत, चामर, दर्पण, वृषभ, ध्वजा, श्री, माला, अने मयूर, ए बत्रीसलक्षण पूर्वकृतपुण्योए करीने मोटा पुण्यवंत प्राणिओना हाथ पगने तळीए होय, एम पण्डित पुरुषो कहे छे.

यदुक्तंश्रीकल्पदीपिकायाम्.

“ छत्रंतामरसंधनूरथवरोदंभोलिकूर्मांकुशावापीस्वस्तिकतोरणानिचसरःपंचाननःपादपः ॥ चक्रंशंखगजौसमुद्रकलशौप्रासादमत्स्यौयवायूपस्तूपकमंडलून्यवनिभृत्सच्चामरौदर्पणः ॥ १ ॥

उक्षापताकाकमलाभिषेकासुदामकेकीघनपुण्यभाजाम् ॥
पुराकृतैःपुण्यगणैरमूनिसल्लक्षणानीतिवदन्तिधीराः ॥२॥”

वली बीजी रीते पण बत्रीस लक्षणो पुरुष कह्यो छे.—

नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालवुं, अने आंखना खुणा, ए सात जेना रातां होय. तथा काख, हृदय, कोट, नाक, नख, अने मुख, ए छ जेना ऊंचा होय. तथा दांत, चामडी, केश, आंगलीना पर्व, अने नख, ए पांच जेना सूक्ष्म

होय. तथा नेत्र, हृदय, नाक हडपची, अने भुजा, ए पांच जेना लांबा होय. तथा ललाट, हृदय, अने मुख, ए त्रण जेना पहोलां होय, तथा ग्रीवा, जंघा, अने लिंग, ए त्रण जेना टुंका होय. तथा स्वर, नाभि, अने सत्व, ए त्रण जेना गंभीर होय. ते बत्रीस लक्षणो पुरुष जाणवो.

यदुक्तंश्रीकल्पदीपिकायाम्.

" इहभवतिसप्तरक्तःषडुन्नतःपञ्चसूक्ष्मदीर्घश्च ॥ त्रिविपुललघुगंभीरोद्वात्रिंशल्लक्षणःसपुमान् ॥ १ ॥ "

अत्र दृष्टान्त तरीके श्रीश्रीपालनरेन्द्र, श्रीविक्रमनरेन्द्र, इत्यादि घणा बत्रीस लक्षणा पुरुषो थइ गया छे.

२६ प्रश्न–लौकिक १८ पुराणना नाम दर्शावो ?

उत्तर—ब्रह्मपुराण १ पद्मपुराण २ विष्णुपुराण ३ वायुपुराण ४ भागवतपुराण ५ नारदपुराण ६ मार्कंडेयपुराण ७ आग्नेयपुराण ८ भविष्यपुराण ९ ब्रह्मविवर्त्तपुराण १० लिंगपुराण ११ वराहपुराण १२ स्कन्दपुराण १३ वामनपुराण १४ मत्स्यपुराण १५ कूर्मपुराण १६ गरुडपुराण १७ ब्रह्मांडपुराण १८ एवी रीते शास्त्रोक्त १८ पुराणना नाम जाणवां.

यदुक्तंश्रीकल्पदीपिकायाम्.

" ब्राह्मंभोरुहविष्णुवायुभगवत्संज्ञंततोनारदंमार्कंडेयमथाग्निदैवतमितिप्रोक्तंभविष्यंतथा ॥ तस्माद्ब्रह्मविवर्त्तसंज्ञमुदितंलिंगंवराहंस्मृतंस्कांदंवामनमत्स्यकूर्मगरुडंब्रह्मांडमष्टादश ॥ १ ॥ "

२७ प्रश्न—चौद विद्या गुण जाण कोने कहीए ?

उत्तर—जे चौद विद्या जाणे ते चौद विद्या गुण जाण समजवो. अने ते चौद विद्या नीचे लख्या मुजब जाणवी—

ऋग्वेद १ ययुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्व्ववेद ४ शिक्षा ५ कल्प ६ व्याकरण ७ छंद ८ ज्योतिष ९ निरुक्ति १० मीमांसा ११ आन्वीक्षिकी १२ धर्मशास्त्र १३ पुराण १४

तथाचोक्तंश्रीअभिधानचिन्तामणौ.

" षडङ्गीवेदाश्चत्वारोमीमांसान्वीक्षिकीतथाधर्मशास्त्रंपुराणञ्चविद्याएताश्चतुर्द्दश ॥ १ ॥ "

वली विष्णुपुराणमां तो आयुर्वेद १ धनुर्वेद २ गांधर्व ३ अने अर्थशास्त्र ४ ए चार उपवेद सहित १८ विद्या कही छे.

तद्यथा.

" अङ्गानिवेदाश्चत्वारोमीमांसान्यायविस्तरः ॥
धर्मशास्त्रंपुराणञ्चविद्याह्येताश्चतुर्द्दश ॥ १ ॥
आयुर्वेदोधनुर्वेदोगान्धर्वश्चार्थशास्त्रकम् ॥
चतुर्भिरेतैःसंयुक्ताःस्युरष्टादशताःपुनः ॥ २ ॥ "

अत्र दृष्टान्त तरीके इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, वीगेरे चौद विद्यागुण जाण हता एम श्रीकल्पसुबोधिकामां गणधरवादव्याख्यावसरे कहेल छे.

---

१ पूर्वोक्त शिक्षा वीगरे ६ अंग. २ तर्कविद्या. ३ सर्गश्चप्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणिच ॥ वंशानुवंशचरितंपुराणंपञ्चलक्षणम् ॥ १ ॥ ४ वैद्यकशास्त्रम् ५ संगीतशास्त्रम् ६ नीतिशास्त्रम्.

२८ प्रश्न–केटलां नक्षत्रो ज्ञानवृद्धि करनारां हशे ?

उत्तर—दश, ते नीचे प्रमाणे–मृगशिर १ आर्द्रा २ पुष्य ३ पूर्वाफाल्गुनी ४ पूर्वाषाढा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ मूळ ७ अश्लेशा ८ हस्त ९ अने चित्रा १० ए उक्त दश नक्षत्रोनी साथे चन्द्रमानो योग आवे छते जो श्रुतज्ञानना उद्देशादि कराय छे तो ज्ञानवृद्धिने पामे छे, तथा निर्विघ्नपणे भणाय छे, संभळाय छे, व्याख्यान कराय छे, धराय छे, शाथी के जे काळ विशेष छे ते पण तथाविधकार्यविषे क्षयोपशमादिभावनो हेतुभूत छे.

यदुक्तंश्रीस्थानाङ्गसूत्रे.–

" दसनक्खत्ताणाणस्सविद्धिकरापण्णत्तातंजहा. मिगसिरअद्दापूसोतिन्नियपुव्वाइमूलमस्सेसा ॥ हत्थोचित्तायतहादसविद्धिकराइंणाणस्स ॥ १ ॥ "

तट्टीका.

" विद्धिकराइंति ॥ एतन्नक्षत्रयुक्तेचन्द्रमसिसतिज्ञानस्यश्रुतज्ञानस्योद्देशादिर्यदाक्रियतेतदाज्ञानंसमृद्धिमुपपयात्यविघ्नेनाधीयतेश्रूयतेव्याख्यायतेधार्यतेचेतिभवतिचकालविशेषस्तथाविधकार्येषुकारणंक्षयोपशमादिहेतुत्वात्तस्ययदाहउदयरकयरवओवसमोवसमाजंचकम्मणोभणियादव्वंखेत्तंकालंभावंचभवंचसंपप्पत्ति ॥ १ ॥ "

तथैवसंस्कृतार्यापिभवति

तथाहिश्रीअजितनाथचरित्रे.

" उदयक्षयक्षयोपशमोपशमाःकर्म्मणांभवन्त्यत्र ॥
द्रव्यंक्षेत्रंकालंभावञ्चभवञ्चसम्प्राप्य ॥ १ ॥" इति

२९ प्रश्न–ननुचन्द्रादयोग्रहाश्चारविशेषेण प्राणिनां सुखःदुखविपाकहेतवो भवन्तिकिंवानेतिप्रश्नः

उत्तर—उच्यते प्रायस्ते प्राणिनां सुखदुःखविपाकहेतवो भवन्तिपरं विशेषविस्तरार्थिनात्वत्र श्रीलोकप्रकाशग्रन्थोविलोकनीयः सचग्रन्थोयम्.

" एतेचन्द्रादयःप्रायःप्राणिनांप्रसवक्षणे ॥
तत्तत्कार्योपक्रमेवावर्षमासाद्युपक्रमे ॥ ८४ ॥
अनुकूलाःसुखंकुर्युस्तत्तद्राशिमुपागताः ॥
प्रतिकूलाःपुनःपीडांप्रथयन्तिप्रथीयसीम् ॥ ८५ ॥
ननुदुःखसुखानिस्युःकर्मायत्तानिदेहिनाम् ॥
ततःकिमेभिश्चन्द्राद्यैरनुकूलैरुतेतरैः ॥ ८६ ॥
आनुकूल्यंप्रातिकूल्यमागताअप्यमीकिमु ॥
शुभाशुभानिकर्माणिव्यतीत्यकर्त्तुमीशते ॥ ८७ ॥
ततोमुधास्तामपरेनिर्ग्रन्थानिःस्पृहाअपि ॥
ज्योतिःशास्त्रानुसारेणमुहूर्त्तेक्षणतत्पराः ॥ ८८ ॥
प्रव्राजनादिकृत्येषुप्रवर्त्तन्तेशुभाशयाः ॥
स्वामीमेघकुमारादिदीक्षणेतत्किमैक्षत ॥ ८९ ॥

चतुर्भिःकलापकम्

अत्रोच्यतेपरिचितश्रुतोपनिषदामयम् ॥
अनाघ्रातगुरुपरम्पराणांवाक्यविप्लवः ॥ १० ॥
श्रूयतामत्रसिद्धान्तरहस्यामृतशीतलम् ॥
अनुत्तरसुराराध्यंपारंपर्यात्समुत्तरम् ॥ ११ ॥
विपाकहेतवःपञ्चस्युःशुभाशुभकर्मणाम् ॥
द्रव्यंक्षेत्रञ्चकालश्चभावोभवश्चपञ्चमः ॥ १२ ॥
तथाचोक्तम्—उदयक्खयखओवसमोवसमाजंच ॥
कम्मणोभणियादव्वंखेत्तंकालंभावंचभवंचसंपप्प ॥१३॥
यथाविपच्यतेसातंद्रव्यंस्रक्चन्दनादिकम् ॥
गृहारामादिकंक्षेत्रमनुकूलग्रहादिकम् ॥ १४ ॥
वर्षावसन्तादिकंवाकालंभावंसुखावहम् ॥
वर्णगन्धादिकंप्राप्यभवंदेवनरादिकम् ॥ १५ ॥

युग्मम्.

विपच्यतेसातमपिद्रव्यंखड्गविषादिकम् ॥
क्षेत्रंकारादिकं[1]कालंप्रतिकूलंग्रहादिकम् ॥ १६ ॥
भावमप्रशस्तवर्णगन्धस्पर्शरसादिकम् ॥
भवञ्चतिर्यग्नरकादिकंप्राप्येतिदृश्यते ॥ १७ ॥

युग्मम्.

शुभानांकर्मणांतत्रद्रव्यक्षेत्रादयशुभाः
विपाकहेतवःप्रायोशुभानाञ्चततोन्यथा ॥ १८ ॥

---

१ गुप्तिगृहादिकम्.

ततोयेषांयदाजन्मनक्षत्रादिविरोधभाक् ॥
चारश्चन्द्रार्यमादीनांज्योतिःशास्त्रोदितोभवेत् ॥१९९॥
प्रायस्तेषांतदाकर्म्माण्यशुभानितथाविधाम् ॥
लब्ध्वाविपाकसामग्रींविपच्यन्तेतथातथा ॥ २०० ॥

युग्मम्

विपक्कानिचतान्येवंदुःखंदद्युर्महीस्पृशाम् ॥
आधिव्याधिद्रव्यहानिकलहोत्पादनादिभिः ॥ १ ॥
यदातुयेषांजन्मर्क्षाद्यनुकूलोभवेदयम् ॥
ग्रहचारस्तदातेषांशुभंकर्म्मविपच्यते ॥ २ ॥
तथाविपक्कंतद्दत्तेङ्गिनांधनाङ्गनादिजम् ॥
आरोग्यतुष्टिपुष्टीष्टसमागमादिजंसुखम् ॥ ३ ॥
एवंकार्यादिलग्नेपितत्तद्भावगताग्रहाः ॥
सुखदुःखपरिपाकेप्राणिनांयान्तिहेतुताम् ॥ ४ ॥
तथाहभगवाञ्जीवाभिगमः-रयणियरदिणयराणंनख-त्ताणंमहग्गहाणंच ॥ चारविसेसेणभवेसुहदुहविमणु-स्साणं ॥ ५ ॥
अतएवमहीयांसोविवेकोज्वलचेतसः ॥
प्रयोजनंस्वलमपिरचयन्तिशुभेक्षणे ॥ ६ ॥
ज्योतिःशास्त्रानुसारेणकार्यंप्रव्राजनादिकम् ॥
शुभेमुहूर्त्तेकुर्वन्तिततएवर्षयोपिहि ॥ ७ ॥

इथ्थमेवावर्त्तताज्ञास्वामिनामर्हतामपि ॥
अधिकृत्यशुभंकृत्यंपाठप्रव्राजनादिकम् ॥ ८ ॥
सुक्षेत्रेशुभतिथ्यादौपूर्वोत्तरादिसंमुखम् ॥
प्रव्राजनव्रतारोपादिकंकार्यंविचक्षणैः ॥ ९ ॥
तथोक्तंपञ्चवस्तुके-एसाजिणाणमाणाखेत्ताइयायकम्म-
णोभणिया ॥ उदयाइकारणंजंतम्हासवथ्थजइयवं १०
अर्हदाद्याःसातिशयज्ञानायेतुमहाशयाः ॥
तेतुज्ञानबलेनैवज्ञात्वाकार्यगतागतिम् ॥ ११ ॥
अविघ्नंवासविघ्नंवाप्रवर्त्तन्तेयथाशुभम् ॥
नापेक्षन्तेन्यजनवन्मुहूर्त्तादिनिरीक्षणम् ॥ १२ ॥

युग्मम्

तद्विचिन्त्यापरेषान्तुतथानौचित्यमञ्चति ॥
मत्तेभस्पर्द्धयावीनां[1]मिवाघातोमहाद्रुषु ॥ १३ ॥
इदमर्थतोजीवाभिगमवृत्ताविति. "

३० प्रश्न–विषव्याप्तअन्नने जोइ चकोर वीगेरे जीवोने कंइ थतुहशे ?
उत्तर—हा, विविध विलक्षण स्वभाव समुत्पन्नथायछे. ते आ प्रमाणे विषसहित एवा अन्नने देखीने चकोर पक्षी चक्षुविषे विरागने धरेछे. अर्थात् झेरवालुं अन्न देखीने चकोर पक्षी आंखो मींचेछे, हंस शब्द करेछे, मेना वमन करेछे, पोपट सतत पोकार करेछे, वानर विष्टाने करेछे, कोकिल क्षण-

१ पाक्षिणाम्.

वारमां मरण प्रत्ये पामेछे, क्रौञ्चपक्षी नाचे माचे छे, नोलीओ राजी थायछे, अने कागडो हर्षने धरेछे,

यदुक्तम्.

" दृष्ट्वान्नंसविषंचकोरविहगोधत्तेविरागंदृशोर्हंसःकुञ्जतिसारिकाचवमतिक्रोशत्यजस्रंशुकः विष्टांमुञ्चतिमर्कटःपरभृतःप्राप्नोतिमृत्युंक्षणात्क्रौञ्चोमाद्यतिहर्षवाँश्चनकुलःप्रीतिञ्चधत्तेद्विकः ॥ १ ॥ "

अत्र दृष्टान्त तरीके एक दिवस श्रीशोभनाचार्यजी श्रीउज्जयिनीपुरीमां पोताना संसारी भाइ धनपाल पण्डितने घेरेवहोरवा निमित्ते गयाछे. तेज दिवसे धनपालना घरमां तेना वैरिए मोदकमां झेरनखावेलुंछे. ते झेरवाला मोदक लेइ आपवामांडया त्यारे आचार्यजीए कह्युंके अमने ए मोदक नहींकल्पे. धनपाले कह्युंके मोदकमां शुं झेरघालेलुंछे ? आचार्यजीए कह्युंके हा, एमोदकमां झेरजछे. पछीपरम्पराए पूछवाथी एमां झेरछे एवो निर्णय थयो त्यार पछी जीवितदान आपनार श्रीशोभनाचार्यजीने पूछ्युंके आपे शाथी जाण्युंके आमां झेरछे. उत्तर आपतां जणाव्युंके, आ पांजरामां रहेला चकोरपक्षीए आ मोदकोने देखीने आंखोमींचीदीधी तेथी अमे विचार्युंके आमोदकमां खरेखर झेरछे. वळीशास्त्रप्रमाण आपवा पूर्वोक्तकाव्य कही बताव्यो ते सांभळी धनपाल अजाएब थयो इत्यादि.

३१ प्रश्न—स्त्रीना अंग विषे कया कया दिवसे क्यां क्यां काम रहेछे ?

उत्तर—शुक्लपक्षमां पडवे पगना अंगुठे, बीजें पंजाए, त्रीजें पगनी

घुंटीए, चोथें ढींचणे, पांचमे जघने (केडना आगला भागे) छठें नाभीए, सातमें स्तने, आठमें बगलमां, नोमें गले, दशमें गालोए, अगीयारसें दांते, बारसे मुखे, तेरसें नेत्रोए, चौदशें केशपासे, अने पुनमें मस्तके, कृष्णपक्षमां पडवे माथे, बीजेंकेशे, एम अनुक्रमें वदमां उतरवुं अने शुदमां चढवुं एवींरीते स्त्रीओना एकेक अंगे एकेक दिवस कामनो वासो जाणवो.

यतः

" अंगुष्टेपदगुल्फजानुजघनेनाभौचवक्षस्थलेकक्षा--कंठकपोलदंतवदनेनेत्रेलकेमूर्द्धनि ॥ शुक्लाशुक्लविभागतो-मृगदृशामंगेष्वनंगस्थितिर्मूर्द्धाधोगमनेनवामपदगापक्ष--द्वयेलक्षयेत् ॥ १ ॥ " इतिवचनात्.

अत्र रहस्यार्थ एछेके, जे दिवसे जे अंगे अनंगनो वासो होयते दिवसे ते अंगने यथोचित मर्दन करवाथी स्त्री वश थायछे इति. उक्तरीते श्रीपुरनगरमां श्रीपति नामना परम श्रावक शेठने कमल नामनो पुत्रहतो अने ते सर्वे कळाओमां निपुण हतो तेनी पासे श्रीसर्वज्ञसूरिजीए कहेलुंछे. अने ते वात श्रीविजयलक्ष्मीसूरिजीए उपदेशप्रासादग्रन्थमां दाखल करीछे, वळी पंडितश्रीवीरविजयजी महाराजे पण पूर्वोक्तवात श्रीस्थूलभद्रशीलवेलमां गोठवेलीछे. शास्त्र व्याख्या १नवरसमय होयछे. माटे श्रृंगाररसयुक्तव्याख्या

---

१ श्रृंगाररस, वीररस, करुणारस, हास्यरस, रौद्ररस, बीभत्सरस, भयरस, अद्भूतरस, अने शांतरस, एनवरस जाणवा.

वांची वैराग्यवान् पंडित पुरुषे व्यामोह न करवो.

३२ प्रश्न–" कुत्रिकापण " एटले शुं ?

उत्तर—पुर्वे मोटीमोटीनगरीओमां एवा नामनी देवाधिष्टित दुकानहती के, ज्यांथी त्रणभुवनमांहेनी जे वस्तु मागो ते मलीशके ते विषे श्रीउत्तराध्ययनटीकानुं प्रमाण नीचेमुजब.

तथाचोक्तंश्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रटीकायाम्.

" हट्टोहिदेवसंबंधीकुत्रिकापणउच्यते ॥
सद्भावानखिलाँस्तत्रप्रदत्तेप्रार्थितःसुरः ॥ १ ॥ "

वळी श्रीभगवतीसूत्रवृत्तिमां " कुत्रिकापण " शब्दनी व्युत्पत्ति करीछे. तेपण पुर्वोक्तवातने मळतीछे. अने ते नीचे प्रमाणे.

तथाचतद्वृत्तिः

" कुत्तियावणत्तिकुत्रिकंस्वर्गमर्त्यपाताललक्षणंभूत्रयंतत्संभविवस्त्वपिकुत्रिकंतत्संपादकोयआपणोहट्टोदेवाधिष्टितत्वेनासौकुत्रिकापणः " इति

३३ प्रश्न–"गोरस" शब्दनी केवी रीते व्युत्पत्ति थाय छे? अने क्यां तेनी प्रवृत्ति होय छे ?

उत्तर—" गवांरसोगोरसः " गायोनो रस ते गोरस, ए तेनी व्युत्पत्ति जाणवी, अने गोरसशब्दनी प्रवृत्तितो " महिष्यादीनामपिदुग्धादिरूपेरसे " भेंसवीगेरेना पण दुध, दही, घी, अने छास, रूपरसने विषे जाणवी एम श्रीठाणांगसूत्रनी टी० क०

तथाचतट्टीका

" गवांरसोगोरसोव्युत्पत्तिरेवेयंप्रवृत्तिस्तुमहिष्या-
दीनामपिदुग्धादिरूपेरसे " इति

३४ प्रश्न–अपक्वगोरसमां कठोल जमवुं जेम जैनशास्त्रमां वर्ज्युं छे तेम लौकिकशास्त्रमां वर्ज्युं हशे ?

उत्तर—हा, लौकिकशास्त्रमां पण वर्जेलुं छे तेनो दाखलो नीचे प्र० श्रीविष्णुभगवान् कहे छे के, हे युधिष्ठिर अडद, मग, वीगेरे कठोल अन्नमां गोरस (काचुं दुध, दही, अने छास) एकठुं मेलवी जमवुं ते नीश्चे करी मांस समान छे.

यदुक्तंमहाभारते

" गोरसंमाषमध्येतुमुद्गादिषुतथैवच ॥
भुञ्जमानंभवेन्नूनंमांसतुल्यंयुधिष्ठिर ॥ १ ॥ " इति.

प्रस्तावने लीधे आ ठेकाणे अमारे कहेवुं पडे छे के, स्वशास्त्रपरशास्त्रना अजाण बापडा ढुंढीया लोको काचां दुध, दही, छासमां कठोल खाय छे ते घणी सखेदाश्चर्यबातछे.

३५ प्रश्न–अन्यदर्शनमां रात्रीभोजन नहीं निषेधेलुं होय ?

उत्तर—पद्मपुराणमां रात्रिभोजननो निषेध करेलो छे ते नीचे प्रमाणे जे माणसो मद्य, मांस, अनेकन्दमूलनुं भक्षण करे छे, तथा रात्रिभोजन करे छे. ते माणसोनी तीर्थयात्रा, जप, तप, एकादशीव्रत, विष्णुजागरण, वीगेरे धर्मक्रिया वृथा जाणवी. आम कहेवाथी मद्य, मांस, रात्रिभोजन, अने कन्दमूलनो निषेध कर्यो समजवो.

यदुक्तम्.

" मद्यमांसाशनंरात्रौभोजनंकन्दभक्षणम् ॥
येकुर्वन्तिवृथातेषांतीर्थयात्राजपस्तपः ॥ १ ॥
वृथाचैकादशीप्रोक्तावृथाजागरणंहरेः ॥
वृथाचपौष्करीयात्रावृथाचान्द्रायणंतपः ॥ २ ॥ "

वली पुराणोमां कह्युं छे के, हे युधिष्ठिर दया, सत्य, अस्तेय, (चोरी नहीं करवीते) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, मद्य, मांस, अने मधनो त्याग, तथा रात्रिभोजननो त्याग ए सर्व धर्मना अंगो छे, जे उत्तमबुद्धिवाला माणसो रात्रिने विषे हमेशां आहारनो त्याग करेछे. तेओने एक मासमां पंदर दिवसना उपवासनुं फल थायछे. जे धन्यमाणस हमेशां रात्रिभोजनप्रते विरतिने करेछे. ते नीश्चे करी पुरुषना अर्धा आयुष्यना उपवासवाळो होय एटले के, पुरुषने पोताना अर्ध आयुष्य जेटला उपवासनुं फल मले छे. हेयुधिष्ठिरस्वजनमात्रपण मरण पामे छते ज्यारे नीश्चे करी सूतक थाय छे त्यारे सूर्य अस्त पामे छते भोजन केम कराय. हे युधिष्ठिर आ दुनीयामां रात्रिने विषे तो पाणी पण नहीं पीवुं अने तेमां पण तपस्विए अने विवेकी एवा गृहस्थे तो विशेषे करी नहीं पीवुं. वलीऋग्, ययुः, साम, लक्षण त्रण वेद तेओनुं जे तेज ते सूर्य छे " आदित्यः त्रयीतनुः " एवुं सूर्यनुं नाम छे. ए प्रमाणे वेदोने जाणनारा, जाणे छे, ते सूर्यना किरणोए करी पवित्र थएल सर्व शुभकर्मोने करे अर्थात् ज्यारे सूर्य न होय त्यारे शुभकर्मो करे नहीं. ते शुभकर्मो नीचेलख्या-मुजबजाणवा. आहुति, (अग्निमांघृतादिकहुतद्रव्यप्रक्षेप-

करवुंते) स्नान, श्राद्ध, (पितृकर्म) देवपूजा, दान, अने भोजनतो विशेषे करी नज करवुं. आटलां शुभकर्मो रात्रिए नज करवां. प्रभातमां देवताओ भोजन करे छे. मध्यान्हे ऋषिओ भोजन करे छे. दिवसना पाछला भागमां पितृओ भोजन करे छे सायान्हे अर्थात् विकालवेलाए दैत्य, दानवो, भोजन करे छे अने संध्यावेलाए यक्ष, राक्षसो, भोजन करे छे. एम सर्वदेवताओना भोजनवखतने उल्लंघीने हे कुलोद्वह (युधिष्ठिर) रात्रिए जे खावुं ते अभक्ष्य छे इत्यादिकथनवडे अन्यदर्शनमां रात्रिभोजननो प्रगट निषेध करेलो छे तोपण जेओ रात्रिभोजन करे छे तेओ एक घणाकालथी पडेल खोटा प्रवाहनी अपेक्षाथी करे छे. एम समजाय छे.

यदुक्तम्.

" अहिंसासत्यमस्तेयंब्रह्मचर्यमसञ्चयः ॥
मद्यमांसमधुत्यागोरात्रिभोजनवर्जनम् ॥ १ ॥
येरात्रौसर्वदाहारंवर्जयन्तिसुमेधसः ॥
तेषांपक्षोपवासस्यफलंमासेनजायते ॥ २ ॥
करोतिविरतिंधन्योयःसदानिशिभोजनम् ॥
सोर्द्धपुरुषायुषस्यस्यादवस्यमुपोषितः ॥ ३ ॥
मृतेस्वजनमात्रेपिसूतकंजायतेध्रुवम् ॥
अस्तंगतेदिवानाथेभोजनंक्रियतेकथम् ॥ ४ ॥
नोदकमपिपातव्यंरात्रावत्रयुधिष्ठिर ॥
तपस्विनाविशेषेणगृहस्थेनविवेकिना ॥ ५ ॥

त्रयीतेजोमयोभानुरितिवेदविदोविदुः ॥
तत्करैःपूतमखिलंशुभकर्मसमाचरेत् ॥ ६ ॥
नैवाहुतिर्नचस्नानंनश्राद्धंदेवतार्चनम् ॥
दानंवाविहितंरात्रौभोजनञ्चविशेषतः ॥ ७ ॥
देवैस्तुभुक्तंपूर्वान्हेमध्यान्हेऋषिभिस्तथा ॥
अपरान्हेतुपितृभिःसायान्हेदैत्यदानवैः ॥ ८ ॥
सन्ध्यायांयक्षरक्षोभिःसदाभुक्तंकुलोद्वह ॥
सर्ववेलांव्यतिक्रम्यरात्रौभुक्तमभोजनम् ॥ ९ ॥
युग्मम्. इत्यादि ”

वळी आयुर्वेद जे वैद्यकशास्त्रछे तेमां पण रात्रिभोजननो निषेध करेलोछे. ते आ प्रमाणे–आ शरीरमां बे कमलछे. एक हृदयपद्म ते अधोमुखछे. बीजुं नाभिपद्म ते ऊर्ध्वमुख छे आ बन्ने कमलो सूर्य अस्त थवाथी रात्रिए संकोचाइ जायछे. ते कारणथी रात्रिए न खावुं जोइए वळी रात्रिए सूक्ष्मजीवो खावामां आववाथी अनेकप्रकारना रोग उत्पन्न थायछे.

यदुक्तम्

“ हृन्नाभिपद्मसङ्कोचश्चण्डरोचिरपायतः ॥
अतोनक्तंनभोक्तव्यंसूक्ष्मजीवादनादपि ॥ १ ॥ ” इति

हवे सर्वलोकोने देखवामां आवता रात्रिभोजनना दोषो बतावीए छीए–अन्नादिकमां कीडी खावामां आवे तो बुद्धि नाश थायछे, जु, खावामां आवी जायतो जलोदर थायछे,

माखी वमन करावे छे, अने करोळीयो कुष्टरोग उत्पन्न करे छे. कांटो अथवा लाकडानो नानो खंड खावामां आवी जाय-तो गळामां व्याधिने उत्पन्न करे छे, शाकनी अंदर पडेलो विंछी ताळवुं विंधी नाखे छे, अने गळामां वळगेलो वाल-स्वरभंगने माटे थाय छे, इत्यादि दृष्टदोषो रात्रिभोजन कर-वामां सर्वे लोकोने देखवामां आवे छे, माटे रात्रिभोजननो त्याग करवो एज श्रेष्टमार्ग छे.

यदुक्तम्-

" मेधांपिपीलिकाहन्तियूकाकुर्याज्जलोदरम् ॥
कुरुतेमक्षिकावान्तिंकुष्टरोगञ्चकोलिकः ॥ १ ॥
कण्टकोदारुखण्डञ्चवितनोतिगलव्यथाम् ॥
व्यञ्जनान्तर्निपतितस्तालुविध्यतिवृश्चिकः ॥ २ ॥
विलग्नश्चगलेवालःस्वरभङ्गायजायते ॥
इत्यादयोदृष्टदोषाःसर्वेषांनिशिभोजने ॥ ३ ॥ "

वळी रात्रि भोजन करवाथी घुवड वीगेरे तिर्यंचोना भव करवापडेछे. तेपण आ प्रमाणे—घुवड, काग, मार्जार, गीध-पक्षी, शंबर, (मृगविशेष) सूअर, सर्प्प, विंछी, अनेघो, इत्यादि तिर्यंचयोनिमां रात्रिभोजनकरनाराओ मरीने जायछे.

यदुक्तम्

" उलूककाकमार्जारगृध्रशम्बरशूकराः ॥
अहिवृश्चिकगोधाश्चजायन्तेरात्रिभोजनात् ॥१॥"

विस्तारवातपूज्यपादश्रीहेमचंद्राचार्यकृतश्रीयोगशास्त्रथी जाणवी.

३६ प्रश्न—अन्य दर्शनना शास्त्रमां कंदमूल खावानी मना करीछे. ?

उत्तर—हा, पद्मपुराणमां मनाकरीछे अने ते वात उपरना प्रश्नोत्तरमां लखाइ गइछे अहींतो फक्त तेनो मूलपाठ लखीए छीए ते नीचे प्र०

" मद्यमांसाशनंरात्रौभोजनंकन्दभक्षणम् ॥
येकुर्वन्तिवृथातेषांतीर्थयात्राजपस्तपः ॥ १ ॥
वृथाचैकादशीप्रोक्तावृथाजागरणंहरेः ॥
वृथाचपौष्करीयात्रावृथाचान्द्रायणंतपः ॥ २ ॥"

तथा शिवपुराणमां पण कंदमूल खावानी मनाकरीछे ते हकीकत आ प्रमाणे—जे घरमां माणसोए हमेशां अन्नार्थे कंदमूल पकावायछे ते घर श्मशान तुल्य जाणवुं. अने ते घर पितृओए पण वर्जेलुंछे. वळी जे अधम माणस कंदमूल साथे अन्ननुं भोजन करेछे तेनी शुद्धि सेंकडो चांद्रायण तपे करीने पण न थाय. वळी शिव पार्वतीप्रत्ये कहेछे के. हे प्रिये जे माणस वैंताक, कालिंगडां, कंदमूल, अने अलाबु (तुंबडी) ने भक्षण करनारोछे ते मूढमाणस अन्तकाले माराप्रत्ये स्मरण नहींकरे अर्थात् मने नहीं संभारे. वळी जेणे कंदमूलनुं भक्षण कर्युं तेणे हालाहल (एकविष) खाधुं. तेमज तेणे अभक्ष्यवस्तुनुं तथा मांसनुं भक्षण कीधुं एमजाणवुं. वळी जे माणस गळीना क्षेत्रने वावेछे तथा कंदमूलनुं भक्षण करेछे ते माणस चंद्रसूर्यनी स्थिति सुधी नरकथी नीकली शकतो नथी. इत्यादि कंदमूलभक्षणना दुषणो दाखल करवाथी सिद्ध थायछे के कंदमूल खावानी उक्तपुराणमां मनाक०

यदुक्तम्

"यस्मिन्गृहेसदान्नार्थंमूलकःपच्यतेजनैः ॥
श्मशानतुल्यंतद्वेश्मपितृभिःपरिवर्जितम् ॥ १ ॥
मूलकेनसमंचान्नंयस्तुभुंक्तेनराधमः ॥
तस्यशुद्धिर्नविद्येतचान्द्रायणशतैरपि ॥ २ ॥
यस्तुवृन्ताककालिङ्गमूलकालाबुभक्षकः ॥
अन्तकालेसमूढात्मानस्मरिष्यतिमांप्रिये ॥ ३ ॥
भुक्तंहालाहलंतेनकृतञ्चाभक्ष्यभक्षणम् ॥
तेनक्रव्यादनंयेनकृतंमूलकभक्षणम् ॥ ४ ॥
नीलीक्षेत्रंवपेद्यस्तुमूलकंयस्तुभक्षयेत् ॥
नतस्यनरकोत्तारोयावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ५ ॥"

तथा प्रभासपुराणमां पण उक्तवस्तुखावानी नीचे लख्या मुजब मना करीछे–

श्रीविष्णुभगवान् युधिष्ठिरना प्रत्ये कहेछे के हेयुधिष्ठिर पुत्रनुं मांस खावुं सारुं, पण कंदमूलनुं भक्षण करवुं ते सारुं नहीं शाथीके कंदमूलना भक्षणथी माणसो नरक प्रत्ये जायछे अने तेने वर्जवाथी स्वर्गने पामेछे, हेदेव में अजाणपणे कंदमूळनुं भक्षणकर्युं पण हवे ते संबंधी जे पाप मने लाग्युं ते हेगोविंद हेगोविंद एम तमारा कीर्त्तनथी जाओ इत्यादि कहेवाथी प्रभासपुराणमां पण कंदमूळ खावानी मनाकरीछे एम अत्रे प्रगट समजायछे.

---

१ मांसभक्षणम्. २ गळीनुं क्षेत्र.

यदुक्तम्.

" वरंभुक्तंपुत्रमांसंनतुमूलकभक्षणम् ॥
भक्षणान्नरकंयान्तिवर्जनात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥ १ ॥
अज्ञानेनकृतंदेवमयामूलकभक्षणम् ॥
तत्पापंयातुगोविंदगोविंदइतिकीर्त्तनात् ॥ २ ॥ "

वळी गौडीयस्मृतिमां हमेशां माघमासमां कंदमूल खावुं ते मदिरासमान कहेलुंछे. ते नीचे प्रमाणे—

तथाचतत्पाठः

" सदामाघेमूलकंमदिरासमम् " इति

एम सर्वत्र निषेध करेलछे छतां कंदमूल खावुं ते अन्यमतावलंबिओने शरमावा जेवुंछे इत्यलम्.

३७ प्रश्न—ब्राह्मणोने राजप्रतिग्रह ग्राह्य छे ?

उत्तर—महाभारतना शांतिपर्वमां ग्राह्य कह्यो नथी किन्तु अग्राह्य कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—दश कसाइखाना सरखो एक चक्री छे, अने दश चक्री सरखो एक कलालछे, अने दश कलाल सरखी एक वेश्या छे, अने दश वेश्या सरखो एक राजा छे, राजानो प्रतिग्रह (दान लेवुं ते) प्रथमतो मधना स्वाद सरखो छे पण अंते विषसमान भयंकर छे, माटे पुत्रनुं मांस खावुं सारुं पण ब्राह्मणे राजानुं दान लेवुं नहीं सारुं, वळी हे युधिष्ठिर राजाना प्रतिग्रहथी दग्धथएला एवा जे ब्राह्मणो तेओनो दग्धथएला बीजोनीपेठे पुनर्जन्म पण होतो नथी इत्यादि.

यदुक्तम्.

" दशसूनासमश्चक्रीदशचाक्रिसमोध्वजः ॥
दशध्वजसमावेश्यादशवेश्यासमोनृपः ॥ १ ॥
राजप्रतिग्रहोघोरोमधुस्वादोविषोपमः ॥
पुत्रमांसंवरंभुक्तंनतुराजप्रतिग्रहः ॥ २ ॥
राजप्रतिग्रहदग्धानांब्राह्मणानांयुधिष्ठिर ॥
दग्धानामिवबीजानांपुनर्जन्मनविद्यते ॥ ३ ॥ " इति

३८ प्रश्न—अन्यदर्शनमां देवताओने प्रसन्न करवा आठ पुष्पोथी पूजा कही छे ते आठ पुष्पो कयां जाणवां ?

उत्तर—पहेलुं पुष्प अहिंसा, बीजुं पुष्प पंचइन्द्रियनो निग्रह, त्रीजुं पुष्प सर्व प्राणिओपर दया, चोथुं पुष्प विशेषे करीने क्षमा, पांचमुं पुष्प ध्यान, छठुं पुष्प तप, सातमुं पुष्पज्ञान, अने आठमुं पुष्प सत्य छे, एवी रीतना उक्त आठ पुष्पोवडे पूजन करवाथी देवताओ प्रसन्न थाय छे.

यदुक्तम्.

" अहिंसाप्रथमंपुष्पंपुष्पमिन्द्रियनिग्रहः ॥
सर्वभूतदयापुष्पंक्षमापुष्पंविशेषतः ॥ १ ॥
ध्यानपुष्पंतपःपुष्पंज्ञानपुष्पंचसप्तमम् ॥
सत्यंचैवाष्टमंपुष्पंतेनतुष्यन्तिदेवताः ॥ २॥ "

अत्र तात्पर्यार्थ ए छे के, जे अज्ञलोको बीजी मद्यमांसादि-खराबचीजोवडेपूजनकरी देवताओने प्रसन्न करवा इच्छा राखे छे ते धुंआडाना बाचका भरवा जेवुं छे किम्बहुनेत्यलम्.

३९ प्रश्न–अन्यदर्शनमां कह्युं छे के पंडितोए छ वस्तुओ न लेवी तेम कोइने न देवी ते छ वस्तुओ कइ जाणवी ?

उत्तर—" नग्राह्याणिनदेयानिषड्वस्तूनिचपण्डितैः ॥ अग्निर्मधुविषंशस्त्रंमद्यंमांसंतथैवच ॥ १ ॥ " सुगमार्थः

अत्र श्लोकना पश्चार्द्धभागमां कहेली छ वस्तुओ न लेवी तेम कोइने न देवी एम कहेवानुं तात्पर्यार्थ सर्वना समजवामां आवे तेम छे माटे लखवानी जरुर नथी इत्यलम्.

४० प्रश्न–१८ भार वनस्पति कही छे ते श्रीजैनमतअपेक्षाए के अन्यमतअपेक्षाए अने ते केवीरीते इत्यादि सविस्तर वात कहो.

उत्तर—लौकिकशास्त्रनी अपक्षाए १८ भार वनस्पति कहीछे अने ते केवीरीते कहीछे. इत्यादि सविस्तर वात नीचे प्रमाणे- ३८११७२९७० मणनो एक भार कह्यो छे. पाठान्तरे- ३८११११७० मणनो भारपण कह्यो छे. आ ठेकाणे एम समजवानुंछे के वनस्पतिनी एकेक जातिनुं एकेक पत्र लावी एटलेमणे एक भार थायछे, अने तेवा भार वनस्पतिना १८ जाणवा. हवेते अठार भार वनस्पतिनो वेंचण नीचेप्रमाणे फुलजातिनी वनस्पतिना चार भार, फलफुलजातिनी वनस्पतिना आठभार, अने वेलजातिनी वनस्पतिना छ भार एवीरीते १८ भार वनस्पति कही छे.

यदुक्तम्.

" शून्यसप्ताङ्कहस्ताश्वसूर्येन्दुवसुवन्हयः ॥
एतत्संख्याङ्कनिर्द्दिष्टोवनभारःप्रकीर्त्तितः ।१। पाठान्तरे
रामाश्ववसवश्चन्द्रःसूर्योभूमिस्तथैवच ॥
मुनिःशून्यंसमादिष्टाभारसंख्यानिगद्यते ॥ २ ॥
एकैकजातिरेकैकपत्रप्रचयतोभवेत् ॥
प्रोक्तसंख्यैर्मणैर्भारस्तेत्वष्टादशभूरुहाम् ॥ ३ ॥
चत्वारःपुष्पकाभाराःअष्टौचफलपुष्पिताः ॥
स्युर्वल्लीनांचषड्भाराःशेषनागेनभाषितम् ॥४॥ " इति

४१ प्रश्न–" पाणिनि " नामना आचार्य स्वभावथी के कोइनाथी मृत्त्यु पामेलाछे ?

उत्तर—शालातुरग्रामनीवासी, दाक्षीपुत्र, अष्टाध्यायीव्याकरणादि-ग्रन्थकर्त्ता, " पाणिनि " नामना आचार्य सिंहथी मृत्त्यु पामेलाछे.

यदुक्तंपञ्चतन्त्रे.

" सिंहोव्याकरणस्यकर्त्तुरहरत्प्राणान्प्रियान्पाणिनेः "

४२ प्रश्न–" दिवाकीर्त्ति " शब्देशुं समजवुं ?

उत्तर—नापित, समजवो.

यतः

" दिवैवकीर्त्तिःकृत्यंयस्यरात्रौक्षुरकर्म्मनिषेधात्स-
दिवाकीर्त्तिः(नापितः) इतिवचनात्. "

प्रस्तावने लिधे कहेवुं पडेछेके केटलाक अज्ञानीलोको रात्रिए मुंडन करावेछे पण ते न करावबुं जोइए.

४३ प्रश्न—" यक्षकर्दम " कोने कहीए ?

उत्तर—समभागमिश्रित केसर, अगरु, कस्तूरी कर्पूर, अने चंदन, एपांच सुगांधिद्रव्यवडे यक्षकर्दम निष्पन्न थायछे.

तथाचाहधन्वन्तरिः

" कुङ्कुमागरुकस्तूरीकर्पूरंचन्दनंतथामहासुगन्धिरि-
त्युक्तंनामतोयक्षकर्दमः ॥ १ ॥ " व्याडिरपितथैव.

४४ प्रश्न—" कर्णीरथ " एटलेशुं ?

उत्तर—पुरुषवाह्य एवुं स्त्रीयोग्य एकयान (पालखी) दृष्टान्ततरीके जे वखते सीताने अयोध्यामां लाव्या तेवखते सीताकर्णी-रथमां (पालखीमां) बेठांहतां—

यदाहकालिदासकविःश्रीरघुवंशे.

" श्वश्रूजनानुष्टितचारुवेषां । कर्णीरथस्थां[2]रघुनाथ-

---

१ अभ्यक्तस्नानाशितभूषितयात्रारणोन्मुखैःक्षौरम् ॥
विद्यादिनिशासन्ध्यापर्व्वसुनवमेन्हिनकार्यश्च ॥ १ ॥ इत्युक्तत्वात्.

२ सीताम्.

पत्नीम् ॥ प्रासादवातायनदृश्यबन्धैः । साकेतनार्योञ्जलिभिःप्रणेमुः ॥ १ ॥ " इति

४५ प्रश्न–शौचधर्माधिकारिओने अत्यन्तमलिनदेह आत्मानुं निर्मलपणुं पोतानी बुद्धिए कल्पेल तीर्थादिजळस्नानेकरीनेजथायछे शुं ?

उत्तर—ना, तेम नथी थतुं केमके पुराणादिकशास्त्रमां ना पाडी छे ते नीचे लख्या प्रमाणे—

स्कंदपुराणमां काशीखंडषष्टाध्यायविषे कह्युंछे के, दुराचारी माणसो हजारो भार माटीथी तथा सेंकडो गमे पाणीना धडाओथी अने सेंकडो तीर्थना स्नानोथी पण शुद्ध थता नथी, जळचरजीवो जळमांज उत्पन्न थाय छे अने जळमांज मरे छे पण मनना मळ नहीं धोवायाथी तेओ स्वर्गे पण जता नथी, जेनुं चित्त रागादिकोथी क्लिष्ट थएलुं छे, तथा जेनुं मुख जुठां वचनोथी अपवित्र थएलुं छे, तथा जेनी काया जीवहिंसादिकथी अशुचि थएली छे, तेनाथी गंगानदी उलटा मुखवाळी रहेछे अर्थात् घणी दूर रहेछे, जेनुं चित्त शमतादिकथी शुद्ध थएलुं छे तथा जेनुं मुख सत्य वचनोथी शुद्ध थएलुं छे तथा जेनुं शरीर ब्रह्मचर्यादिकथी पवित्र थएलुं छे ते माणस गंगानदी विना पण शुद्ध छे, अर्थात् तेने गङ्गाजीए जवानी जरुर नथी. वळी गंगा पण कहेछे के जे माणस परस्त्री, परद्रव्य, अने परद्रोहथी उलटा मुखवाळो छे अर्थात् दूरछे, ते माणस क्यारे आवीने मने पवित्र करशे. इत्यादि

यदुक्तम्.

" मृदोभारसहस्रेणजलकुंभशतेनच ॥

नशुध्यन्तिदुराचाराःस्नानतीर्थशतैरपि ॥ १ ॥
जायन्तेचम्रियन्तेचजलेष्वेवजलौकसः ॥
नचगच्छन्तितेस्वर्गमविशुद्धमनोमलाः ॥ २ ॥
चित्तंरागादिभिःक्लिष्टमलिकवचनैर्मुखम् ॥
जीवघातादिभिःकायोगङ्गातस्यपराङ्मुखी ॥ ३ ॥
चित्तंशमादिभिःशुद्धंवचनंसत्यभाषणैः ॥
ब्रह्मचर्यादिभिःकायःशुद्धोगङ्गांविनाप्यसौ ॥४॥
परदारापरद्रव्यपरद्रोहपराङ्मुखः ॥
गङ्गाप्याहकदागत्यमामयंपावयिष्पति ॥ ५ ॥ ”

तथा शिवपुराणमां कह्युं छे के पापकर्म करनारो अपवित्र थायछे, अने शुद्धकर्म करनारो पवित्र थायछे. माटे शुद्ध कर्मरूप शुचिपणुं स्वीकारवुं, ते सीवायनुं बीजुं जलथी जे शुचिपणुं छे ते निरर्थक छे अर्थात् तेनी जरूरात नथी, अन्तर्गतदुष्टथएलुं एवुं जे चित्त, ते तीर्थना स्नानोथी कंइ शुद्ध थतुं नथी, जेमके, सेंकडो वखत पाणीथी धोएलो एवो मद्यनो घडो अपवित्रज रहेछे, माटी, पाणी, तथा अग्नि पण कर्मरूपी मेलने धोवाने समर्थ नथी, तेथी पंडित पुरुषोतो ज्ञान, ध्यान, अने तपरूपी पाणीथी कर्मरूपी मेलने धुवे छे भावदुष्टप्राणी जीवितपर्यन्त सर्वगंगाना जलथी अने पर्वत जेवडा माटीना पिंडोथी स्नान करे तो पण शुद्ध थतो नथी.

जळचरजीवाः

यदुक्तम्.

" अशुचिःपापकर्मास्याच्छुद्धकर्माशुचिर्भवेत् ॥
तस्मात्कर्मात्मकंशौचमद्भिःशौचंनिरर्थकम् ॥ १ ॥
चित्तमन्तर्गतंदुष्टंतीर्थस्नानैर्नशुद्ध्यति ॥
शतशोपिजलैर्धौतंसुराभाण्डमिवाशुचि ॥ २ ॥
नमृत्तिकानैवजलंनाप्यग्निःकर्मशोधनः ॥
शोधयन्तिबुधाःकर्मज्ञानध्यानतपोजलैः ॥ ३ ॥
गङ्गातोयेनसर्वेणमृत्पिण्डैश्चनगोपमैः ॥
आमृत्योराचरत्स्नानंभावदुष्टोनशुद्ध्यति ॥ ४ ॥ "

वळी कह्युंछे के पाणी मात्रथी भींजाएला शरीरवालो माणस कंइ स्नान करेलो कहेवातोनथी, पण जेणे इन्द्रियोने दमीछे तेज स्नानकरेलो, तथा तेज बाह्य अने अन्तरथी पवित्र थएलो कहेवायछे, श्रीकृष्ण कहेछेके, संयमरूपजलथी भरेली, सत्यरूपप्रवाहवाली, शीलरूपकांठोछेजेने तेवी तथा दयारूपकल्लोलवाली, एवी आत्मारूपीनदीमां हे पांडुपुत्र तुं अभिषेक कर केमके केवल पाणीथी कंइ अन्तरात्मा शुद्ध थतोनथी. तेमजवली आचाररूपवस्त्रांचलथीगळेल, तथा सत्य, प्रसन्न, अने क्षमारूपशीतलताछेजेमां एवाज्ञानरूपजलवडे जे पुरुष निरन्तर स्नानकरे छे, तेने फरी आ बाह्य जल वडे करी शुं प्रयोजन छे ? अर्थात् कंइ प्रयोजन नथी.

यदुक्तम्.

" नोदकक्लिन्नमात्रोपिस्नातइत्यभिधीयते ॥
सस्नातोयोदमस्नातःसबाह्याभ्यन्तरःशुचिः ॥ १ ॥
आत्मानदीसंयमतोयपूर्णा ।
सत्यावहाशीलतटादयोर्मिः ॥
तत्राभिषेकंकुरुपाण्डुपुत्र ।
नवारिणाशुद्धयतिचान्तरात्मा ॥ २ ॥
आचारवस्त्राञ्चलगालितेन ।
सत्यप्रसन्नक्षमशीतलेन ॥
ज्ञानाम्बुनास्नातिनरोनिशंयः ।
किन्तस्यभूयःसलिलेनकृत्यम् ॥ ३ ॥ "

इत्यादिपुराणोक्तपाठथी सिद्ध थायछे के केवलजलस्नान करवाथी महामलिनदेहात्मानिर्मलथतोनथी इति.

हवे जलथी द्रव्यस्नानकरवुं जे कह्युं छे, ते फक्त देवपूजादिकमां भावशुद्धिना कारणे गृहस्थनेकरवुं कह्युंछे. अने ते पण शास्त्रोक्तविधिप्रमाणे जयणाथी करवुं कह्युं छे, माटे देहशुद्धिनी भ्रांतीए वारंवार स्नान करवुं नहीं शाथी के जलस्नान करवाथी असंख्यजीवोनी विराधना थाय छे. जल जे छे ते जीवमय छे एम लौकिकशास्त्रथी पण सिद्ध थाय छे. उत्तरमीमांसामां कह्युं छे के करोळीयाना मुखमांथी नीकळेला तंतु उपरथी गळीने पडेला पाणीना एक बिंदुमां जे सूक्ष्मजीवोछे, ते जो भ्रमर जेटला थाय तो त्रण जगतमां समाय नहीं.

यदुक्तम्.

" लूतास्यतन्तुगलितेयेक्षुद्राःसन्तिजन्तवः ॥
सूक्ष्माभ्रमरमाणास्तेनैवमान्तित्रिविष्टपे ॥ १ ॥ "

इत्यादि, अत्रस्नानसंबंधीविशेषाधिकारश्रीहरिभद्रसूरिकृत स्नानाष्टकनी टीकाथी समजी लेवो.

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्रूपविजयग-
णिवर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीक-
स्तूरविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणि
शिष्यपं०श्रीशुभविजयगणिशिष्यमुं०श्री
लक्ष्मीविजयेनविरचितेश्रीप्रश्नोत्तर
प्रदीपेचतुर्थःप्रकाशः

अथपञ्चमःप्रकाशः

प्रणिपत्यप्रभुंपार्श्वंपार्श्वयक्षसुसेवितम् ॥
ग्रन्थस्यास्यप्रकाशञ्चकुर्वेहंननुपञ्चमम् ॥ १ ॥

१ प्रश्न–रात्रिए देवपूजादिशुभकार्य थाय ?

उत्तर—न थाय एम शास्त्रमां कहेलुं छे, वळी श्रीभगवतीसूत्रमां रात्रिए अशुभपुद्गलपरिणाम कह्यो छे, शुभपुद्गलपरिणाम कह्यो नथी. शुभपुद्गलपरिणामतो पुद्गलद्रव्यशुभतानिमित्तभूतसूर्यना किरणोना स्पर्शथी दिवसेज कह्यो छे. ते परथी पण अत्र सिद्ध थाय छे के रात्रिए देवपूजादि शुभ कार्य न थाय. वळी अन्यशास्त्रोमां पण रात्रिए शुभकार्यकरवां वर्जेलां छे अने ते वात अमे चोथा प्रकाशमां रात्रिभोजनसंबंधीप्रश्नोत्तरविषे कहेली छे ते त्यांथी जोइ लेवी इत्यादि.

२ प्रश्न–मर्त्यलोकनो दुर्गंध उंचो क्यां सुधी जतो हशे ?

उत्तर—मनुष्यलोकनो दुर्गंध चारसें पांचसें योजन सुधी उंचो जाय छे अने तेथी करीने पण देवता अत्रे आवता नथी, एम संग्रहणीसूत्रमां कह्युं छे अने ते नीचे मुजब.

यदुक्तम्.

"चत्तारिपंचजोयणसयाइंगंधोमणुअलोअस्स ॥
उड्ढंवच्चइजेणंनहुदेवातेणआवंति ॥ १ ॥" इति

अने उपदेशमाळानी कर्णिका नामनी टीकामां तो वळी आठसो योजन सुधी अथवा तो एक हजार योजन सुधी पण उंचो जाय छे एम कहेलुं छे ते नीचे प्रमाणे-

यदुक्तम्.

"ऊर्ध्वगत्याशतान्यष्टौसहस्रमपिकर्हिचित ॥
मर्त्यानांयातिदुर्गन्धस्तेनेहायान्तिनामराः॥१॥"इति

विस्तारवातलोकप्रकाशथी जाणशो.

३ प्रश्न-मानुषोतरपर्वत, अभ्यन्तरपुष्करवरद्वीपना अर्द्धमां छे, के बाह्यपुष्करवरद्वीपना अर्द्धमां छे, के बेनी मध्ये छे ?

उत्तर—बृहत्क्षेत्रसमासवृत्तिमां तथा जीवाभिगमसूत्रवृत्तिमां बाह्यपुष्करवरार्द्धभूमिमां कहेलो छे.

तथाचाहुर्मलयगिरयः

"अयञ्चमानुषोत्तरपर्वतोबाह्यपुष्करवरार्द्धभूमौप्रतिपत्तव्य" इतिबृहत्क्षेत्रसमासवृत्तौजीवाभिगमवृत्तावप्येवमेवेति ।

४ प्रश्न-जंबूद्वीपपट्टादिकमां महाहिमवान् वर्षधरपर्वत पीतवर्ण शाथी छे ?

उत्तर—श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमां महाहिमवान् वर्षधरपर्वत सर्वरत्नमय कहेलो छे अने बृहत्क्षेत्रविचारादिकमां तो पीतस्वर्णमय कहेलो छे ते मतान्तर छे अने तेज मतान्तरने आश्रि जंबूद्वीपपट्टादिकमां पीतवर्ण देखाय छे. इति तात्पर्यार्थः

तथाचाहश्रीलोकप्रकाशे

" अस्योत्तरान्तेचमहाहिमवान्नामपर्वतः ॥
सर्वरत्नमयोभातिद्वियोजनशतोन्नतः ॥ १ ॥

अयंजम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यभिप्रायः । बृहत्क्षेत्रविचारादौ-त्वस्यपीतस्वर्णमयत्वमुक्तमितिमतान्तरमवसेयमनेनैवच--मतान्तराभिप्रायेणजम्बूद्वीपपट्टादावस्यपीतवर्णत्वंदृश्यत-इति "

५ प्रश्न—पंचशतयोजनपहोळागजदंतगिरिपर सहस्रयोजनपहोळोसहस्रकूट शीरीते रह्यो ?

उत्तर—सहस्रकूटनो अर्द्धोभाग गजदंत गिरिपरछे अने शेष अर्द्ध भाग गजदंतगिरिना बे बाजुए आकाशविषेप्रतिष्ठितछे एम समजवुं.

यदुक्तंलोकप्रकाशे

" शतानिपञ्चविस्तीर्णेगजदन्तगिराविदम् ॥
सहस्रयोजनपृथुकूटंमातिकथंननु ॥ १ ॥अत्रोच्यते
गजदन्तगिरिंप्राप्यनिजार्द्धेनस्थितंततः ॥
गिरेरुभयतोव्योम्निशेषार्द्धेनप्रतिष्ठितम् ॥ २ ॥
इत्यादि "

६ प्रश्न—पांचमा आराने अन्ते वैताढयपर्वतपर विद्याधरो अने तेओना नगरो रहेशे के केम ?

उत्तर—पांचमां आराने अन्ते वैताठ्यपर्वत उपर पण घणा मेघ-
वर्षशे तेथी त्यां रहेला विद्याधरो तथा तेमना नगरो नहीं
रहे, नाशपामशे.

तथाचोक्तंलोकप्रकाशे

"वर्षन्तिवैताढ्यादीनामुपर्य्यपिघनाअमी ॥
तत्रस्थाअपिनश्यन्तिखेचरास्तत्पुराणिच ॥ १ ॥"

७ प्रश्न–जंबुद्वीपनी जगतीनो "गवाक्षवलय" जगतीनी भींत मध्य
गतछे के जगतीना उपरछे ?

उत्तर—श्रीजंबुद्वीपप्रज्ञाप्तिसूत्रवृत्तिमां लवणसमुद्रतरफजगतीनी भींतनां
मध्यगत कह्योछे अने श्रीजंबुद्वीपसंग्रहणीवृत्तिमांतो लवणस-
मुद्रतरफजगतीना उपरकह्योछे आठेकांणे थोडो विस्तारछे
पण ते श्रीलोकप्रकाशथी जाणवो.

८ प्रश्न–औषध, अने भेषजमां कंइ तफावत हशे ?

उत्तर—एकजातीयशुंठवीगेरे ते औषध, अने अनेकजातीयगोळी,
चूर्णवीगेरे ते भेषज, एम श्रीपंचसूत्रीवृहद्वृत्तिना वचना
नुसारें करी भेद समजायछे.

यदुक्तंसेनप्रश्ने

"तथौषधभेषजयोःकश्चिद्भेदोभवतिकिंवानेतिप्र०
उ०एकजातीयशुंठ्याद्यौषधमनेकजातीयगुटिकाचूर्णादि-
भेषजमितिश्रीपञ्चसूत्रीवृहद्वृत्तिवचनानुसारेणभेदोज्ञायते"

अने श्रीगच्छाचारवृत्तिमांतो केवलद्रव्यरूप अथवा
शरीरना बाह्यउपयोगमांआवे ते औषध, अने अनेकद्रव्यसं-

योगरूप अथवा शरीरना अभ्यन्तरउपयोगमां आवे ते भेषज, एम दर्शावेलछे.

तथाचतद्वृत्तिः

"औषधानिकेवलद्रव्यरूपाणिबहिरुपयोगीनिवाभेषजानिसांयोगिकान्यान्तर्भोग्यानिवेति"

९ प्रश्न–श्रावक कोनी कोनी साथे व्यापार न करे ते कहो ?

उत्तर—लुहार, चमार, कलाल, घांची, तस्कर, धुर्त्त, मलिन, पतित, चंडाल, कसाइ, वाघरी, पारधी, भाडभुंज, इत्यादि साथे घणोलाभछतांपण व्यापार न करे. तेम बीजानी पासेपण न करावे. शाथीके ते महारंभादिककर्मना करनाराछे. एम श्रीजैनशास्त्रमां कहेलुंछे. वळी पंदर कर्मादान तेपण श्रावकने करवां कराववां श्रीउपासकदशांगप्रमुखमां वर्ज्यांछे इत्यादि घणीवातछे.

१० प्रश्न–मुनिआश्रिचारप्रकारना श्रावक कह्याछे ते कया ?

उत्तर—मातापिता जेम बालक उपर भावराखी बालकनी सारसंभाळ करेछे, तेम जे श्रावक साधुउपर भाव राखी साधुनी सारसंभाळ करे पण साधुना प्रमादादिदोषदेखवाथी साधुउपर कंइपण भक्तिराग ओछो न करे ते श्रावक मातापितासमान पहेलो जाणवो. १

जे श्रावक, साधुउपर मननी अंदरतो घणो राग राखे छे परन्तु बहारथी विनयसाचववामां मंद आदरवाळो छे पण जो कोइ दुष्टजीव साधुने पराभव करे तो तरत त्यां जइ साधुने सहाय्य करे ते श्रावक बंधुसमान बीजो जाणवो. २

जे श्रावक, पोताना सगावहालां करतां पण साधुने अधिक गणे अने तथाविधकोइकाममां साधु तेनी सलाह न ले तो अहंकारथी साधुउपर रोष करे ते श्रावक मित्रसमान त्रीजो जाणवो. ३

जे श्रावक साधुना दूषण देखवामां तत्पर होय, अने साधुनी प्रमादथी कोइ थएली भूल हमेशां कह्या करे अने वळी साधुने तृणसमान गणे ते श्रावक शोक्यसमान चोथो जाणवो. ४

वळी बीजी रीते पण चार प्रकारना श्रावक कह्या छे. जेमके आरिसासमान, ध्वजासमान, स्तंभसमान, अने खरकंटक (झांखरा) समान, अथवा खरंटक (विष्टादिअशुचिद्रव्य) समान,

तेमां जे श्रावक, साधुए यथार्थ कहेला उत्सर्ग, अपवाद वीगेरे आगमभावोने पोताना मनमां बरोबर उतारे ते श्रावक आरीसासमानपहेलो जाणवो. १

जे श्रावक पोताना अनवस्थितबोधने लीधे ज्यां त्यां विचित्रदेशनारूपवायुएकरी ध्वजानी माफक भम्या करे ते श्रावक ध्वजासमान बीजो जाणवो. २

जे श्रावक गीतार्थमुनिमहाराजनी देशनाए करीने पण पकडेल कदाग्रहने न छोडे पण गीतार्थमुनिराजउपर द्वेष भाव न राखे ते श्रावक स्तंभसमान त्रीजो जाणवो. ३

अने जे श्रावक, सद्धर्मनो बोध करनार मुनिमहाराजने दुर्वचनरूप कांटाए करी वींधे ते श्रावक खरकंटकसमान चोथो जाणवो. अथवा तो तुं उत्सूत्रप्ररूपणाकरनारो,

निन्हव, मूढ, अने मंदधर्मी छे. एवा निंदारूपअशुचि छांटाने उडाडे ते श्रावक खरंटक (विष्टादिअशुचिद्रव्य) समान चोथो जाणवो. ४

आठेकाणे शोक्यसमान, अने खरकंटक, अथवा खरंटक, समान बन्ने श्रावकने श्रीतीर्थङ्कर, गणधर भगवाने निश्चय नयमते मिथ्यादृष्टि कह्याछे. अने व्यवहारनयमते श्रावक कह्याछे. विस्तार श्रीस्थानांगसूत्रवृत्तिथी जाणवो.

११ प्रश्न–गृहस्थने पांच सूनादोष कह्याछे ते कया ? अने सूना शब्दे करी शुं समजवुं ?

उत्तर—सूना शब्देकरी छकायजीवोना वधनुं स्थान जाणवुं अने तेवां स्थान पांचछे. ते आ प्रमाणे—

चूलो, घंटी, खांडणी, पाणीहारुं, अने सावरणी, माटे ए उक्त पांचस्थानके श्रावकश्राविकाओए घणीज यतना पूर्वक वर्त्तवुं. वळी मुनिमहाराजो गृहस्थना घरने नथी वखाणता ते आ पांच जीववधस्थानादिककारणने लीधे.

१२ प्रश्न–जेम कोइने गृहस्थवेषे पण केवळज्ञान उपजेछे तेम मनः-पर्यायज्ञान उपजे के केम ?

उत्तर—मुनिवेषविना चोथुं मनःपर्यायज्ञान न उपजे कह्युंछे के " मुनिवेषजविनारे नविउपजे चोथुंनाण " अने तेपण अप्रमत्तगुणठाणेज उपजे. इति तात्पर्यार्थः

१३ प्रश्न–बारव्रतनी पूजामां " चारदिशा विमलातमारे " इत्यादिक० त्यां " विमलातमा " एटलेशुं ?

उत्तर—निर्मलपणाना कारणथी " विमला " एवुंऊर्ध्वदिशानुं नाम

छे, अने अंधकारयुक्तवडे करी रात्रिसमानपणाना कारणथी "तमा" एवुं अधोदिशानुं नामछे,

यदुक्तंश्रीभगवतीटीकायांस्थानाङ्गटीकायाञ्च

"विमलेतिवितिमिरत्वादूर्ध्वदिशोनामधेयम्तमेत्यंधकारयुक्तत्वेनरात्रितुल्यत्वादधोदिशश्चेति"

अर्थात् "चारदिशाविमलातमारे" एटले छ दिशा, एम जाणवुं.

१४ प्रश्न—पौषधमध्ये भोजनकराय एवा अक्षरो क्यांइछे ?

उत्तर—हा, श्रीजिनवल्लभसूरिकृतपौषधप्रकरणमां, श्राद्धप्रतिक्रमणनी चूर्णिमां अने श्रीपंचाशकनी चूर्णिमांछे. वळीबारव्रतनी पुजामां पण "एकासणकह्युंरेश्रीसिद्धांतमे" इत्यादि एम घणेठेकाणे तेवा अक्षरो छे.

१५ प्रश्न—आयंवीलमां हलदर कल्पे के केम ?

उत्तर—नकल्पे, एम श्रीलघुप्रवचनसारोद्धारमां कह्युंछे.

तत्पाठोयथा

"हलिद्दप्पभइअकप्पं" इति

१६ प्रश्न—शंबूकावर्त्तफोडवां नहीं त्यां "शंबूकावर्त्त" शब्दे शुं समजवुं ?

उत्तर—भ्रमरगृह समजवुं कारणके श्रीकल्पसामाचारीवृत्तिमां "शंबुकावर्त्त" शब्दे भ्रमरगृह कह्युंछे.

---

१ श्रीजिनवल्लभसूरि खरतरगच्छना न समजवा.

१७ प्रश्न–चक्षुहीनमाणसने केवलज्ञान उपजे ?

उत्तर—हा, केवलज्ञान उपजे अने तेजवखते ते देखतो थाय इत्यादि

१८ प्रश्न–हालमां सुधरेल केटलाक श्रावको श्रीदेरासरमां पण उत्तरासंग नथी राखता तेनुं शुं कारण ?

उत्तर—निजअज्ञानप्रमादादिदोषना सद्भावथी ते नथी राखता एम समजायछे. अथवा जे नथी राखता तेने पूछवाथी नहीं-राखवानुं कारण समजाशे. बश एज.

१९ प्रश्न–त्रण उभरावडे अचित्त थएलुं उष्णजळ गळ्या विना पीवुं कल्पे के केम ?

उत्तर—गालन करेलुं उष्णजळ पीवुं कल्पे, पण नहींगालनकरेलुं उष्णजळ पीवुं न कल्पे एम श्रीहीरप्रश्नोत्तरमां कहेलुंछे. वळी नहींगालनकरेला उष्णजळमां तृणादिकनो संभव होयछे अने तेथी ते तृणादिक गळामां लागवाथी दुःख उत्पन्न थायछे माटे गळीने पीवुं तेज सर्वोत्तममार्गछे इति रहस्यार्थः

२० प्रश्न–कोइ गृहस्थ एकाशनादितपकर्याविना उनुंपाणिपीएछे ते पाणस्सना आगारले ?

उत्तर—हा, ते पाणस्सना आगारले पण तेने सांजे चउविहार थाय पाणहारपच्चरकाण न थाय एवुं श्रीसेनप्रश्नमां कथनछे.

२१ प्रश्न–चोमासानी अट्ठाइओ क्यांथी क्यां सुधी जाणवी.

उत्तर—सातमथी मांडी चौदश सुधी जाणवी अने पूर्णिमा तो पर्वतिथिपणे करी आराध्य छे. एम सेनप्रश्नमां कहेलुं छे.

२२ प्रश्न–अचक्षुदर्शनमां स्वप्नदर्शननो अन्तर्भाव थाय ?

उत्तर–हा, अन्तरभाव थाय एवुं श्रीठाणांगसूत्रनी टीकामां कथनछे.

२३ प्रश्न–संप्रतिकालेजीव ऊर्ध्वगतिमां तथा अधोगतिमांजाय तो क्यांसुधीजाय ?

उत्तर—हालमां छेलासंहननवालोजीवजघन्यबलयुक्त कह्योछे अने तेथी तेनो शुभाशुभपरिणाम पण मंद होयछे तीव्र होतो नथी ते कारणथी तेने शुभाशुभकर्मनो बंध पण स्वल्पतर होयछे एटलामाटे जोते ऊर्ध्वगतीमां जायतो चोथा देवलोक सुधी जाय. पण आगल न जाय. अने जो ते अधोगतिमां जायतो बीजी नरक पृथ्वी सुधीजाय. पण आगल न जाय एम श्रीबृहत्कल्पवृत्तिना बीजा खंडविषे क०

तथाचतत्पाठः

" यःसेवार्त्तसंहननीजघन्यबलोजीवस्तस्यपरिणामोपिशुभोशुभोवामन्दएवभवतिनतीव्रस्ततःशुभाशुभकर्मबन्धोपितस्यस्वल्पतरएवातएवास्योर्ध्वगतौकल्पचतुष्टयादूर्ध्वमधोगतौनरकपृथ्वीद्वयादधउपपातोनभवतीतिप्रवचनेप्रतिपाद्यते "

तथा संग्रहणीसूत्रमां पण कह्युंछे ते आ प्रमाणे—

तद्यथा

" छेवट्ठेणउगम्मइचउरोजाकप्प०दोपढमपुढवीगमणंछेवट्ठे० इत्यादि "

२४ प्रश्न–लेश्या कयाकर्म मध्ये गणवी ?

उत्तर—" योगप्रभवालेश्या " इतिवचनात् योगप्रत्ययलेश्या जाणवी अने योगजनक ते नामकर्मछे माटे नामकर्मना मध्ये

लेश्यागणवी. आ ठेकाणे घणीमतान्तरवातछे ते श्रीलोक प्रकाशप्रमुखशास्त्रान्तरथी जाणवी.

२५ प्रश्न–कार्मणशरीरनुं स्वरूप केवी रीते समजवुं ?

उत्तर—कार्मणशरीरते नामकर्मनी एकप्रकृतिछे तेथी नाम कर्मनी वर्गणारूप कार्मणशरीरछे अने ते औदारिकादिशरीरनुं बीजछे वळी जेनेविषे आधाराध्येयभावे कणनीगांठडी-माफक बीजी सात कर्मनी वर्गणा रहीछे. इत्यादि कार्मण शरीरनुं स्वरूप जाणवुं पछी जेम बहुश्रुत कहे ते खरुं.

२६ प्रश्न–कया आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो ?

उत्तर—श्रीमहावीरस्वामिथीएकहजारवर्षगएछते श्रीसत्यमित्राचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो एम श्रीतपगछपट्टावलीनी वृत्तिमां दर्शावेलछे.

२७ प्रश्न–श्रीहेमचन्द्रसूरिजीनो जन्मादिकाळ कयो ?

उत्तर—विक्रमसंवत् ११४५ मां जन्म, ११५० मां दीक्षा, ११६६ मा सूरिपद, १२२९ मां स्वर्गवास, कुल ८४ वर्षनुं आयुष जाणवुं तेमहाराजानो विशेष अधिकार श्रीप्रबंधचिन्तामणि कुमारपालभूपालचरित्रादिकथी जाणवो.

२८ प्रश्न–संक्षेप सामायिकनुं स्वरूप दृष्टान्तसाथे कहो.

उत्तर—थोडा अक्षरोएकरी घणा अर्थनुं कहेवुं एवुं जे द्वादशांगी रूप ते संक्षेपसामायिक जाणवुं. ते उपर लौकिकचार पं-डितनुं दृष्टान्त नीचे मुजब–

श्रीवसंतपुरनाजितशत्रु नामना राजाने एकदिवस शास्त्र सांभलवानी इच्छाथइ त्यारे चारपंडितोए लाख श्लोकना

परिमाण वालो एकेक ग्रन्थकरी राजाने जणाव्युं. राजाए कह्युंके ए चार मोटाग्रन्थो थोडाकाळमां न सांभळी शकाय, माटे ए चार मोटाग्रन्थनो जे सारहोय ते तमे थोडा अक्षरोए करीने कहो. त्यारे ते चारपंडितोए सारभूत एवा एक-श्लोकने रचीने राजाने संभळाव्यो ते आप्रमाणे–"जीर्णे भोजनमात्रेयः कपिलः प्राणिनांदया । बृहस्पतिरविश्वासः पञ्चालः स्त्रीषुमार्दवम् ॥ १ ॥ " " आत्रेय " नामा पंडित कहेछेके, प्रथम जमेलुं जीर्णथए फेरजमवुं, ए वैद्यग्रन्थनो परमार्थछे. " कपिल " नामा पंडित कहेछेके, सर्वप्राणिओनी दयाकरवी. ए धर्मशास्त्रनो परमार्थछे. " बृहस्पति " नामा पंडित कहेछेके, कोइनोपण विश्वास न करवो. ए नीतिशास्त्रनो सारछे, अने चोथो " पंचाल " नामा पंडित कहेछेके, स्त्रीयोनेविषे मृदुत्वभावधरवो पण तेनो अन्त न लेवो. ए कामशास्त्रनो रहस्यार्थछे. इति

यदुक्तंचातुर्मासिकव्याख्याने

" अथस्तोकाक्षरैर्बह्वर्थकथनंद्वादशाङ्गीरूपंसंक्षेपसामायिकंबोध्यमत्रलौकिकःपण्डितचतुष्टयदृष्टान्तोयथावसन्तपुरेजितशत्रुराजातस्यैकदाशास्त्रश्रवणेच्छासीत्तदाचतुर्भिःपण्डितैःश्लोकलक्षप्रमितमेकैकंग्रन्थंविधायनृपायनिवेदितमृनृपेणाक्तमेतेग्रन्थाअपिमहान्तानहिस्तोककालेनश्रोतुंशक्यन्तेतस्मात्स्वल्पाक्षरैरेवैतेषांसारंवदततदाचतुर्भिःपण्डितैःसारभूतमेकंश्लोकंनिष्पाद्यनृपाग्रेप्रोक्तंतथाहि-जीर्णेभोजनमात्रेयःकपिलःप्राणिनांदया ॥ बृहस्यतिरविश्वासः

पञ्चालःस्त्रीषुमार्द्दवम् ॥ १ ॥ व्याख्या–आत्रेयनामाविद्वान्वक्तिप्रथमभुक्ताहारेजीर्णेसतिपुनर्भोजनंकार्यमितिवैद्यग्रन्थपरमार्थः । कपिलपण्डितःप्राहसर्वेषांप्राणिनांदया--कार्येतिधर्मशास्त्रपरमार्थः । बृहस्पतिनामाविद्वान्वदतिकस्यापिविश्वासोनकार्यइदंनीतिशास्त्रसारम् । पञ्चालोविद्वान्ब्रूतेस्त्रीषुमृदुताधार्यापरंतासामन्तानग्राह्यइतिकामशास्त्र रहस्यमिति ”

आ उपरथी समजवानुं एटलुं छे के दरेक माणसे लंबाण वात होय ते युक्तिथी थोडाकमां कहेवी.

२९ प्रश्न–प्राणवायु विगेरे पांच वायु शरीरमां क्यां रहेछे ?

उत्तर—हृदयमां प्राणवायु छे, गुदाभागमां अपानवायु छे, नाभिमंडळमां समान वायु छे, कंठदेशमां उदानवायु छे, सर्वशरीरव्यापी व्यानवायु छे,

यदाहसुश्रुतेधन्वन्तरिः

“ हृदिप्राणोगुदेपानःसमानोनाभिमण्डले ॥
उदानःकण्ठदेशेस्याद्व्यानःसर्वशरीरगः ॥ १ ॥”

उक्त पांच वायुना अनुक्रमे पांच व्यापार छे ते नीचेना श्लोकथी समजवा.

यदाहसुश्रुतेधन्वन्तरिः

“ अन्नप्रवेशनंमूत्राद्युत्सर्गोन्नादिपाचनम् ॥
भाषणादिनिमेषाश्चतद्व्यापाराःक्रमादमी ॥ १ ॥”

३० प्रश्न–नवप्रकारे रोगोत्पत्ति थाय छे ते नव प्रकार कया ?

उत्तर—घणुं एक आसने बेसवाथी अथवा घणुं भोजन करवाथी १ अहितविषमासने बेसवाथी अथवा अहितभोजन करवाथी वा अजीर्णे भोजन करवाथी २ दिवसे घणुं उंघवाथी ३ रात्रिए घणुं जागवाथी ४ झाडो रोकवाथी ५ पेसाब रोकवाथी ६ मार्गे घणुं चालवाथी ७ प्रतिकूळभोजनकरवाथी एटले प्रकृतिने अनुचित भोजन करवाथी ८ अने कामविकारथी एटले विषयनी अप्राप्तिछतां रोगोत्पत्ति थाय अथवा विषयमां घणी आशक्ति राखेछते राजयक्ष्मवीगेरे रोगोनी उत्पत्ति थाय एम श्रीठाणंगसूत्रना नवमा ठाणामां कह्युं छे.

तथाचतत्सूत्रम्

" नवहिंठाणेहिंरोगुप्पत्तीसियातंजहाअच्चासणयाए १ अहियासणयाए २ अइनिद्दाए ३ अइजागरिएणं ४ उच्चारनिरोहेणं ५ पासवणनिरोहेणं ६ अद्धाणगमणेणं ७ भोयणपडिकूलयाए ८ इंदियथ्थकोवणयाए " विस्तरस्तट्टीकायाम् ।

तथा श्रीओघनिर्युक्तिमां श्रीभद्रबाहुस्वामी फरमावेछे के मूत्रनिरोधथी चक्षुनी हाणी थायछे. झाडाना निरोधथी जीवितनो नाश थायछे.

तद्यथा

" मुत्तनिरोहेचरकुवच्चनिरोहेयजीवियंचयइ "

वळी कोइ ठेकाणे छ प्रकारे रोग थायछे एम पण ल-
खेलुं छे.

यतः

" अत्यम्बुपानाद्विषमासनाच्चदिवाशयाज्जागरणा-
च्चरात्रौ ॥ संधारणान्मूत्रपुरीषयोश्चषड्भिःप्रकारैःप्रभव-
न्तिरोगाः ॥ १ ॥ "

आ काव्यनो भाव उक्तश्रीठाणंगसूत्रना पाठसाथे प्राए मळतो छे फक्त विशेष एटलो छे के घणुंपाणोपीवाथी पण रोग उत्पन्न थायछे. वळी श्रीराजर्षिभर्तृहरीजीपण-कहेछे के " भोगेरोगभयं " इत्यादि एमजाणी पञ्चइन्द्रि-योना कामभोगमां भव्यजीवो जो नहीं लपटाय तो घणुं करी रोगना अभावे आ शरीरवडे श्रीजैनधर्मने सुखे साधी शकशे कह्युंछे के सघळाधर्मसाधनमां मुख्यसाधन आशरीर छे. इत्यादि.

२१ प्रश्न—उत्तमवैद्य केवा लक्षणवाळो होय ?

उत्तर—"कालज्ञानविदांवरोमधुरवाक्शान्तःशुचिःशास्त्रवित्।
धीरोधर्म्मपरोनिदानचतुरोरोगप्रयोगेपटुः ॥
सन्तुष्टःसदयोपमृत्युभयहृन्मृत्युक्षणज्ञोगुणी ।
संमूढःप्रतिकारकर्मणिनयोवन्द्यःसवैद्योत्तमः ॥१॥
आयुर्वेदकृताभ्यासःसर्वज्ञःप्रियदर्शनः ॥
आयशीलःप्रसन्नात्मावैद्यएषोभिधीयते ॥ २ ॥"

ए उक्तकाव्य तथा श्लोकमां कहेलां लक्षणोवडे लक्षित होय ते उत्तमवैद्य जाणवो. विशेषाधिकारकाळज्ञानप्रमुखथी जाणवो.

१२ प्रश्न–धन्वन्तरिसमान होय तोपण पांच वैद्य न शोभे ते कया ?

उत्तर—(१) नठारापोशाकवाळो, (२) कठोरप्रकृतिवाळो, (३) अभिमाननो भरेलो, (४) पोताने आधिन थएलो, (५) बोलाव्या विना पोतानी मेळे आवेलो, उक्त आ पांच वैद्य धन्वन्तरिसमानहोय तोपण शोभाने न पामे.

यतः

" पञ्चवैद्यानशोभन्तेधन्वन्तरिसमायदि ॥
कुचेलःकर्कशःस्तब्धःस्वाधीनःस्वयमागतः ॥१॥"

इति वचनात्. ।

आठेकाणे सारलेवानो एटलोछेके, वैद्यलोकोए तेम थवुं न जोइए.

१३ प्रश्न–अढारद्रव्यादिशा तथा अढारभावदिशा केवी रीतेजाणवी ?

उत्तर—६ पूर्वादिछदिशा, ४ अग्निआदिचारविदिशा, ८ वळी चार दिशाविदिशाना आठ आंतरानी आठ बीजीविदिशा, एवी रीते कुल १८ द्रव्यदिशा जाणवी.

हवे १८ भावदिशा ते नीचे लख्या मुजब जाणवी.

१ समूर्छिमममनुष्य. २ कर्मभूमिनामनुष्य.
३ अकर्मभूमिनामनुष्य. ४ अन्तरद्वीपनामनुष्य.
५ द्वीन्द्रिय. ६ त्रीन्द्रिय.
७ चतुरिन्द्रिय. ८ पञ्चेन्द्रिय.

९ पृथ्वीकाय. १० अप्काय.
११ तेउकाय. १२ वायुकाय.
१६ वनस्पतिकायतेमूलबीज१ स्कंधबीज२ पर्वबीज३ अग्रबीज४एचार. १७ देवता.
१८ नारकी.

तथाचाहनिर्युक्तिकृत्

"मणुयातिरियाकायातहग्गबीयाचउक्कगाचउरो ॥
देवानेरइयावाअठ्ठारसहुंतिभावदिसा ॥ १ ॥"

एवी रीते १८ भावदिशा कही छे तेनुं कारण एज के जीव एटले ठेकाणे संसारमां रोळाय छे माटे विचार करे के हुं कइ दिशाएथी (एटले कइ गतिथी) आव्यो इत्यादि विचार करे ने संसारथी विमुख थाय. विशेषाधिकार श्री आचाराङ्गसूत्रनी टीकामां कह्यो छे ते त्यांथी जोवो.

३४ प्रश्न–श्रेणीकराजानुं "भंभासार" नाम शाथी ?

उत्तर—राजगृहमां अग्निलागवाथी तेणे कुमारअवस्थामां भंभाने (जयढक्काने) सारभूत जाणी बळताघरथी बहारकाढी ते जोइ तेमना पीताश्रीए "भंभासार" एवुं नामपाड्युंएम

---

१ कमळ वीगेरे २ सल्लकी वीगेरे ३ सेलडी वीगेरे ४ कुरंटवृक्ष वीगेरे यतः "कुरंटाद्याअग्रबीजा मूलजास्तूत्पलादयः ॥ पर्व्वयोनयइक्ष्वाद्याः स्कंधजाःसल्लकीमुखाः ॥ १ ॥" इत्यभिधानचिन्तामणिवचनात्.

श्रीठाणांगजीनी टीकामां कह्युं छे तेमज श्रीहेमचन्द्राचार्यकृत नाममाळानी अवचूरिमां पण कह्युं छे.

३५ प्रश्न—अधोलोकमां एक समये केटला सिद्ध थाय ?

उत्तर—(२०) सिद्ध थाय, एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रना "जीवाजीवविभक्ति" नामना अध्ययनमां कह्युं छे.

(२२) सिद्ध थाय एम संग्रहणीसूत्रमां कह्युं छे.

(४०) सिद्ध थाय, एम सिद्धप्राभृतमां कह्युं छे.

यदुक्तंश्रीलोकप्रकाशे

"विंशतिर्द्वाविंशतिश्चचत्वारिंशदितिस्फुटम् ॥
उत्तराध्ययनेसंग्रहण्याञ्चसिद्धप्राभृते ॥ १ ॥
वीसअहेतहेवेतिश्रीउत्तराध्ययनेजीवाजीवविभक्त्यध्ययने । उड्ढहोतिरियलोएचउबावीसट्ठसयइतिसंग्रहण्याम् । वीसपुहुत्तंअहोलोए इतिसिद्धप्राभृतेतट्टीकायांविंशतिपृथक्त्वंद्वेविंशतिरिति"

३६ प्रश्न—१४ पूर्वना प्रमाणमां १६३८३ हाथी कह्याछे ते हाथी कया क्षेत्रना लेवा ?

उत्तर—महाविदेहक्षेत्रनालेवा. कारणके त्याना हाथीओने सदा एकअवस्थितपणुंछे एम श्रीप्रश्नचिन्तामणिमां पंडितश्रीवीरविजयजी महाराजे कहेलुंछे.

३७ प्रश्न—भव्य, अभव्यादिसर्वजीवनी मूलभूमिका कइ समजवी ?

उत्तर—जे सूक्ष्मनिगोदछे ते सर्वजीवनी मूलभूमिका जाणवी. साथीके कालस्वभावे अकामनिर्जरा करी सर्वे जीवो प्रथम त्यांथी

नीकलेछे अने ते सूक्ष्मनिगोदनुं अल्पस्वरूप पूर्वे लखेलुंछे. इति,

३८ प्रश्न-गोशाले महावीरस्वामिउपर तेजोलेश्या मेली तेतेजोलेश्यानी शक्ति केवीहती ?

उत्तर—हे आर्य हे गौतम मारा वधनिमित्ते गोशाले जे तेजोलेश्या मेली ते अंगदेश, वंगदेश, मगधदेश, मलयदेश, इत्यादि मोटा १६ देशने नाश करवाने अत्यन्तशक्तिवाली हती इत्यादि श्रीमहावीरस्वामिजीए श्रीभगवतीसूत्रमां गौतमना प्रत्ये कहेलुंछे.

तथाचतत्सूत्रम्

" जावइएणंअज्जोगोसालेणंमंखलिपुत्तेणममंवहाएसरीरगंसितेयंणिसठेसेणंअलाहिपज्जतेसोलसन्हंजणवयाणंतंजहाअंगाणंवंगाणंमगहाणंमलयाणंमालवगाणंअच्छाणंवच्छाणंकोच्छाणंपाढाणंलाढाणंवज्जीणंमालीणंकासीणंकोसलगाणंअवाहाणंसभुत्तराणंघाताएवहाएउच्छादणठाएभासीकरगाए " इति. विस्तरस्तट्टीकायाम्.

३९ प्रश्न-साकार तथा निराकार उपयोगनो काळ केटलो ?

उत्तर-छद्मस्थजीवोने प्रथम निराकार उपयोग होय, पछी साकार उपयोग होय, अने ते दरेक उपयोगनो अन्तर्मुहूर्त्तकाळ कह्यो छे परन्तु अनाकारउपयोगथी साकारउपयोग सं-

---

१ साकारोपयोग ते विशेषात्मकज्ञानोपयोगजाणवो. अनेनिराकारोपयोग ते सामान्यात्मकदर्शनोपयोगजाणवो.

ख्यातगुणो जाणवो. कारण के सचेतन, अचेतनवस्तुपर्याय परिच्छेदकपणेकरी तेमां वधारे वखत लागेछे तेमज छद्मस्थ जीवोनो तथाप्रकारनो तेवो स्वभाव छे. अने केवलिभगवानने ते दरेक उपयोग एकसमयनोजछे. शाथी के ते भगवान् समयवेदीछे. तेमने प्रथमसमयेसाकारउपयोगहोयछे अने बीजेसमये निराकारउपयोगहोयछे एम समयान्तरवात जाणवी. अत्रबहुमतछे ते श्रीनंदीसूत्रनी टीका वीगेरे जोवाथीसमजाशे.

४० प्रश्न–स्त्री सातमीनरकपृथ्वीविषे तथा सर्वार्थसिद्धविषे जाय ?

उत्तर—सातमीनरकपृथ्वीविषे न जाय पण सर्वार्थसिद्धविषेतो जाय. एम श्रीपन्नवणासूत्रना कर्मप्रकृतिनामा त्रेविशमापदनी टीकापरथी कही शकायछे.

तथाचतट्टीका

" मानुषीतुसप्तमनारकपृथ्वीयोग्यमायुर्नबध्नाति । अनुत्तरसुरायुस्तुबध्नातीति "

वळी अत्र दृष्टान्ततरीके पृथ्वीचन्द्रराजानी पूर्वभवनी स्त्रीओ सर्वार्थसिद्धे जइमनुष्यपणानेपामी सिद्धथएलीओछे. एमपृथ्वीचन्द्रचरित्रमां कहेलछे. तेमज अष्टप्रकारिपूजा चरित्रमां " कनकमाला " सर्वार्थसिद्धेगइ एमकहेलुंछे. वळी श्रीविजयचन्द्रचरित्रमां पण नीचेलख्या मुजबकहेलुंछे.

तद्यथा

" सासग्गाओचविउंएत्थविजम्मंमितुहसहीहोइत-तोमरिउंतुम्पेसवट्ठेदोविदेवत्ति "

सर्वार्थसिद्धेजवासंबंधीमां इत्यादिघणादृष्टान्तोछे.

४१ प्रश्न–दरेकमाणसे व्याख्यान केवीरीते सांभळवुं ?

उत्तर–निद्रा, विकथानो त्यागकरीने, गुप्तिएसहित, हाथजोडीने, भक्तिबहुमानपूर्वक, उपयोगराखीने सांभळवुं.

यदुक्तंपञ्चवस्तुके

"णिद्दाविगहापरिवज्जिएहिंगुत्तेहिंपंजलिउडेहिं ॥
भत्तिबहुमाणपूवंउवउत्तेहिंसुणेयवं ॥ १ ॥"

इत्युक्तप्रमाणे सांभळवाथी अनन्तरप्रयोजन जे ग्रन्थसंबंधी-हेयोपादेयज्ञान, ते सिद्धथायछे अने तेथी परम्परप्रयोजन जे मोक्ष तेपण सिद्धथायछे. वळी ज्ञानवंतश्रोतापासे वक्तापुरुषनी व्याख्यानकला प्रमाणगणायछे इत्यादिपरस्पर घणागुण उत्पन्नथायछे. नहींतोभेंसआगळभागवत वांचवाजेवुं थायछे. अथवा " अंधाआगळ आरसी, बहेरा आगळ गीत, मूर्खआगळ रसकथा, एत्रण एकजरीत ॥१॥" इत्यादिन्यायसंपादन थायछे. किंबहुनेत्यलम्.

४२ प्रश्न–जमालिनापितानुंनाम कोइपण शास्त्रमां देखातुंनथी एमकेटलाक कहेछे तेनुंकेम ?

उत्तर—" साचप्रवरनरपतिसुतस्य स्वभागिनेयस्य जमालेः परिणायिता " आवा श्रीकल्पकिरणावलीना तथा कल्पसुबो-

---

१ सातविकथातेआप्रमाणे–स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा, देशकथा, मृदुकारुणीकथा, दर्शनभेदिनीकथा, चारित्रभेदिनीकथा, आसांस्वरूपन्तु श्रीस्थाङ्गसूत्रटीकातोवधार्यम्.

२ भगवत्पुत्री.

धिकाना स्पष्टपाठपरथी सिद्धथायछेके, जमालिनापीताश्री नुंनाम " प्रवरनरपति " हतुं. वळीश्रीकल्पसूत्रनी टीकाओ तो वर्षमांएकवार वचायजछे. सांभळनारपण सांभळेजछे तेम छतां कोइ शास्त्रमांजमालिना पितानुंनाम देखातुंनथी, एम जे कहेनाराओछे तेओ अहा. हस्तमध्यगतछतीवस्तुने नहीं-जाणनाराओछे. एमसंभवनाथायछे. वळी केटलाक "अमुक वातमां " विचारकर्याविना एकदमबोलीउठेछेके, ते वात कोइशास्त्रमांनथी इत्यादि, पणतेम न बोलवुंजोइए. शाथीके पूज्यपादमहामहोपाध्यायश्रीयशोविजयजीजेवान्यायविशार-दमहापंडितषड्दर्शनशास्त्रवेत्ता ते पण एमकहेछेके, " शास्त्रघणामतिथोडलीशिष्टकहेतेप्रमाण" इत्यादि

४३ प्रश्न—युद्धमां " महारथ " कोनेकहीए ?

उत्तर—शस्त्रविषे तथा शास्त्रविषे प्रविणथयोथको अगीयारहजारध-नुर्धरप्रत्ये युद्धकरेते " महारथ " जाणवो.

यतः

" एकादशसहस्राणियोधयेद्यस्तुधन्विनाम् ॥
शस्त्रशास्त्रप्रविणश्चविज्ञेयःसमहारथः ॥ १ ॥ "

इतिवचनात्.

४४ प्रश्न—श्रेयांसकुमार कयामहाराजाना पुत्रजाणवा ?

उत्तर—भरतमहाराजानापुत्र जाणवा. अहीं बीजाएम कहेछेके बाहुबलिराजानापुत्रसोमप्रभ तेमनापुत्र श्रेयांसजाणवा.

यदुक्तंश्रीआवश्यकचूर्णौ

" भरहस्सपुत्तोसेज्जंसोअणेभणंतिबाहुबलिस्ससु-तोसोमप्पभोतस्सपुत्तोसेयंसोयत्ति "

४५ प्रश्न—पंचमीदेववंदनविधिमां " निद्रास्वप्नजागरदशा तेस-
विदूरेहोवे ॥ चोथीउज्जागरदशातेहनो अनुभवजोवे ॥१॥ "
आवी एकगाथाछे तेनो शोभावार्थछे. ?

उत्तर—चेतनानी चारदशा (अवस्था) कहीछे, तेमांपहेली निद्रा-अवस्था, प्रथमनात्रण गुणठाणे जाणवी, बीजी स्वप्नअवस्था, चोथे, पांचमे, अनेछठे एमत्रणगुणठाणे छे. त्रीजी जागरदशा, सातमागुणठाणाथी मांडी यावत् बारमागुणठाणा सुधीरहीछे. अने चोथी उज्जागरदशा, तेतोसयोगि अनेअयोगि एबे गुणठाणेजाणवी. उक्तरीते चेतनानी चारअवस्था कहेवाथी अत्रेएमसमजवानुंछेके श्रीजिनभगवान् केवलज्ञाननेपामी चोथीउज्जागरदशाने अनुभवेछे, पणप्रथमनी त्रणदशाने अनुभवतानथी एत्रणदशातो प्रथमथीजदूरथइजायछे. उक्तगाथानो भावार्थ अमने आप्रमाणेजाणवामांछे विशेषपछीगीतार्थ कहेते खरुं.

४६ प्रश्न—" वरवर्णिनी " स्त्रीकइजाणवी ?

उत्तर—" शीते[1]सुखोष्णसर्वाङ्गीग्रीष्मे[2]यासुखशीतला ।
भर्तृभक्ताचयानारीविज्ञेयावरवर्णिनी ॥ १ ॥ "

इतिरुद्रश्लोकोक्तलक्षणवाली "वरवर्णिनी" स्त्रीजाणवी.

४७ प्रश्न—"न्यग्रोधपरिमंडला" शब्द, केवालक्षणवाळो नारीविषे जाणवो ?

उत्तर—"स्तनौसुकठिनौयस्यानितम्बे[3]चविशालता ॥
मध्येक्षीणाभवेद्यासान्यग्रोधपरिमंडला ॥ १ ॥"

इतिशब्दस्तोममहानिधिगतश्लोकोक्तलक्षणवालीनारीविषे जाणवो अर्थात् शब्दसोममहानिधिकोशगत श्लोकोक्तलक्षणवालीजेस्त्रीते " न्यग्रोधपरिमंडला " कहेवाय.

---

१ शीतकाले. २ उष्णकाले. ३ पश्चात्कटयधोभागे.

४८ प्रश्न—अक्षौहिणी तथामहाक्षौहिणीनुं शुंप्रमाणछे ?

उत्तर—२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडा, १०९३५० पदाति, सर्वसंख्या २१८७०० आटलुं प्रमाणएकअक्षौहिणीनुं जाणवुं.

यदुक्तंवाचस्पत्ये

"अक्षौहिण्यामित्यधिकैःसप्तत्याह्यष्टभिःशतैः ॥
संयुक्तानिसहस्राणिगजानामेकविंशतिः ॥ १ ॥
एवमेवरथानान्तुसंख्यानंकीर्त्तितंबुधैः ॥
पञ्चषष्टिःसहस्राणिषट्शतानिदशैवतु ॥ २ ॥
संख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विनारथतुरङ्गमैः ॥
नृणाशतसहस्राणिसहस्राणितथानव ॥ ३ ॥
शतानित्रीणिचान्यानिपञ्चाशच्चपदातयः ॥"

तथाभारतेपि

"अक्षौहिण्याप्रमाणन्तुखांगाष्टैकद्विकैर्गजैः ॥
रथैरतैर्हयैस्त्रिघ्नैःपञ्चघ्नैश्चपदातिभिः ॥१॥" इति

अने १३२१२४९०० आटलुं प्रमाण एक महाक्षौहिणीनुं जाणवुं.

यदुक्तम्.

"खद्वयं००निधि९वेदा४क्षि२चन्द्रा१क्ष्य२ग्नि३हिमांशुभिः१॥
महाक्षौहिणिकाप्रोक्तासंख्यागणितकोविदैः ॥ १ ॥"इति

४९ प्रश्न—स्त्यानर्द्धिनिद्रावालाने वासुदेवना बलथी अर्द्धबल जे कह्युं छे ते बलआजकाले होयके न होय ?

उत्तर—हालभरतक्षेत्रमां तेनेतेटलुं बलनहोय प्रथमसंहननवालानेज तेटलुं बलतो कह्युंछे, हालतो सामान्यलोकनाबलथी बमणुंवा त्रगणुंवा चोगणुंबलहोय अधिक न होयएम श्रीनिशीथचूर्णिनी पीठिकानावचनथी तेमज श्रीबृहत्कल्पनात्रीजाखंडना वचनथी जाणवुं अने श्रीजित्कल्पवृत्तिमांतो प्रथमसंहननवालानेज स्त्यानर्द्धिनिद्राहोय एमनिर्णयकरेलोछे इत्यादि

यदुक्तंप्रश्नोत्तरसार्द्धशतके

"ननुस्त्यानर्द्धिनिद्रावतोजीवस्ययद्वासुदेवबलादर्द्धबलं-शास्त्रउक्तमस्तितदस्मिन्कालेविद्यतेनवा ॥ उच्यतेनास्तीह क्षेत्रेसांप्रतंतस्यतद्बलंप्रथमसंहनानिनएवतदुक्तत्वात् ॥ सांप्रतन्तुसामान्यलाकबलाद्द्विगुणंत्रिगुणंचतुर्गुणंवातस्य-बलंभवतिनाधिकमितिनिशीथचूर्णिपीठिकावचनाज्ज्ञेयमे वंबृहत्कल्पतृतीयखंडेपिबोध्यम् ॥ जीतकल्पवृत्तौतुयदुद-येतिसंक्लिष्टपरिणामाद्दिनदृष्टमर्थमुथ्थायरात्रौप्रसाध्यतिके-शवार्द्धबलश्चजायते । तदनुदयेपिचसशेषपुरुषेभ्यस्त्रिच-तुर्गुणबलोभवति। इयञ्चनिद्राप्रथमसंहननिनएवभवतीत्यु-क्तमस्तीतिस्त्यानर्द्धिनिद्रावतोबलभेदादिविचारः"

५० प्रश्न—नारकजीवोने मेहू सत्ता होय के ?

उत्तर—छिन्नपादभुजस्कंधाः छिन्नकर्णोष्टनाशिकाः ॥
छिन्नतालुशिरोमेढ्रा[1] भिन्नाक्षिहृदयोदराः ॥ १ ॥"

इतिश्रीसूत्रकृताङ्गसूत्रटीकान्तर्गतश्लोकपरथी सावीत थाय छे के, नारकजीवोने मेढ्रसत्ता होय.

शङ्का—नारकजीवोने तो नपुंसकपणुं छे.

समाधान—नपुंसकपणुंछतेपण मेढ्रसत्ताविषे कोइ जातनो विरोध आवतो नथी.

यतः

" महिलासहावोसरवन्नभेओ ॥
मेढ्रंमहंतंमउआयवाणी ॥
ससद्दयंमुत्तमफेणयंच ॥
एयाणिछपंडगलरकणाणि ॥१॥" इत्युक्तत्वात्

५१प्रश्न—"कःखेभातिहतोनिशाचरपतिः केनाम्बुधौमज्जितः।
कः कीदृक्तरुणीविलासगमनांकिंकुर्वतेसज्जनाः ॥
किंपत्रंनृपतेः किमर्जुनधनुः कोरामरामापहृत् ।
मत्प्रश्नोत्तरमध्यमाक्षरपदंभूयात्तवाशीर्वचः ॥ १ ॥"

आ काव्यथी शुं समजाय छे ?

उत्तर—आ काव्यमां आठ प्रश्नो छे, ते आठ प्रश्नप्रत्युत्तरोना मध्यअक्षरपदवडेकरी "हेमेनाथचिरंजीव" एवास्वरूपवाळो कोइए कोइना प्रत्ये आपेलो आशीर्वाद समजाय छे, तेनी वीगत नीचे प्रमाणे—

---

१ मेढ्रः पुंश्चिन्हम्.

ग्र	हे	शः
रा	मे	ण
मै	ना	कः
मं	थ	रं
रु	चि	रं
तु	रं	गः
गां	जी	वं
रा	व	णः

प्र० १–कः[1]खेभाति? उ०–ग्रहेशः[2] मध्यअक्षर–हे–लेवो.

प्र० २–केन[3]निशाचरपतिर्हतः? उ०–रामेण[4], मध्य अक्षर–मे–लेवो.

प्र० ३–अंबुधौ[5]कोमाज्जितः ? उ० मैनाकः[6], मध्य अक्षर–ना–लेवो.

प्र० ४–कीदृक्[7]तरुणीविलासगमनम् ? उ०–मंथरं[8], मध्यअक्षर–थ–लेवो.

प्र० ५–सज्जनाः[9] किंकुर्वते ? उ०–रुचिरं[10], मध्य अक्षर–चि–लेवो.

प्र० ६–नृपतेः[11] किंपत्रम् ? उ०–तुरंगः[12], मध्य अक्षर–रं–लेवो.

प्र० ७–किमर्जुन[13]धनुः ? उ०–गांजीवं[14], मध्यअक्षर–जी–लेवो.

प्र० ८–कोरामरामापहृत्[15] ? उ०–रावणः[16], मध्य अक्षर–व–लेवो एवी रीते आठ प्रश्नोत्तरोना मध्य अक्षरो लेवाथी "हेमेनाथ[17]चिरंजीव" एवुं आठ अक्षरात्मक पदवाळुं आशीर्वचन प्रगट समजवामां आवे छे अत्र सुखावबोधार्थेयंत्र लखीए छीए,

---

१ आकाशमां कोण शोभेछे २ चंद्र ३ कोणे रावण मार्यो ४ रामे ५ समुद्रमां कोण डुबाएलो छे ६ मैनाकनामा पर्वत ७ केवा प्रकारनुं यौवनवती स्त्रीओनुं विलासगमन ८ मंद ९ सज्जन माणसो शुं करे १० सारुं करे ११ राजानुं वाहन शुं१२ घोडो १३ अर्जुननुं धनुष कयुं १४ गांजीव १५ रामस्त्रीसीतानुं हरण करनार कोण १६ रावग १७ हे मारानाथ चिरंजीव.

५२ प्रश्न—एकसमयमां बे क्रियाहोय ?

उत्तर—एकसमयमां बे उपयोगनहोय, क्रियातोघणीपणहोय दृष्टान्ततरीके कोइनर्त्तकी भ्रमणादिनृत्यने करतीथकी एकसमयमां पणहस्तपादादिगतविचित्रक्रियाकरतीदेखायछे, वळीसर्वे वस्तुओनो पण प्रत्येके एक समयमां उत्पादव्यय थायछे तेमज वळीएकजसमयमां संघातपरिसाटपणथायछे,

यदाहभाष्यकृत्

" समएदोउवयोगानहोज्जकिरियाणकोदोसो "

इत्यलम्विस्तरेण

५३ प्रश्न—रजोहरणशब्दनोशो अर्थछे ?

उत्तर—जीवोनीबाह्यरज अने अभ्यन्तररजनेहरेछे तेकारणेकरीने रजोहरण कहेवायछे.

यदुक्तंपञ्चवस्तुके

" हरइरयंजीवाणंबज्झंअभ्भंतरंचजंतेणरयहरणंतिपवुच्चइ "

तट्टीका

"रजोजीवानांबाह्यंपृथिवीरजःप्रभृतिकमभ्यन्तरञ्चबध्यमानकर्म्मरूपंहरत्यपनयतियस्मात्तेनकारणेनरजोहरणमितिप्रोच्यते "

५४ प्रश्न—कोने पामीने सर्प्पो विषरहित थायछे ?

उत्तर—एमसंभळाय छे के वेतसने पामीने सर्प्पो विषविनाना थइजायछे.

यदुक्तंश्रीदशवैकालिकवृहद्वृत्तौ

"एवंहिश्रूयतेकिलवेतंसमवाप्यनिर्विषाभवन्तिसर्प्पाः"

९९ प्रश्न–जे छंदना दरेक चरणमां पेलो, बीजो, चोथो, आठमो, अगीयारमो, तेरमो, अने चौदमो, ए सात अक्षर गुरु होय. अने ते सीबायना बीजा सात अक्षर हूस्व होय तो ते छंद कयो जाणवो ?

उत्तर–ते छंद "वसन्ततिलका" जाणवो.

यदाहकालिदासकविःश्रुतबोधे

"आद्यंद्वितीयमपिचेद्गुरुतच्चतुर्थम्
यत्राष्टमञ्चदशमान्त्यमुपान्त्यमन्त्यम् ॥
कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतंगजेन्द्रे
कान्तेवसन्ततिलकांकिलतांवदन्ति ॥ १ ॥"

वळी वसन्ततिलकाछंदने काश्यपनामनामुनि "सिंहोद्धता" कहेछे, शैतवनामनामुनि "उद्धर्षिणी" कहेछे. अने पिङ्गळनामनामुनि "मधुमाधवी" कहेछे. एम तेना नामान्तर पण छे.

तथाचाहवृत्तरत्नाकरेकेदारभट्टः

"उक्तावसन्ततिलकातं[2]भजाजगौगः
सिंहोद्धतेयमुदितामुनिकाश्यपेन ॥

---

१ वानीरम् वृक्षविशेषम्.

२ त–भ–ज–जागणागुरूचेति वसन्ततिलका.

उद्धर्षिणीतिगदितामुनिशैतवेन
श्रीपिङ्गलेनकथितामधुमाधवीति ॥ १ ॥

श्रीभक्तामर, कल्याणमन्दिर वसन्ततिलकांछदमां रचेला छे, अने ते महा चमत्कारी छे अत्र प्रस्तावने लीधे आटली अधिक वात आत्महितार्थिजैनबंधुओने लखी जणावी छे.

५६ प्रश्न—छंदशास्त्रमां केटलागण छे अने ते दरेकगण केटला अक्षरवाळो होयछे ?

उत्तर—मगण—यगण—रगण—सगण—तगण—जगण—भगण—नगण—आवा आठ गण छे अने तेमां दरेक गण त्रण अक्षरवाळो होयछे तेनी वीगत नीचे प्रमाणे—

१ जे ' मगण ' छे ते त्रणे गुरु अक्षरवाळो छे.

२ जे ' यगण ' छे ते आद्यमां एक लघु बीजा बे गुरु एवा त्रण अक्षरवाळो छे.

३ जे ' रगण ' छे ते आदिअन्तमां गुरु अने मध्ये लघु एवा त्रण अक्षरवाळो छे.

४ जे ' सगण ' छे ते आदि मध्यमां लघु अने अन्तमां गुरु एवा त्रण अ०

५ जे ' तगण ' छे ते आदि मध्यमां गुरु अने अन्तमां लघु एवा त्रण अ०

६ जे ' जगण ' छे ते आदि अन्तमां लघु अने मध्यमां गुरु एवा त्रण अ०

७ जे ' भगण ' छे ते आद्यमां गुरु अने बीजा बे लघु एवा त्रण अ०

८ जे ' नगण ' छे ते त्रणे लघु अक्षरवाळो छे.

यदुक्तंवृत्तरत्नाकरे

"सर्वगुर्मोमुखान्तलौयरावन्तगलौसतौ ॥
ग्मध्याद्यौज्भौत्रिलोनोष्टौभवन्त्यत्रगणास्त्रिकाः॥१॥"

इति. स्थापनाचेयम्–'धीश्रीस्त्री' 'वरासा' 'कागुहा' (म० य० र०)

'वसुधा' 'सातेक' 'कदाच' 'किंवद्' 'नहस' (स० त० ज० भ० न)

अने वृत्तरत्नाकरनी टीकामां तो अन्यकर्तृकएककाव्यवडे करी आठगणनाम तथा तेना देवता, फळ, अने स्वरूप बतावेलां छे.

तद्यथा

"मोभूमिस्त्रिगुरुःश्रियंदिशतियोवृद्धिंजलंचादिलो ।
रोग्निर्मध्यलघुर्विनाशमनिलोदेशाटनंसोन्त्यगः ॥
तोव्योमान्तलघुर्धनापहरणंजोर्कोरुजंमध्यगो ।
भश्चन्द्रोयशउज्ज्वलंमुखगुरुर्नोनाकआयुस्त्रिलः॥१॥"

इति.

स्वरूपपूर्वोक्तप्रमाणेछे. अत्र फक्त गणनाम देवता तथा फळ जणाववा नीचे मुजब यंत्र करी बतावीए छीए.

	गणनाम.	देवता.	फळ.
१	मगण.	भूमि.	लक्ष्मी.
२	यगण.	जळ.	वृद्धि.
३	रगण.	अग्नि.	विनाश.
४	सगण.	वायु.	देशाटन.
५	तगण.	आकाश.	धनापहरण.
६	जगण.	सूर्य.	रोग.
७	भगण.	चन्द्रमा.	उज्ज्वलयश.
८	नगण.	नाक.	आयु.

अत्र तात्पर्यार्थ ए छे के कविता करनार पुरुषे शुभाशुभ गणनी बरोबर खबर राखवी. आ संबंधी विस्तार वात वृत्तरत्नाकरनी टीकामां छे ते त्यांथी जोइ लेवी शाथी के वधारे समजवामां आवे तेम छे.

५७ प्रश्न–" द्वन्द्वश्चप्राणितूर्यसेनाङ्गानां " ए सूत्रवडे करी एकवद्भाव थायछे, तो कल्पकिरणावळीमां तथा दीपिकामां " प्रतिपूर्णानांपाणिपादानां " एवो प्रयोग केम राख्यो हशे ?

उत्तर—एकवद्भाव नित्य नहीं थतो होय तेथी तेवो प्रयोग राख्यो हशे,जुओ के श्रीधनेश्वरसूरिकृतश्रीशत्रुञ्जयमाहात्म्यमां " गजवाजिरथैर्घनैः " इत्यादि प्रयोगो छे, वळी श्रीहैमऋषभचरित्रमां पण "अङ्गुष्ठाङ्गुलयःशोणाः" आवो प्रयोगछे. तेमज सारस्वतप्रसादटीकामां पण नीचे लख्या मुजब लेखछे.

" लक्षणहेत्वोरितिसूत्रेमुखनाशिकाभ्यामितिभाष्ये-चप्रयोगाज्ज्ञापकादेकवद्भावानित्यत्वमतएव 'ग्रीवाकुक्षि-ललाटेषुनित्यंस्वेदःप्रशस्यते' 'पातितैरथनागाश्वैः इत्यादि-प्रयोगाः "–किम्बहुनेत्यलम्.

अत्र बहुश्रुत कहे ते खरुं.

५८ प्रश्न–केटलापल्योपमे एकसागरोपमथाय ?

उत्तर—दशकोडाकोडी पल्योपमे एकसागरोपम थायछे.

तथाचाहनवतत्त्वावचूरिः

" सागरोपमंदशकोटाकोटीपल्योपमप्रमाणम् "

५९ प्रश्न–आहारकशरीर कोने कहीए ?

उत्तर—जेमांचौद पूर्वधारी पोतानोसंदेह छेदवाने अथवातीर्थंकरनी ऋद्धिजोवाने अर्थे महाविदेहक्षेत्रमां जवाने एकहाथप्रमाणनुं अतिविशिष्टरूपवाळुं शरीरकरे ते आहारकशरीर कहेवायछे.

यदाहनवतत्त्वावचूरिः

"आहारकशरीरंयत्रचतुर्दशपूर्वधरैःसन्देहोच्छेदाय-तीर्थंकरऋद्धिदर्शनायवामहाविदेहगमनार्थमेकहस्तप्रमा-णात्यन्तविशिष्टरूपसम्पन्नंविधीयतेशरीरंतदाहारकशरीरम्'

६० प्रश्न–द्रव्यश्रुत अने भावश्रुत कोनेकहीए ?

उत्तर—द्वादशांगीजेनुं लक्षणछे ते द्रव्यश्रुत, अने जेद्वादशांगीथी उत्पन्नथएल उपयोगरूपते भावश्रुत कहेवायछे, एमनवत-त्त्वनो अवचूरिमां कह्युंछे.

तद्यथा

" द्रव्यश्रुतंद्वादशांगीलक्षणंभावश्रुतंद्वादशांगीसमुत्पन्नोपयोगरूपम् "

६१ प्रश्न–गुणहेतु तथा भवहेतु अवधिज्ञान कोनेथाय ?

उत्तर—देवताअने नारकीने भवहेतु अवधिज्ञान थायछे. अनेश्रावक तथासाधुने गुणहेतु अवधिज्ञान थायछे.

यदुक्तम्.

"अवधिज्ञानंद्विप्रकारंगुणहेतुकंभवहेतुकंचदेवनारकाणां भवहेतुकंश्राद्धसाधूनांगुणहेतुकंस्यात "

६२ प्रश्न–ज्ञानअने दर्शनमां शो भेदछे ?

उत्तर—घटपटादिसमूहना सामान्य आकारनुं जेथी ज्ञानथाय ते दर्शनजाणवुं अने पदार्थना विशेषआकारस्वरूपनुं जेथी परिज्ञानथायते ज्ञानजाणवुं. आप्रमाणे ज्ञानअने दर्शननालक्षणमांभेदछे. एवुंनवतत्त्वावचूरिमां कथनछे.

तद्यथा

"घटपटादिसार्थसामान्याकारपरिज्ञानंदर्शनंज्ञातव्यम्. पदार्थविशेषाकारपरिज्ञानंपुनर्ज्ञानंज्ञातव्यमयमेवज्ञान दर्शनयोर्भेदः "

६३ प्रश्न–प्रज्ञापरीषह, अने अज्ञानपरीषहनुं स्वरूपकहो ?

उत्तर—बहुज्ञानहोयतोपण पोतानामनमां गर्व न करवो ते प्रज्ञापरीषहकहेवायछे. अने ज्ञानावरणीयकर्मनाउदयथी कादिभणे-

तोपणपाठ आवडेनहीं, तथापिमनमां दुःख लाववुंनहींपण पोतानाकर्मनोतेवो विपाकज चिंतववो ते अज्ञानपरीषह, कहेवायछे.

यदुक्तंनवतत्त्वावचूरिकायाम्

" प्रज्ञापरिषहः। बहुज्ञानसंभवेप्यात्मीयचित्तेगर्वोनकार्यः ॥ अज्ञानपरिषहः। ज्ञानावरणीयकर्मोदयात्पठतामपि पाठोनागच्छतितथापिदुःखंमनसिनकार्यंकिन्तुकर्मविपाकएवचिन्त्यः "

६४ प्रश्न—मनुष्यलोकमां चन्द्र तथा सूर्य केटलाछे ?

उत्तर—१३२ चन्द्रछे तेमज १३२ सूर्यछे तेनीवीगत नीचे प्र०

जम्बूद्वीपमां	२	चन्द्र	२	सूर्य.
लवणसमुद्रमां	४	चन्द्र	४	सूर्य.
धातकीखंडमां	१२	चन्द्र	१२	सूर्य.
कालोदधिमां	४२	चन्द्र	४२	सूर्य.
पुष्करार्द्धमां	७२	चन्द्र	७२	सूर्य.

एवीरीतेसर्वे मली १३२ चंद्र अने १३२सूर्य मनुष्यलोकमाछे,

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे

" तत्रजम्बूद्वीपेमुष्मिन्द्वौचन्द्रौद्वौचभास्करौ ॥
लवणोदेचचत्वारश्चन्द्रादिनकरास्तथा ॥ १ ॥
द्वादशधातकीखण्डेचन्द्राद्वादशभास्कराः ॥
कालोदेद्विचत्वारिंशचन्द्रादिनकरास्तथा ॥ २ ॥

द्वासप्ततिपुष्करार्द्धेचन्द्राश्चरवयोपिच ॥
एवंद्वात्रिंशमिन्दूनांशतंदिनकृतांतथा ॥ ३ ॥”

६५ प्रश्न–धातकीखण्डना तथा पुष्करार्द्धना चारमेरु केवडाछे.

उत्तर—जम्बूद्वीपना मेरुथी पंदरहजार योजननानाछे अर्थात् तेनाना चारमेरु ८५००० योजनना छे.

यदुक्तंश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे
“चत्वारोमेरवःक्षुद्राधातकीपुष्करार्द्धयोः ॥
योजनानांपञ्चदशसहस्त्र्यामेरुतो[1]र्णवः ॥ १ ॥”

६६ प्रश्न–पांच अनुत्तर विमान कइदिशाए जाणवां ?

उत्तर—पूर्वदिशाए विजयविमान छे. दक्षिणदिशाए वैजयंतविमान छे. पश्चिमदिशाए जयंतविमानछे. उत्तरदिशाए अपराजित-विमान छे. अने ए चार विमाननी मध्ये सर्वार्थसिद्ध विमान छे.

तथाहिश्रीत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रे
“विजयंवैजयन्तञ्चजयन्तञ्चापराजितम् ॥
प्राक्क्रमेणविमानानिमध्येसर्वार्थसिद्धकम् ॥ १ ॥”

६७ प्रश्न–श्रीजिनभवन, पौषधशाळा, अने ज्ञानभंडार, वीगेरे कोणे कोणे कराव्यां ते विषे थोडो अधिकार कहो.

उत्तर—१–पूर्वे श्रीभरतचक्रवर्त्ति वीगेरे महापुरुषोए श्रीसिद्धाचळ वीगेरे उत्तम तीर्थोपर घणा भव्य जिनमंदिरो कराव्यां छे. तेवो अधिकार श्रीशत्रुंजयमाहात्म्य वीगेरे जैनशास्त्रोमांछे.

---

१ लघवः

२–तथा मगधदेशनाराजा श्रीश्रेणिकमहाराजाए श्रीजिनमंदिरो कराव्यां छे. ते अधिकार श्रीआवश्यकसूत्रमां तथा श्रीहेमचंद्राचार्यकृतश्रीयोगशास्त्रमां छे.

३–तथा श्रीराजगृहीनगरीना शेठ श्रीशालिभद्रना पिताश्रीए पोताना घरमां सुशोभित श्रीजिनमंदिर कराव्युं छे, ते वात श्रीशालिभद्रचरित्रमां छे.

४–तथा प्रभावतीराणीए पोताना अंतःपुरमां श्रीजिनमंदिर बंधाव्युं छे. ते वीगेरे अधिकार श्रीआवश्यकसूत्रमांछे.

५–तथा वागुरश्रावके श्रीपुरिमतालनगरमां श्रीमल्लिनाथमहाराजनुं मंदिर कराव्युं छे ते अधिकार श्रीआवश्यकसूत्रमां छे.

६–तथा [१]दशपूर्वधरश्रीआर्यसुहस्तिसूरिजीना प्रतिबोधथी संप्रतिराजाए सवालाख नवीनजिन प्रासाद, छत्रीसहजार जीर्णप्रासादोद्धार, सवाक्रोड जिनबिंब, पंचाणुहजार पीतळमयजिनप्रतिमा, अने अनेकसहस्रदानशाळाआदिकेकरी त्रिखंडपृथ्वीने घणीज शोभावी छे, इत्यादि अधिकार श्रीकल्पसूत्रनी टीकाओमां छे. हाल पण श्रीसंप्रतिराजाना करावेलां जिनमंदिरो घणे ठेकाणे विद्यमान छे.

७–तथा वि० सं० १०८ मां जावडसाए श्रीशत्रुंजयपर ओगणीसलाख सोनामोहोरो खरची उद्धार कर्यो प्रतिष्ठा [२]दशपूर्वधरश्रीवज्रस्वामिजीए करी इत्यादि अधिकार श्री

१–२ "महागिरिसुहस्त्याद्या वज्रान्तादशपूर्वीणिः" इत्यभिधानचिन्तामणिवचनात्.

शत्रुंजयमाहात्म्यमां छे. वळी समराशाए वि० सं १३७१ मां, तथा करमाशाए पण वि० सं० १५८७ मां श्रीशत्रुंजयपर उद्धार कर्यो छे.

८–तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाराजजीना सद्बोधथी श्रीविक्रमराजाए श्रीसिद्धाचळजीनो संघ घणा ठाठमाठथी काढयो हतो के, जेनी साथे चौद तो मुकुटबंधराजाओ हता, सीतेरलाख श्रावको हता श्रीसिद्धसेनदिवाकर प्रमुख पांचहजार आचार्यो हता. एकसोनेओगणोत्तर सुवर्णना जिनमंदिरो साथे हतां, एकक्रोड दशलाख पांचहजार गाडाओ हतां, अढारलाख घोडा हता, छत्रीससो हाथीओ हता, इत्यादि बीजी पण घणी सारी सामग्री साथे हती, वळी प्रथम एकलाख सोनामोहोरोथी श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाराजने गुरुपूजन कर्युं हतुं अने ते द्रव्यवडे गुरुमहाराजना उपदेशथी जीर्णोद्धार कर्यो हतो, वीगेरे बीजां पण घणा सारां सारां कार्य तेमणे श्रीगुरुमहाराजना उपदेशथी कर्यां छे ते संबंधी विशेष वृत्तांत श्रीविक्रमचरित्रथी जाणवो. विक्रमचरित्र श्रीअमदावादमां पं० श्रीवीरविजयजीमहाराजना ज्ञानभंडारमां छे.

९–तथा आचार्य श्री[1]बप्पभट्टिमहाराजजीना सदुपदेशथी गोपगढना (ग्वालियरगढना) आमनामना राजाए गोपगढमां श्रीमहावीरस्वामिनुं १०१ हाथ उंचुं भव्यजिनालय बंधावी तेमां अढारभार प्रमाण सुवर्णमय प्रतिमा स्थापन करी

---

१ पितानुं नाम "बप्प" मातानुं नाम "भट्टि" हतुं ते उपरथी तेमनुं नाम "बप्पभट्टि" राखवामां आव्युं छे. आ आचार्य आकाशगामीनी विद्याबळथी नित्य पंचतीर्थीनी यात्रा करता हता.

वळी ते श्रीजिनालयना मुख्यमंडप, अने रंगमंडप कराववामां बावीशलाख पचीशहजार सोनामोहोरो खरची वळी वि० सं० ८११ मां एकक्रोड सोनामोहोरोनुं श्रीबप्पभट्टिजीमहाराजना आचार्यपदमहोत्सवमां खरच कर्युं, वळी पोताना नवलक्षसिंहासनपर बेसाडी सवाक्रोड सोनामोहोरोथी गुरुपूजन कर्युं ते गुरुपूजन द्रव्ये करी गुरुमहाराजना उपदेशथी एकसो जीर्ण थयेलां देरासरोनो उद्धार कर्यो, वळी ते आमराजाए श्रीगोपगढ उपर मनोहर विशाळ एवी एक पौषधशाळा बंधावी के जेमां एकहजार तो स्तंभो हता, तेमां चतुर्विध श्रीसंघने सुखे आववा माटे त्रण मोटा विशाळ द्वारो मुकवामां आव्यां हतां, वळी तेमां दूर दूर बेठेला साधुओने पडिलेहणस्वाध्यायादिकवेळाओनी चेतवणी आपवा माटे मध्यस्तंभमां मोटा नादवाळो एक घंट बांधवामां आव्यो हतो, वळी ते पौषधशाळामां एक व्याख्यानमंडप त्रणलाख सोनामोहोरो खरचीने बांध्यो हतो, अने तेमां एवां तो चंद्रकांत्यादिक तेजस्वीरत्नो जडयां हतां के जेथी रात्रिए पण साधुओ त्रसकायादिकनी विराधना विना पुस्तको वीगेरे वांची शकता हता, वळी बप्पभट्टिसूरिजीना उपदेशथी आमराजाए मोटा आडंबरपूर्वक संघ लइ श्रीसिद्धाचळजी, गिरनारजीनी यात्रा करी त्यांपण जीर्णोद्धार कर्यो, इत्यादि विशेषाधिकार चतुर्विंशतिप्रबंधग्रन्थादिकथी जाणवो.

१०—तथा गुजरातनाराजा भीमदेवना प्रधानश्री विमळशाहे वि० सं० १०८८ मां श्रीअर्बुदगिरिपर बारक्रोड त्रेपनलाख रुपैयानुं खरच करी घणाज भव्यजिनमंदिरो बंधाव्यां छे के, जेने जोइने लोकोना मन घणा हर्षित थाय छे.

११–तथा श्रीमंडपाचळनाराजाना प्रधान शा. श्रीपृथ्वीधरे (पेथडे) तपगच्छनायकश्रीधर्मघोषसूरिजीना उपदेशथी सिद्धाचळ, देवगिरि, अने मंडपाचळ, वीगेरे परमोत्तम स्थळे चोरासी श्रीजिनमंदिरो बंधाव्यां ते संबंधी विस्तार वात पूज्यश्रीसोमतिलकसूरिकृतपृथ्वीधरसाधुकारितचैत्य-स्तोत्रथी जाणवी, अने ते स्तोत्र अमारी पासे छे. वळी तेमणे सात मोटा ज्ञानभंडारो कराव्या, छत्रीशहजार जीर्णटंक खरची श्रीधर्मघोषसूरिजीनो श्रीमंडपाचळमां प्रवेशमहोत्सव कर्यो, इत्यादि घणा उत्तमकार्य करी जेमणे मनुष्यजन्म पाम्यानुं फळ हस्तमध्यगत कर्युं छे. वळी तेमना "झांझण" नामना पुत्ररत्ने पण घणा उत्तमकार्य करेलां छे, ते श्रीरत्नमंदिरगणिकृतउपदेशतरंगणीप्रमुखग्रन्थो जोवाथी समजाशे.

१२–तथा श्रीसिद्धराजजयसिंहराजाए श्रीपाटणमां संवत् ११८३ मां श्रीऋषभदेवजीनुं मंदिर बंधाव्युं तेमां ८५ आंगुलप्रमाणवाळी प्रभुजीनी प्रतिमा स्थापी मंदिरनुं नाम "राजविहार" राखवामां आव्युं हतुं वीगेरे घणा उत्तम कार्यो कर्यां छे.

१३–तथा सिद्धराजजयसिंहराजानो "शांतु" ए नामनो पांचहजार घोडेस्वारोनो अधिपती हतो अने ते वळी श्रीदेवसूरिजीमहाराजनो परमभक्त हतो. तेणे चोराशीहजार सोनामोहोरो खरची एक राजमहेलसमान पोताने माटे मेहेल बनाव्यो, एक दिवस तेणे आचार्यश्रीदेवसूरिजीमहाराजने ते मेहेल बताव्यो पण आचार्यजीए तेनी प्रशंसा न करी. त्यारे सेनापतिए पूछ्युं के हे भगवन् सर्व

लोको आ मेहेलनी प्रशंसा करेछे, तो आप केम प्रशंसा करता नथी ते सांभळी श्रीदेवसूरिजीमहाराजना शिष्य श्रीमाणक्यचंद्रसूरिजीए कह्युं के, जो आ पौषधशाळा होत तो गुरुमहाराज प्रशंसा करत. गृहस्थना घरनी प्रशंसा करता पाप लागे, ते सांभळी शांतुए कह्युं के हवेथी आ पौषधशाळा हो. त्यारथी ते पौषधशाळा थै. अहो धन्य छे तेवा जीवोने.

१४–तथा श्रीदेवसूरिजीमहाराजना सदुपदेशथी कोरंटकनगरना नाहडमंत्रिए श्रीकोरंटकादिकमां " नाहडवसहि " आदिक बहोतेर श्रीजिनालयो बंधावी आचार्यजीने हाथे प्रतिष्टा करावी छे इत्यादि.

१५–तथा श्रीहेमचन्द्रसूरिजीना उपदेशथी प्रतिबोध पामेला श्रीकुमारपाळमहाराजाए श्रीतारंगाजी, सिद्धाचळजी, अने खंभात, वीगेरे उत्तम स्थळे १४४४ नुतन जिनमंदिरो तथा १६०० जीर्णोद्धारो कराव्या के जेमांथी आज पण घणाक जिनमंदिरो विद्यमान छे. वळी श्रीपाटणमां पोताना पिताश्री त्रिभुवनपाळना नामनी यादगीरी माटे " त्रिहुअणविहार " नामनुं ७२ देवकुलिकासहितजिनमंदिर बंधाव्युं तेमां १२५ आंगुलनी उंची अरिष्टरत्ननी मूळनायक श्रीनेमिनाथप्रभुनी प्रतिमा स्थापी अने फरती ७२ देरीओमां तेणे चौदभारप्रमाण २४ रत्ननी २४ सोनानी २४ रुपानी इत्यादि जिनप्रतीमाओस्थापी सर्वमळी तेमां ९६ क्रोडसोनामोहोरोखरची ते जिनालयमां उदयन, आम्रदेव, कुबेरदत्त, वीगेरे अढार हजार श्रावको नित्यनृत्यगायनसहितस्नात्रमहोत्सवकरताहता. वळी सातसोलैयाओ

राखीने त्रणलाखछत्रीसहजार आगमपुस्तको लखाव्यांतेमां दरेक आगमनीछछप्रतो सोनानाअक्षरोथी लखावी तथा श्रीहेमाचार्यकृतव्याकरण तथा चरित्रादिकग्रन्थोनी एकवीश एकवीश प्रतोलखावी लाभलीधो, वळी परमगुरु श्री हेमाचार्यजीना उपदेशथी कुमारपालराजाए ७२ राणा, १८००० कोटिध्वजसाहुकारो अने लाखोगमे बीजाश्रावकोना संघसहित श्रीसिद्धाचल, गिरिनार, आदितीर्थोनी मोटाआडंबरथी यात्राकरीतेमां दरेकस्थानके स्नात्रमहोत्सव ध्वजारोपण, श्रीसंघवात्सल्य आदिकार्योतेमणेकर्यां. ते संबंधीविशेषवृत्तांत श्रीप्रबंधचिंतामणिथी तथा वाचकश्रीजिनमंडनकृतकुमारपालप्रबंधथी जाणवो.

१६–तथा श्रीअणहिलपुरपाटणना कुमारपालराजाना बाहडमंत्रिए वि० सं० १२१३ मां श्रीशत्रुंजयोद्धारकर्यो, ते प्रसंगे त्रणक्रोडत्रणलाख सोनामोहोरो खरची. वळी तेमणे श्रीगिरिनारपरपगथीयां बंधावी सुलभमार्गकर्यो तेमां ६३ लाखसोनामोहोरोनुं खरचकर्युं यतः "त्रिषष्टिलक्षद्रमाणां गिरिनारगिरौव्ययात् ॥ भव्याबाहडदेवेनपद्या हर्षेणकारिता ॥ १ ॥" इतिवचनात्. इत्यादि घणा उत्तमकाम कर्याछे.

१७–तथा श्रीपाटणना आभड नामनाश्रावके २४ तीर्थंकरना २४ जिनमंदिरो बंधाव्यां तथा चोराशीपौषधशालाओ बंधावी एवीगेरे सातेक्षेत्रोमां ९० लाखसोनामोहोरो खरचीने लाभलीधोछे.

१८–तथा श्रीधवलकपुरना (धोलकाना) वीरधवलराजाना श्रीवस्तुपाल, तेजपाल, मंत्रिए तेरसोनवांजिनमं-

दिरो अने बावीसोजीर्णोद्धारकराव्या, सवालाख जिनबिंब-भराव्या श्रीअर्बुदाचल उपरक्रोडोरुपैयाखरची जिनमंदिरो बंधाव्यां, वळी वस्तुपालनी स्त्रीअनुपदेवीए अने तेजपालनी स्त्रीललितादेवीए श्रीअर्बुदाचलपर श्रीनेमीनाथना मंदिरमां पेसतांबेबाजु अढारलाख रुपैयाखरची बे गोखलाकराव्या के, जेदेराणीजेठाणीना नामथीप्रसिद्धछे. वळी नवसेंचोरासी पौषधशालाओ बंधावी, वळी सातक्रोडसोनामोहोरो खरचीने सुवर्णनी साहीथी तथा मसीनीसाहीथी ताडपत्रोपर तेमज उतमकागळोपर पुस्तकोलखावीने सातसरस्वती भंडारकराव्याछे. वळी वि० सं० १२८९ मां पहेली श्री शत्रुंजय तथा गिरिनारतीर्थनी यात्राकरीहती तेवखते तेमनीसाथे चोवीशहाथीदांतना जिनमंदिरो, एकसोनेवीशकाष्टना जिनमंदिरो, पीसतालीससोगाडां, सातसोपालखीओ, पांचसोकारीगरो, सातसो आचार्यो, बेहजारश्वेतांबरमुनिओ, आगियारसोदिगंबरो, ओगणीससोसाध्वीओ, चारहजार घोडाओ, बेहजारउंटो, अने सातलाखमाणसोहतां, एवीरीते पहेलीयात्राकर्याबाद तेथीपण अधिक अधिकआडंबरथीबीजीयात्राओ पहलेसाडीबारयात्राओकरीहती. इत्यादिघणा उत्तमकाम तेमणेकर्याछे. ते श्राधविधिग्रन्थटीका, तथा वस्तुपाल,तेजपालरासवीगेरे जोवाथी समजाशे.

इत्यादि घणाभव्यजीवोए श्रीजिनमंदिरादिकोने करावी अपूर्व लाभ लीधाछे. तेमांना केटलाक जिनमंदिरादिको अजेपाळ, तथा मुसलमानराजाओए जमीनदोस्त कर्यां छे ते सीवायना बाकी जे रहेलां ते छे. वळी हालमां पण ठामठाम घणा भव्यजीवो श्रीजिनमंदिरादिकोने करावी मनुष्यजन्मने सफळ करेछे.

अथप्रशस्तिर्लिख्यते ॥ वरेश्रीमत्तपागच्छेस्वच्छे-
ज्ञानगुणाङ्किताः ॥ बभूवुर्धीधनारूपविजयामुनिपुङ्गवाः
॥ १ ॥ तच्छिष्यः कीर्त्तिमान्कीर्त्तिविजयोविजितेन्द्रियः
॥ शिष्यसमूहयुक्तोभून्निर्ग्रन्थोमुनिसत्तमः ॥ २ ॥ विने-
यस्तस्यकस्तूरविजयोभून्महामुनिः ॥ तपःप्रभृतिभिर्युक्तो
गुणौघैर्विगतस्पृहः ॥ ३ ॥ तस्याप्यासीद्विनेयोहिम-
ण्यादिर्विजयः सुधीः ॥ तपश्चर्यादिसम्पन्नोभूरिशिष्य-
प्रशिष्यकः ॥ ४ ॥ श्रीशुभविजयस्तस्यविनेयोविद्यतेधुना
संयमीसावधानस्तुधर्मकर्मणिनित्यशः ॥ ५ ॥ तस्यशि-
ष्याणुनालक्ष्मीविजयेनकृतोमया ॥ नन्देषुनन्दचन्द्रेब्दे-
ग्रन्थोयंशुभदः सताम् ॥ ६ ॥ ग्रन्थेस्मिन्वितथंप्रोक्तंयन्म-
यात्यल्पबुद्धिना ॥ विद्वद्भिस्तत्कृपाकृत्वाविशोध्यंगतमत्स-
रैः ॥ ७ ॥ पुरेकर्प्पटवाणिज्येजिनौकःकुलमण्डिते ॥ ध-
निकैः सर्वतःपूर्णेग्रन्थोयंनिर्म्मितोमया ॥ ८ ॥ श्रीमद्वी-
रजिनेशस्यतीर्थंविश्वप्रकाशकम् ॥ यावत्प्रवर्त्ततेतावद्ग्र-
न्थोयंनन्दताच्चिरम् ॥ ९ ॥

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्रूपविजयग-
णिवर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीक-
स्तूरविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणि
शिष्यपं०श्रीशुभविजयगणिशिष्यमुं०श्री
लक्ष्मीविजयेनविरचितेश्रीप्रश्नोत्तर
प्रदीपेपञ्चमः प्रकाशः

ॐ नमःसिद्धम्

श्रीपर्युषणाष्टान्हिकाव्याख्यानग्रन्थप्रारंभः

प्रणम्यश्रीमहावीरंधीरंकौशिकसेवितम्[1] ॥ वाचंयमैर्मुदामान्यंवदान्यं[2]जितमन्मथम् ॥ १ ॥ भव्यसत्वसमूहस्यसत्यसद्बोधसिद्धये ॥ पर्युषणाख्यपर्वाष्टान्हिकाख्यानंकरोम्यहम् ॥ २ ॥ युग्मम् अत्रश्रीमज्जैनमतेयद्यपिभूयांसिपर्वाणिभवन्तितदपिसकलदुःखदुष्टाष्टकर्मक्षयकृन्नापरंश्रीपर्युषणाख्यपर्वसमानंपर्वयतः "पर्वाणिबहूनिसन्तिप्रोक्तानिश्रीजिनागमे ॥ पर्युषणासमंनान्यत्कर्मणांमर्मभेदकृत् ॥ १ ॥" ततोस्मिन्महापुण्यपर्वणिसमागतेसतियथाप्रमोदभरनिर्भरभूघना[3]निखिलनिर्जरास्तन्नायकाश्चैकीभूयाष्टमेश्रीनन्दीश्वरद्वीपेधर्मम-

१ इन्द्रसेवितम् २ भूरिदानप्रदम् ३ भूघनोदेहः

प० व्या० ॥ १ ॥

हिमार्थंगत्वाधिकभावभक्तितोञ्जनादिशैलस्थेषुश्रीशाश्वतार्हच्चैत्येपुशाश्वतार्हत्प्र-
तिमानामष्टान्हिकामहोत्सवंकुर्वन्तिततःकृतकृत्याः सन्तस्तेसर्वेस्वंस्वंस्थानंगच्छ-
न्तितथाशारदसुधांशूज्वलशुद्धश्रद्धालुभिःश्रावकैरपिविविधजन्मजरामृत्युप्रमु-
खदुःखप्रबन्धेनदुष्प्रापांनृभवादिसकलसामग्रीमवाप्यविशेषतोत्रपर्वणिश्रीजिन-
प्रणीतधर्मकर्मणिशीघ्रमेवयत्नःकार्यः, यतः " दुर्लभांसर्वसामग्रींप्राप्यमर्त्त्यभ-
वादिकाम् ॥ धर्मेयत्नःसदाकार्यःपर्वणितुविशेषतः ॥ १ ॥ " ननुकथंधर्मक-
र्मणिशीघ्रमेवयत्नःकार्यइत्युक्तमितिचेदुच्यतेनृभवादिसकलसामग्रीहिस्वभाव--
तएवचपलतराक्षणभंगुराचभवतीतिहेतोरित्युक्तम् यतः " आयुर्वारितरङ्गभंगुर-
तरंश्रीस्तूलतुल्यस्थितिस्तारुण्यंकरिकर्णचञ्चलतरंस्वप्नोपमाःसङ्गमाः ॥ यच्चान्य-
द्रमणीमणिप्रभृतिकंवस्त्वस्तितच्चास्थिरंविज्ञायेतिविधेयतामसुमताधर्मःसदाशी-

१ तूलमर्कतूलम् २ प्राणिना

प० व्या० ॥ २ ॥

व्रतः ॥ १ ॥" तथात्र श्रीराजर्षिभर्तृहरिणाप्युक्तम् " यावत्स्वस्थमिदंकलेवर-
गृहंयावच्चदूरेजरायावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहतायावत्क्षयोनायुषः ॥ आत्मश्रेयसि-
तावदेवविदुषाकार्यःप्रयत्नोमहान्संदीप्ते[1]भवनेचकूपखननंप्रत्युद्यमःकीदृशः ॥
॥१॥" इत्येवमुक्तेऽपियेकेचित्प्रमादवशगानराःकरक्रोडगतमपिसदानश्वरंश्रीजि-
नोक्तधर्मंनसाधयन्तिकिन्तुतंत्यक्त्वानश्वरधनादिभोगवाञ्छार्थमितस्ततोवातू[2]-
लान्तर्गतलघुतृणगणवद्भ्रमन्तितेधर्मधनविहीनाअधन्यानराजन्ते, अत्रविवि-
धदृष्टान्तवृत्तयुग्मम्तथाहि " निर्दन्तःकरटी[3]हयोगत[4]जवश्चन्द्रंविनाशर्वरी[5]निर्ग-
न्धंकुसुमंसरोगतजलंछायाविहीनस्तरुः ॥ भोज्यंनिर्लवणंसुतोगतगुणश्चारि-
त्रहीनोयतिर्निर्देवंभवनंनराजतितथाधर्मंविनामानवः ॥ १ ॥ राज्यंनिःसचिवं[6]-

---

१ सम्यक्प्रज्वलिते २ वातूलोवान्तोलिकः ३ हस्ती ४ गतोयातोजवोवेगोयस्यसः
५ रात्री ६ मन्त्रिशून्यमित्यर्थः.

प० व्या०
॥ ३ ॥

गतप्रहरणंसैन्यंविनेत्रंमुखंशर्वरीनिर्जलदानभोचक्रागोभोज्यंयथाज्यं[1]विना ॥ दुः-
शीलादयितासुहृन्नि[2]कृतिमान्राजाप्रतापोज्झितःशिष्योभक्तिविवर्जितोनविनाध-
र्मेनरःशस्यते ॥ २ ॥ " ततोभोभोभव्याभवदुःखप्रदंप्रमादंमुक्त्वाधर्मंकृत्वानृभ-
वादिसकलसामग्रीसफलाकार्या, अथचानुक्रमेणधर्मकृत्यविवरणमाहनिःश्रेयस-
पदाभिलाषुकभविकजनैरजस्रं[3]श्रीजैनागारेगन्तव्यंगत्वाचतत्रोग्रभक्त्याविशेषतः
पङ्कपांशवा[4]दिकंदूरीकृत्यद्रव्यतोतिप्रशस्तवर्णगन्धादिगुणयुतपुष्पादिभिर्भावतश्चै-
त्यवन्दनादिभिःश्रीजिनप्रतिमायाःपूजाविधेयापूजातोहिभूयिष्टभव्यप्राणिनामै
हिकामुष्मिकसुखसम्पत्तिर्भवति यतः " वस्त्रैर्वस्त्रविभूतयःशुचितरालङ्कारतोलङ्
कृतिःपुष्पैःपूज्यपदंसुगन्धितनुता[5]गन्धैर्जिनेपूजिते ॥ दीपैर्ज्ञानमनावृतं[6]निरुपमा-

१ घृतंविना २ मायोपेतः ३ निरन्तरम् ४ पांशुर्धूलिः ५ सुगन्धयुक्तशरीरत्वम् ६ अना-
वृतंज्ञानम्केवलज्ञानमित्यर्थः

प० व्या०
॥ ४ ॥

भोगर्द्धिरत्नादिभिःसन्त्वेतानिकिमद्भुतंशिवपदप्राप्तिस्ततोदेहिनाम् ॥ १ ॥"
अत्रपूजाफलप्राप्तिविषयेबहवोदृष्टान्ताःसन्तितन्मध्यादेकंश्रीश्येनकमालिकदृष्टा
न्तमाह॥ "पूर्वंनवाङ्गंनवभिःप्रसूनैः[1]पूजाकृताश्येनकमालिकेन ॥ ततोनवस्वेव-
भवेषुलक्ष्मींनवांनवांप्रापशिवर्द्धिमन्ते ॥ १ ॥" तदनन्तरंजङ्गमतीर्थनमस्या-
दिहेतवेप्रतिश्रयेसततंगन्तव्यंगुरुभक्त्यागुरूणां[2]वंदनंदातव्यंततस्तद्वदनारविन्दा-
त्सदुपदेशश्रवणंकर्त्तव्यंसदुपदेशश्रवणात्प्राणीयथार्थंशुभाशुभस्वरूपंजानाति–
यदुक्तंश्रीदशवैकालिकसूत्रे " सुच्चाजाणईकल्लाणं[3]सुच्चाजाणईपावगं ॥ उभयं-
पिजाणईसुच्चाजंसेयंतंसमायरे ॥ १ ॥" ननुभावंविनायत्सदुपदेशश्रवणंक्रि-
यतेतत्किलाभायभवत्यपितुनेतिचेदुच्यतेतदपिलाभायभवतियदाहश्रीवज्रसेन--
सूरिशिष्यश्रीहरिमुनिः " द्वेषेपिबोधकवचःश्रवणंविधायस्याद्रौहिणेय[4]इवजन्तु-

१ पुष्पैः २ तत्त्वोपदेशकानाम्शुद्धमरूपकानामित्यर्थः ३ पुण्यम् ४ रौहिणेयइतिनाम्नाचौरः.

प० व्या० ॥ ५ ॥

प० व्या०
॥ ६ ॥

रुदारलाभः ॥ क्वाथो[1]प्रियोपिसरु[2]जांसुखदोरविर्वासन्तापकोपिजग[3]दंगभृतांहि-
ताय ॥ १ ॥ ” तथासुकृतिमत्सुश्रावकेणश्रीकल्पवाचनामुख्यदिवसात्प्राग्दि-
वसेप्रतिश्रयंप्रत्यागत्यसाक्षात्सदभिलषितार्थप्रदैककल्पद्रुमकल्पश्रीकल्पसंज्ञकम-
हागमस्यपुस्तकंगृहीत्वानिजगृहेगत्वारात्रिजागरणंकृत्वाश्रीकल्पवाचनामुख्य-
दिवसेमह[4]महेनसमस्तसङ्घसमन्वितेनसुवस्त्राभरणभूषितसधवाननसमुद्भूताति-
ललितधवलमङ्गलगीतकलितेनविविधवादित्रनिनादप्रतिशब्दबधिरिताम्बरभूत-
लेनवारुमतङ्गजतुरगादिवाहनारूढसुनेप[5]थ्यकमनीयनिजकुमारादिहस्तस्थकल्पा
गमपुस्तकेनसार्धं[6]वसतिंसमागत्यनिर्दोषासनासीनश्रीमद्गुरुकोमलकरकमले-
दीयतेततःस्वधर्मैकनिष्ठाप्रग[7]ल्भसकलसङ्घसावधानीभूयसंयोजितविमलकरकम-

१ कटुकोपि २ रोगिणाम् ३ भूलोकप्राणिनाम् ४ महोत्सवेन ५ सुनेपथ्यम् सुवेषम्.
६ साधूपाश्रयम् ७ प्रगल्भश्चतुरः.

लःश्रीगुरुवदनस्थापितनिर्मलनयनयुगलः, उज्झितसकलदुरितप्रमादःप्रवर्द्ध-
मानप्रहर्षितचित्तप्रसादःक्रन्दनकुत्सितकथाविकथनकलकलादिरवरहितोयथा–
स्वशक्त्यावासक्षेपनाणक[1]धूपदीपादिनाकृतकल्पपुस्तकपूजनःश्रीगुरूणांकृतवि--
लेपननाणकादिनाङ्गपूजनःसम्पूर्णविहितसुविहितगुरुगोधूलिका[2]दिकृत्योविस्त--
रतःश्रीकल्पसूत्राख्यानंमहार्थमहामङ्गलमयंश्रीगुरुमुखपद्माच्छृणोतितितस्तच्छ्रव--
णफलमाह ॥ " श्रीकल्पंशुद्धभावेनसावधानःशृणोतियः ॥ अन्तर्भवाष्टकंध-
न्यःसलभेत्परमंपदम् ॥ १ ॥ " तथा " एगग्गचित्ताजिणसासणंमिपभावणा-
पूअपरायणाजे ॥ तिसत्तवारंनिसुणंतिकप्पंभवाणवंगोयमतेतरंति ॥ १ ॥ "
पुनर्भोभव्याविशेषेणात्रपर्वणिनिरवद्या[3]न्नादिदानार्थंमुनयोनिमन्त्रणीयाअतःसु--

१ नाणकोमुद्राचिन्हितनिष्कादिवाचकोज्ञेयः २ गोधूलिका "गौंहली" तिभाषायांप्रसिद्धा.
३ निरवद्यम्निर्दोषम्

प० व्या०
॥ ७ ॥

श्रावकोभोजनवेलायांजातायांसद्भक्त्यासाधून्निमन्त्र्यतैःसार्द्धंस्वगृहमायातिस्व-
यमागच्छतोवामुनीन्दृष्ट्वाप्रमोदपुलक[1]पल्लविताङ्गवल्लिस्तत्सम्मुखंगमनादिकंक--
रोतिततःसंविग्नभावितात्मासन्सविनयंसहर्षमेकान्तात्मानुग्रहबुद्ध्यादानंदत्तेतदा-
ह " धन्योहंमाम[2]कंपुण्यं[3]धनंवरतरंगृहम् ॥ अहोममालयंप्रत्यागताअद्यसुसाध-
वः ॥ १ ॥ इत्येवंभावितात्मासुश्रावकोमुदितोवरम् ॥ शुद्धमन्नादिकंदत्तेस्वा-
त्मानुग्रहबुद्धितः ॥ २ ॥ " युग्मम् ततोनिजनिके[4]तननिर्गमनद्वारादियावदनु-
व्रज्यभक्त्यातान्वन्दित्वानिवर्त्ततेसाध्वभावेत्वनभ्र[5]वृष्टिवद्यदिसाध्वागमनंस्यात्त--
दातद्योग्यंदानंदत्वापूर्णकृतार्थस्यामितिभावनायुतोतिसंमोदकलितोभोजनसम-
येगृहद्वारदिगालोकनंकुर्यात्तथाचाहुः " जंसाहूणंनदिन्नंकहिंपितंसावयानभुं-
जंति ॥ पत्तेभोयणसमयेदारस्सलोयणंकुज्जा ॥ १ ॥ " पुनर्ग्लानसाध्वादीनां-

१ प्रमोदपुलकोहर्षरोमोद्गमः २ ममेदम् ३ पवित्रम् ४ निकेतनम्गृहम् ५ अमेघवृष्टिवत्.

प० व्या० ॥ ८ ॥

शरीरसुखवार्त्तादिपृच्छापूर्वयोग्यभक्तपानौषधादिभिःसद्भक्तिर्विधेयासाधुसद्भ–
क्त्याहिभव्यप्राणिनोभवाब्धिपारंप्राप्नुवन्ति, अत्रमुनिदानविषयेश्रीनाभिरा-
जसूनुश्रीवृषभदेवजगदीश्वरादीनांदृष्टान्तास्तद्यथा " श्रीनाभेयजिनेश्वरो[1]धन-
भवेश्रेयः[2]श्रियामाश्रयःश्रेयांसःसचमूलदेवनृपतिः[3]सानन्दनाचन्दना ॥ धन्योयं-
[4]कृतपुण्यकःशुभमनाःश्रीशालिभद्रादयःसर्वेप्युत्त[5]मदानदानविधिनाजाताजगद्वि
श्रुताः ॥ १ ॥ " इतिपुनः " साहमीआणवच्छल " मितिवचनाद्यथाश्र्यादि
नाथपुत्रोभरतभूमीन्द्रोभरतभूपतिःसमग्रसाधर्मिकाणांवात्सल्यंकृतवान्तथानिज
शक्त्यनुसारेणसुश्रावकैरपितेषांवात्सल्यंकर्त्तव्यम्यदाहश्रीहरिमुनिः " अकृत-
भरतचक्रीविश्वसाधर्मिकार्चांकुरुततद[6]नुमानाच्छ्रेयसेत्रो[7]द्यमंतत् ॥ यदिसक-

१ धनसार्थवाहभवे २ मोक्षश्रीणामाश्रयः ३ इतिचन्दनाविशेषणम् ४ कयवन्नः ५ उत्कृ-
ष्टशुद्धदानविधिनेत्यर्थ ६ श्रीभरतानुमानात् ७ साधर्मिकवात्सल्ये.

प० व्या०
॥ ९ ॥

लधरित्रीं[1]प्रीणंयत्यम्बु[2]वाहःकिमुनतदरघट्टःक्षेत्रमात्रं[3]पृणातु ॥ १ ॥" पुनः
साधुश्रावकप्रभृतिषुयोग्यसर्वस्मिन्कालेदत्तंदानंधर्मधनादिकारणायभवतिविशे-
षतस्तुपारणकोत्तरपारणकयोर्दिवसेचयदाहश्रीहरिमुनिः " प्रतिदिनमपिदानं-
पुण्यसम्पन्निदानंपुनरधिकफलंस्यात्पारणाहोत्तराहे ॥ दि[4]शतिजल[5]भृदन्नं[6]कृति-
कादौसुवृष्टःपुनरमलम[7]नर्घ्यमौ[8]क्तिकंस्वातियो[9]गे ॥ १ ॥" पुनःश्रीचैत्यप्र-
तिमापुस्तकसङ्घरूपेषुसप्तस्वपिपुण्यक्षेत्रेषुसन्न्यायोपार्जितंनिजवित्तबीजंभूरिस-
त्फलाप्तयेसम्प्रतिनरेन्द्रवद्धनाढ्यःपुण्यवान्सुश्रावकोवपेत्पुनःकृतपापपङ्कविना-
शनेश्रीजिनशासनेयथाशक्त्याप्रभावनाकार्यायतःप्रभावनातोहिपरमोत्कृष्टागु-
णाःसमुत्पद्यन्तेयदुक्तम् " मिथ्यात्वनाशोजर्ईजन्तुबोधिस्तीर्थोन्नतिस्तीर्थकृतां

१ तोषयति २ मेघः ३ तर्पयतु ४ ददाति ५ मेघः ६ तदाख्यनक्षत्रादौ ७ अमूल्यम्
८ तदाख्यनक्षत्रयोगे ९ अज्ञप्राणिनांधर्मावाप्तिः.

प० व्या०
॥ १० ॥

प० व्या०
॥ ११ ॥

फदाप्तिः ॥ आत्मान्यलाभोजिनशासनेश्रीप्रभावनातोहिगुणाःस्युरेते ॥ १ ॥"
पुनःकृपणतानकार्या यतः " कीटिकासञ्चितंधान्यंमक्षिकासञ्चितंमधु ॥
कृपणोपार्ज्जितालक्ष्मीरन्यैरेवोपभुज्यते ॥ १ ॥ " इतिश्राद्धविधिवृत्तिवचनात्पुनरत्रास्मितमुखपद्माभिरामरामारमणरसिकत्वंपरिहृत्यमैथुन[2]त्यागरूपंनिर्मलतरंगुणवरंब्रह्म[3]व्रतंधार्यम् यतः " जोदेई[4]कणय[5]कोडिंअहवाकारे[6]इकणयजिणभवणं ॥ तस्सनतत्ति[7]अपुन्नंजतिअबंभव्वएधरिए ॥ १ ॥" इतिसम्बोधसप्ततिग्रन्थवचनात् ॥ अत्रजलानलादिमहाभयहरविशदशीलमाहात्म्येचन्द्रचारुचरित्रसुप्रसिद्धश्रीरघुनाथपत्नीमहासतीसीताद्दृष्टान्तस्तद्यथा " शीतयादुर-

१ स्वपरलाभः २ मिथुनम्स्त्रिपुंसयुग्ममृतत्कर्ममैथुनम् ३ शीलव्रतम् ४ ददाति ५ कनककोटिंसुवर्णकोटिंदशमाषसत्कःसुवर्णःकथ्यतेतस्यकोटिस्तांयाचकेभ्यइतिशेषः ६ कारयति ७ तावत्पुण्यम् ८ यावद्ब्रह्मव्रतेधृते.

पवादभीतयापावकेस्वतनुराहुतिःकृता ॥ पावकस्तुजलतांजगामयत्तत्रशील-
महिमाविजृम्भितम् ॥ १ ॥ ” पुनर्द्यूतादिसप्तव्यसनानिपापात्मकानि-
इहामुत्रबहुदुःखदानिततोदूरतस्त्याज्यानियदाहहरिमुनिः “ निःसत्वं[1]निर्दयत्वं[2]-
विविध[3]विनटनाशौचं[4]नाशात्महानी[5]अस्वास्थ्यं[6]वैरवृद्धि[7]र्व्यसनफलमिहा[8]मुत्र[9]दुर्ग--
त्यवाप्तिः ॥ चौलुक्य[10]क्ष्मापवत्तद्व्यसनविरमणेकिंनदक्षायतध्वंजानन्तोमान्धकू-
पेपतत चलतमादृग्विषाहेः[11]पथाहे[12] ॥ १ ॥ ” अत्रप्रख्यातनलनृपादीनांदृष्टान्तास्त-
द्यथा “द्यूतात्[13]राज्यविनाशनंनलनृपःप्राप्तोथवापाण्डवामद्यात्कृष्णहतिश्चराधव[14]पि-

---

१ द्यूतरमणव्यसनाद्दारिद्र्यम् २ मांसभक्षणान्निःकरुणत्वम् ३ मद्यपानाद्विविधविवटम्बना ४ वेश्याभोगात्पवित्रतायानाशः ५ आखेटकादात्महानिः ६ चौर्याद्व्याकुलत्वमविश्वासरहितत्वञ्च ७ परदारसेवातोवैरवृद्धिः ८ इहलोके ९ परलोकेनरकप्राप्तिः १० कुमारपालभूपालवत् ११ दृष्टिविषसर्पस्य १२ मार्गेण १३ द्यूताल्लोके “ जुगार ” इतिप्रसिद्धात् १४ दशरथः.

प० व्या०
॥ १२ ॥

तापार्द्धितोदूषितः ॥ मांसाच्छ्रेणिकभूपतिश्चनरकेचौर्याद्विनष्टानकेवेश्यातः[2]कृतपुण्यकोगतधनोन्यस्त्रीरतोरावणः ॥१॥" पुनरत्रपर्वणियथाशक्तितपश्चरणेपियत्नोविधेयोयतःप्रोक्तम् श्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रवृत्तौ "सोहुतवोकायव्वोजेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणीजेणयजोगानहायंति ॥१॥" इति परन्तुपूजालाभाद्यर्थंनतपोविधेयम् यतः "पूजालाभप्रसिध्ध्यर्थंतपस्तप्येतयोल्पधीः ॥ शोषएवशरीरस्यनतस्यतपसःफलम् ॥ १ ॥" इतिवचनादथतपोमाहात्म्यमाह ॥ "तपःसकललक्ष्मीणांनियन्त्रणमशृङ्खलम् ॥ दुरितप्रेत[3]भूतानांरक्षामन्त्रोनिरक्षरः ॥१॥" अत्रश्रीसिद्धारथराजपुत्रश्रीचरमजिनपतिप्रभृतीनांदृष्टान्ताभवन्तितद्यथा "श्रीमद्वीरजिनो[4]दृढप्रहरणःस्त्रीयप्रतिज्ञादृढःश्लाघ्योबाहुबलीबलोप्यविचलःसन्नन्दिषेण[5]व्रती ॥ आनन्दःसदुपासकोव्रतरुचिःसासुन्दरीत्यादयःक-

१ मृगयातः २ राजगृहनगरनिवासीधनावहश्रेष्ठिपुत्रः ३ प्रेतःपिशाचभेदः ४ दृढप्रहारी ५ अयंनन्दिषेणः श्रीमहावीरजीवोज्ञातव्यः.

र्मोन्मूलनकोविदेनतपसादेवासुरैर्वन्दिता: ॥ १ ॥ " पुनर्मासक्षपणादितपश्चर-
णावसरेसङ्घभक्तिर्ज्ञानभक्तिश्चनियमेनकार्यापुनः " छव्विहेआवस्सयंमिउ[1]ज्जु-
तोहोईपइदिवस " मितिवचनात्प्रतिदिनंसन्ध्याद्वयेपिप्रातिक्रमणंकर्त्तव्यमूतत्फ-
लञ्चेदम् " आवस्सयमुभयकालंओसहमिवजेकरंति[2]उज्जुत्ता ॥ जि[3]णविज्जक-
हियविहिणाअ[4]कम्मरोगायतेहुंति ॥ १ ॥ " प्रतिक्रमणफलसत्कविशेषोत्रश्रीमदु-
त्तराध्ययनसूत्रादिकेभ्योवसेयः पुनरत्रभोभव्याःशुभगतिदाशुभभावनाभाव्या-
कथमितिचेदुच्यतेशुभभावनांविनाविहितदानादिकंसर्वंसफ[5]लंनस्यात्किन्तुवि-
फलंस्याद्यदाहुःश्रीसोमप्रभाचार्याः "नीरागेतरुणीकटाक्षितमिव[6]त्यागव्यपेतप्र-

१ उद्युक्तः २ उपयोगयुक्ताःसन्तः ३ जिनवैद्यकथितविधिना ४ कर्मरोगरहिताः ५ अत्र-
विशेषफलापेक्षयासफलंनस्यादितिज्ञेयम्नतुसामान्यफलापेक्षया ६ दानरहितेकृपणेस्वामिनि.

प० व्या०
॥ १४ ॥

प० व्या०
॥ १९ ॥

भौसेवाकष्टमिवोपरोपणमिवाम्भोजन्मना[1]मश्मनि ॥ विष्वग्वर्षमिवो[2]षर[3]क्षितितले
दानार्हदर्चातपःस्वाध्यायाध्ययनादिनिष्फलमनुष्ठानंविनाभावनाम् ॥१॥" इति.
अत्रापिजगत्प्रख्यातश्रीभरतचक्रवर्त्यादीनांदृष्टान्ताज्ञेयास्तद्यथा "चक्रीश्रीभ-
रतो[4]बलानुगमृगः श्रेयानि[5]लापुत्रकोजीर्णश्रेष्टिमृगावतीगृहपतिर्योभावदेवाभिधः
॥ साश्लाघ्यामरुदेवतानवमुनिःश्रीचन्द्ररुद्रस्यचेत्याद्याःकस्यनचित्रकारिचरि-
ताभावेनसम्भूषिताः ॥१॥" इति पुनरष्टदिनानियावन्निर्मलंनिजधर्मयोग्यंसुव-
स्त्रविभूषणादिधार्यम्धर्महितकृन्मितशुद्धाहारेणदेहशुद्धिर्धार्यासत्यभूषितप्रिय–
भाषयावाक्शुद्धिःकार्यातिस्वच्छशुभाशयेनमनःशुद्धिरपिपुनर्भोश्राद्धाःसर्वेपिप-
र्ववासराविशेषतःपालनीयाभवन्तिततःप्रथमतएवसमीपगमष्टाहिकागमनंज्ञात्वा
कृपायुक्तकोमलपरिणामैर्भव्यप्राणिभिस्त्रसादिजन्तून्सम्यक्संशोध्यपिष्टा[6]दिकृ–

१ कमलानाम् २ मेघवर्षणमिव ३ क्षारभूमौ ४ बलभद्रानुगोमृगः ५ धनदत्तश्रेष्टिपुत्रः
६ गोधूमादीनांचूर्णादिकृत्यमूलोद्गमप्रमुखकृत्यमित्यर्थः

प० व्या० ॥ १६ ॥

त्यंकरणीयम्तदपिनभूयिष्टंनाल्पतरंकिन्त्वष्टदिननिर्वाहकारकमेवकरणीयम्कुत-- इत्येवमितिचेदुच्यतेभूयिष्टकरणेग्रेजीवोत्पत्तिहेतुत्वादल्पतरकरणेत्वन्तरालेवश्यंन-वीनारम्भकरणीयत्वात्तत्रापिशीघ्रविनाशिद्रव्यंनकर्त्तव्यम्यतक्षतंततस्सम्यग्विधि--नारक्षणीयम्यदाबहुवर्षाजीवोत्पत्तिःशीघ्रंभवतितदासदयंनिरवद्यंनवीनंकृत्वाभोक्तव्यम्नपुनःसावद्यंसमाचरणीयम्पुष्टधर्मालम्बनंविनानवीनारम्भोनकर्त्तव्योमांसिकतैलिककैवर्त्तभ्राष्ट्रकर्मकारकादिमहारम्भप्राणिषुयथाशक्त्यारम्भःप्रतिषेध—नीयस्तथाचतैःसहव्यापारोपिनैवकर्त्तव्यः, यतः " मांसिकाद्यैःसमंसर्वव्यापारं-वर्जयेच्छुधीः ॥ महारम्भरताएतेयतोहिपापिनस्ततः ॥ १ ॥ मांसिकाद्यैःसमंय-स्तुव्यापारंनैववर्जयेत् ॥ धर्महीनोहितज्ञैश्चज्ञेयोहिसजडात्मकः ॥ २ ॥ " तथा-

१ यद्द्रव्यंकालादिदोषेणनष्टम् २ मांसिकोमांसविक्रयोपजीवीलोके "कसाइ" इतिप्रसिद्धः ३ कैवर्त्तोधीवरः ४ भ्राष्ट्रकर्मकारको "भाडभुंजो" इतिप्रसिद्धः ५ स्वपरहितज्ञैरितिवाच्यम्.

स्वसामर्थ्येसतिमहाघोरदुःखागारकारागारबद्धानांमोचनंविधेयम्पुनर्नकेनापि-
हिंसा[1]कार्याकिन्तुपर्युषणापालनीयेतिग्राममध्येमायुद्‌घोषणाकारापणीयातथाशी
र्षादिशोधनग्रथन, वस्त्रादिधावनरंजन, शकटहलादिखेटन, यन्त्रादिवाहनक-
ण्डनपेषण, पत्रपुष्पफलादित्रोटन, सचित्तखटिकवर्णिका[2]दिमृदन, धान्यादिल-
वनलिम्पन, मृदादिखनन, गृहादिनिष्पादनाद्यारम्भःसर्वोपिपरिहार्यः,यतः "स-
णंचीवरधोवणंमथ्थयगुंथणमबंभचेरंच ॥ खंडणपीसणलिंपणवज्जेइच्चाइपव्वदिणे
॥१॥" तथाश्रीपूज्यश्रीरत्नशेखरसूरीश्वरशिष्यश्रीचारित्रसुन्दरगणिरप्याह "अष्टा
हिकासुसर्वासुविशेषात्पर्ववासरे ॥ आरम्भान्वर्जयेद्गेहेखण्डनोत्पेषणादिकान् ॥१॥"
ननुश्रीजैनधर्मएवजीवदयानान्यधर्मेष्वितिचेदुच्यतेन्येषांवैष्णवादीनांधर्मेष्वपि-
जीवदयाप्रणीताभवतियदुक्तम् श्रीमद्भागवतेप्रथमस्कन्धेष्टमाध्यायेर्जुनंप्रति—

१ प्राणिप्राणव्यपरोपणमूहिंसा २ वर्णिका "रमजी" इतिलोके प्रसिद्धारक्तमृत्तिका.

प० व्या० ॥ १७ ॥

श्रीकृष्णवाक्यम् " यथापङ्केनपङ्काङ्कंसुरयावासुराकृतम् ॥ तथैकजीवहिंसाऋनयज्ञैर्मार्ष्टुमर्हसि ॥ १ ॥ " तथाशिवशासनेमार्कण्डपुराणे " कपिलानांसहस्राणियोद्विजेभ्यःप्रयच्छति ॥ एकस्यजीवितंदद्यान्नचतुल्यंयुधिष्ठिर ॥१॥ " तथामहाभारतेशान्तिपर्वण्यप्युक्तम् " सर्वेवेदानतत्कुर्युःसर्वेयज्ञाश्चभारत ॥ सर्वेतीर्थाभिषेकाश्चयत्कुर्यात्प्राणिनांदया ॥ १ ॥ " इत्येवंसर्वत्रजीवदयामाहात्म्यंकथितमस्तिपुनर्यज्जलादिस्थानंतत्सुरक्षणीयम्स्नानमप्युत्तिङ्गपनककुन्थ्वाद्यसंसक्तेवैषम्यशुषिराद्यदूषितेभूमिभागेपरिमितवस्त्रपूतजलसम्पातिमसत्वरक्षणादि-

१ मदिरया २ शोधयितुम्परिहर्त्तुमित्यर्थः ३ स्वर्णवर्णानांधेनूनाम् ४ ऋग्वेदादयः ५ अश्वमेधादयः ६ अष्टषष्ठिषुतीर्थेषुस्नानानीत्यर्थः ७ उत्तिङ्गाभूमौवृत्तविवरकारिणोगर्दभाकारजीवाःकीटिकानगराणिवा ८ पनकउल्लिःसचप्रायमाऋषिभूकाष्टादिषुजायतेयत्रोत्पद्यतेतत्रतद्द्रव्यसमवर्णश्च ९ कुन्थवःकुर्भूमिस्तस्यांतिष्ठन्तीतिकुन्थवस्तेहित्रीन्द्रियाः १० सम्पातिमसत्वानि, आकाशचारिणोमक्षिकादयोजीवाः.

प० व्या०
॥ १८ ॥

यतनयाकुर्याद्यतःप्रोक्तम्श्राद्धदिनकृत्ये "तसाइजीवरहिएभूमीभागेविसुद्ध-
ए ॥ फासुएगतुनीरेणइयरेणगलिएणउ ॥ १ ॥ काउणंविहिणाणाणमित्या-
दिगाथा ॥ २ ॥" तदपिश्रीजिनपूजाद्यर्थेनतुदेहशुद्धिभ्रान्त्यापुनःपुनःकर्त्त-
व्यम्देहशुद्धिर्हिनकेनापिजलस्नानादिप्रकारेणस्याद्यदाहुःश्रीहेमचन्द्राचार्यपा
दाः ॥ "अभ्यक्तोपिविलिप्तोपिधौतोपिघटकोटिभिः ॥ नयातिशुचितांकायःशुं[2]-
ण्डाघटइवाशुचिः ॥ १ ॥ यंकृच्छकृन्मूत्रमलस्वेदामयमयस्ययत् ॥ प्रसाधनंव-
पुषस्तद्गृहस्त्रोतोधिवासनम् ॥ २ ॥" तथास्कन्दपुराणेकाशीखण्डेषष्ठाध्यायेप्यु-
क्तम् " मृदोभारसहस्रेणजलकुम्भशतेनच ॥ नशुध्यन्तिदुराचारास्तीर्थस्ना-
नशतैरपि ॥ १ ॥ जायन्तेचम्रियन्तेचजलेष्वेवजलौकसः ॥ नचगच्छन्तितेस्व-

१ प्रासुकेनतुनीरेणतदभावइतरेणसचित्तेनापि २ मदिराघटः ३ यकृत्कुक्षौदक्षिणभागस्थो-
मांसपिण्डः ४ शकृद्विष्ठा ५ मण्डनम् ६ अधिवासनम्नामगन्धमाल्याद्यैःसंस्कारकरणम्.

गेमविशुद्धमनोमलाः ॥ २ ॥ " इत्यादिस्थानसत्कविस्तरोमत्कृतप्रश्नोत्तरप्रदी-
पादवसेयः पुनः क्रोधादयश्चत्वारोपि कषायाः परिहरणीया यतस्ते शीघ्रमेव स्नेहादि-
नाशकारिणो भवन्ति यदुक्तम् श्रीदशवैकालिकसूत्रे " कोहो पीइं पणासेइ[1] माणो वि-
णयनासणो ॥ माया मित्ताणि नासेइ[2] लोभो सव्वविणासणो ॥ १ ॥ " अथात्र पर्व-
णि भो भव्यानकस्यापि निन्दा कार्या श्रीदेवगुर्वादीनान्तु सर्वथैव च यतो ये निकृष्टश्रा-
वकाः क्लिष्टकर्माणः कर्मचण्डालाः क्रूरप्रकृतयो निन्दकस्वभावा मायाविनः श्रीदे
वगुर्वादीनामवर्णवादिनो यद्यपि केनाप्यहङ्कारादिप्रकारेण दानादिधर्मकृत्यं कुर्व-
न्ति तथापि ते प्रेत्य बहुविधां दुर्गतिं प्राप्य महादुःखिनो भवेयुरिति यतः " टूंटा मूंगा अं-
धा दरिद्दा घोरदुक्खबाहुल्ला ॥ सूलाभिन्नसरिरा साहुअसाहुणा निंदाए ॥ १ ॥ " पुनः
खलजनानां सङ्गो मनीषिणा[3] न कदापि कार्यो यतस्ते खलजनाः खलु सत्क्रियमाणा—

१ प्रणाशयति २ नाशयति ३ पण्डितेन.

अपि सा शात्क्लेशप्रदायिनो भवन्ति तथा च ते दुर्मुखरोखराः काकतुल्यस्वभावा अपि-
स्युः यतः " खलःसत्क्रियमाणोपि ददाति कलहं सताम्[1] ॥ दुग्धधौतोपि किं याति वा[2]-
यसः कलहंसताम्[3] ॥ १ ॥ न विना परिवादेन हृष्टो भवति दुर्जनः ॥ काकः सर्वरसा-
न्पीत्वा विना मे[4]ध्यं न तृप्यति ॥२॥ " पुनर्ये श्रावका देवादिद्रव्यं भक्षणोपेक्षणादिना-
विनाशयन्ति तेपि स्वोपार्जितदुष्टकर्मानुभावादनेकदुःखभागिनो भवन्ति यदाह श्री
मदुपाध्यायलावण्यविजयः, द्र० "भक्खेइ जाउ वि[5]क्खेइ जिणदव्वं तु सावओ ॥ पन्ना-
हीणो भवे जो उ लिप्पइ पावकम्मुणा ॥ १ ॥ चेइयदव्वं साहारणं च जो दु[6]हइ मोहियम-
इओ ॥ धम्मं च सो न याणइ अहवा बद्धाउ नरए ॥ २ ॥ आ[7]याणं जो भंजइ पडि-

१ साधूनाम् २ काकः ३ राजहंसत्वम् ४ अपवित्रम् विष्टामित्यर्थः ५ उपेक्षते जिनद्र-
व्यस्य भक्षणं कुर्वतः परस्य शक्तितो न निवारयति ६ यो दोग्धि व्याजव्यवहारादिना तदुपयोगिद्रव्य
मुपभुंक्ते, उपलक्षणतस्तन्मुष्णाति ७ आदानं तृष्णाग्रहग्रस्तत्वाद्देवादिसत्कं भाटकं यो भनक्ति.

प्र० व्या० ॥ २१ ॥

वेंन्नंधणंनदेइदेवस्स ॥ गरेहंतंचोविरकेइसोविहुपरिभमइसंसारे ॥ ३ ॥ जिणपव-
यणवुड्ढिकरंपभावगंनाणदंसणगुणाणं ॥ भरकंतोजिणदव्वंअणंतसंसारिओ होइ
॥ ४ ॥ जिणवरआणारहियंवद्धारंताविकेविजिणदव्वं ॥ बुड्डंतिभवसमुद्देमूढा-
मोहेणअन्नाणी ॥ ५ ॥ ” तथादेवद्रव्यादिविनाशदोषसंभवंश्रीधनेश्वरसूरयो-
प्याहुः “ देवद्रव्यंगुरुद्रव्यंदहेदासप्तमंकुलम् ॥ अङ्गालमिवतत्स्पृष्टंयुज्यतेनहिधीम-
ताम् ॥१॥” तथापुराणोक्तिरप्येवम् तथाहि “ देवद्रव्येणयावृद्धिर्गुरुद्रव्येणयद्धन-
म् ॥ तद्धनंकुलनाशायमृतोपिनरकंव्रजेत् ॥१॥ प्रभास्वेमामतिंकुर्यात्प्राणैःकंठगतै

१ तथायःपर्युषणादौचैत्यादिस्थानेदेयतयाप्रतिज्ञातंधनंनदत्ते २ तथागर्हन्तमी-
र्ष्यादिवशाद्दुर्वाक्येनदूषयन्तमविनीतंयोवोपक्षतेतथासतिकदाचित्तद्वाक्यश्रवणान्महेन्द्रपुरीयश्राद्ध-
वन्मानीभूयदेवादिद्रव्यरक्षादौशक्तिमानप्युदासीनोभवतीत्यर्थः, यतः “ एतदेवमहत्पापंधर्मस्था-
नेप्युदासिता ” इतितट्टीकायाम् ३ अनन्तसंसारिकोभवतिसंसारेबहुपर्यटतीत्यर्थः

रपि॥ अग्निदग्धाः प्ररोहन्ति प्रभादग्धो न रोहयेत्॥ २॥ [1]प्रभास्वं ब्रह्महत्या च दरिद्रस्य च यद्धनम्॥ गुरुपत्नी देवद्रव्यं स्वर्गस्थमपि पातयेत् ॥ ३ ॥" तथा दिक्पटग्रन्थेपि- " वरं हालाहलादीनां भक्षणं क्षणदुःखदम् ॥ [2]निर्माल्यभक्षणं नैव दुःखदं जन्मजन्मनि ॥ १ ॥ वरं दावानले पातः क्षुधया वा मृतिर्वरम् ॥ मूर्ध्नि वा पतितं वज्रं न तु [3]देवस्वभक्षणम् ॥ २ ॥ ज्ञात्वेति [4]जिनैर्निर्ग्रन्थशास्त्रादीनां धनं न हि गृहीतव्यं महापापकारणं दुर्गतिप्रदम्॥ ३ ॥ " अधुना संयतापेक्षयापि यत्किञ्चित्प्रदर्श्यते तद्यथा देवादिद्रव्यसम्यग्रक्षाद्यर्थं देशनादानोपेक्षणादौ संयतस्यापि भवदुःखं शास्त्रे दर्शितमस्ति-

१ प्रभास्वं देवद्रव्यमथवा लोकमतीतं जनसमुदायमेलितं साधारणद्रव्यं ज्ञातिद्रव्यमित्यर्थः २ निर्माल्यं नाम भोगविनष्टद्रव्यं ज्ञेयम् " भोगविणट्ठदव्वं निम्मलं बिंति गीयथ्था " इत्युक्तत्वात्तस्य भक्षणम् ३ देवद्रव्यभक्षणम् ४ देवगुरुज्ञानादीनां द्रव्यम्.

प० व्या०
॥ २३ ॥

यदुक्तम् " साहुउविख्खमाणोअणंतसंसारीओहोइ " इतिद्रव्यसप्ततिकादिशास्त्र-
वचनात्किंबहुनादेवादिद्रव्यदूषितगृहस्याहारादिकंनिरीहावतंससुसाधुनापिनग्रा
ह्यम्पापप्रलिप्तत्वाद् यदुक्तम् " जिणदव्वऋणंजोधरइतस्सगेहंमिजोजिमइसड्ढो ॥
पावेणंपरिलिंपइगिन्हंतोविजइभिख्खं ॥ १ ॥ " इत्यत्रविशेषार्थिनाप्रश्नोत्तरसमुच्च-
यादिजैनग्रन्थाःसङ्काशादिश्रावकदृष्टान्ताश्चविलोक्याः, अथचयेप्रशस्तश्राव-
कादेवगुरुभक्तिकारकास्तेषांयशोवादिनःश्रीजिनाज्ञायुतदेवादिद्रव्यवृद्धिकारका
स्तेतुभाग्यसौभाग्यादिगुणोपेताःपरिमितभवस्थितिकाःसन्तोलौकिकलोकोत्तर-
योःसत्कंसत्फलंप्राप्नुवन्तितथाचोक्तंद्रव्यसप्ततिकादिशास्त्रे " एवंनाउणजेदव्वंवु-
ड्ढिंनिंतिसुसावया ॥ ताणंरिद्धीपवड्ढेइकित्तीसुखंबलंतहा ॥ १ ॥ पुत्तायहुंतिसे-

१ अत्रापिशब्दस्याध्याहारादास्तांश्रावकःसर्वसावद्यविरतःसाधुरपितत्रौदासीन्यंकुर्वाणोदेश-
नादिभिरनिवारयन्ननन्तसंसारिकोभणितइत्थंविनश्यच्चैत्यद्रव्याद्युपेक्षासंयतेनापिसर्वथानकार्ये--
त्यर्थइतितट्टीकायाम्.

प० व्या० ॥ २४ ॥

भत्तासौंडीराबुद्धिसंजुआ ॥ सव्वलख्खणसंपुन्नासुसीलाजणसंमया ॥ २ ॥ युग्मम् जिणपवयणवुड्ढिकरंपभावगंनाणदंसणगुणाणं ॥ वुड्ढंतोजिणदव्वंतित्थयरत्तंलहइजीवो ॥ ३ ॥ जिणप०पभा० ॥ रख्खंतोजिणदव्वंपरित्तसंसारिओहोइ ॥ ४ ॥ ” युग्मम् पुनरत्रस्वात्महितार्थिभिःसप्तविकथानकर्त्तव्यायतःसप्तविकथावान्प्राणीप्रायोरागद्वेषवान्भवतितद्वशाच्चहिताहितंस्वार्थहानिमपिचनजानातियतःप्रोक्तम् “रागद्वेषाङ्कितोजीवोनजानातिहिताहितम् ॥ स्वार्थहानिमपिभ्राम्यन्भवारण्येपुनःपुनः ॥ १ ॥ ” इत्येवमखिलंपूर्वोक्तंयत्कृत्यंतत्कृत्वायदकृत्यंतत्त्यक्त्वाभोभव्याःशाश्वतसुखदानदक्षश्रीजिनशासनप्रभावात्सम्यक्श्रीपर्युषणापर्वाराधनेनपरमपदसुखंस्वाधीनंकुरुत, अथप्रशस्तिर्लिख्यते, श्रीमत्तपगणाकाशभवन्सूर्यसमाःक्षमाः ॥ श्रीरूपविजयाविज्ञाविज्ञवृन्दसमन्विताः ॥१॥ त-

१ स्त्रीकथा, भक्तकथा, देशकथा, राजकथा, मृदुकारुणिकीकथा, दर्शनभेदिनीकथा, चारित्रभेदिनीकथा, विशेषोत्रस्थानाङ्गटीकायाम्

प० व्या० ॥ २९ ॥

च्छिष्योनामतःकीर्त्तिविजयोभूद्विचक्षणः ॥ वैराग्यरङ्गसंयुक्तोवियुक्तोनङ्गर--
ङ्गतः ॥ २ ॥ कस्तूरविजयस्तस्यविनेयोविनयान्वयी ॥ विज्ञानगुणगम्भीरोधी-
रोहिव्रतवानभूत ॥ ३ ॥ श्रीमणिविजयोप्याऽसीत्तस्याशिष्योगुणाग्रणीः ॥
महाव्रतधरोधीरोधीवरोभूप्रसिद्धिभाक् ॥ ४ ॥ श्रीशुभविजयस्तस्यशिष्योभव-
तिसाम्प्रतम् ॥ तस्यशिष्याणुनालक्ष्मीविजयेनमयापुरे ॥ ५ ॥ रम्येकर्प्पटवा-
णिज्येजैनचैत्यादिसंयुते ॥ ग्रन्थोयंनिर्मितःश्रीमद्वीरतीर्थेहिनन्दतात् ।६।युग्मम्।

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्भावविजयगणिवर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्ति-
विजयगणिशिष्यपण्डितश्रीकस्तूरविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमणिविजयगणिशिष्य-
पं०श्रीशुभविजयगणिशिष्यमु०श्रीलक्ष्मीविजयेनविरचितःश्रीपर्युषणा-
ष्टान्हिकाव्याख्यानग्रन्थःसमाप्तः

शुभंभवतु. कल्याणमस्तुः

प० व्या० ॥ २६ ॥

ॐ

॥ श्रीपञ्चजिनस्तुतिग्रन्थः ॥

॥ श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥

॥ द्रुतविलम्बितवृत्तम् ॥

विदितकेवललोकहिताहितं
नरसुरासुरवृन्दनिषेवितम् ॥
भविकजीवसमूहशुभावहं
प्रथममादिजिनंप्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥
जिनवराभवभीतिहरावरा
निखिलनिर्म्मलसाधुगुणाकराः ॥
कठिनकर्म्मविपाकविनाशना
भुविभवायभवन्तुजितासनाः ॥ २ ॥
जिनमुखोद्गतमन्वयकन्दलं
सुजनसेवितमाहितमङ्गलम्
हतकुतर्कमहंविधुताधमं
गतमलंननुनौमिजिनागमम् ॥ ३ ॥
नृसमुदायनतक्रमपङ्कजः
शमितसङ्घसमस्तविपद्व्रजः ॥
दिशतुसर्वसुखंममगोमुखः
सहिरमाविजयस्यसुसम्मुखः ॥ ४ ॥

॥ श्रीशान्तिजिनस्तुतिः ॥

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् ॥

भक्तामरेन्द्रनतपत्कजमुद्विहारं
श्रीवीतरागमजमाप्तमुदारतारम् ॥
तीर्थेश्वरंस्वबलनिर्ज्जितकर्म्मसारं
शान्तिंस्तुवेस्मरवितानविनाशवारम् ॥ १ ॥

शास्त्रोक्तसुन्दरशिवस्यवशैकमन्त्रान्
कन्दर्प्पवारणवधेवरपञ्चवक्त्रान् ॥
तीर्थङ्कराञ्जिनवरान्सुविशुद्धगोत्रान्
वन्देमुदाहमधिपान्हिसदापवित्रान् ॥ २ ॥

विद्यान्वितंवृजिनवृक्षलतालवित्रं
संसारसागरतरण्डमकाण्डमित्रम् ॥
दुष्टाष्टकर्म्मनिधनंविपुलंविचित्रं
सेवेसदाजिनवरेन्द्रमतंपवित्रम् ॥ ३ ॥

श्रीशान्तिनाथजिनशासनभक्तिदक्षः
प्रत्यूहभित्प्रतिहताधमदुष्टपक्षः ॥
शीघ्रंसरित्पतिसुताविजयस्ययक्षः
सिद्धिंदधातुगरुडःकृतसङ्घरक्षः ॥ ४ ॥

॥ श्रीनेमिजिनस्तुतिः ॥

॥ नगस्वरूपिणी (प्रमाणिका) वृत्तम् ॥

प्रचण्डमारवारकंकुदर्प्पवारदारकम् ॥
सुरेन्द्रसेवितंसदाशिवासुतंभजेमुदा ॥ १ ॥
अनन्तशर्म्मदायकाःप्रशस्तधर्मनायकाः ॥
अवद्यभेदकाइनाजयन्तितेसमेजिनाः ॥ २ ॥
अनेकतापनाशनंकुवासनाविनाशनम् ॥
सुपर्व्वराजसंश्रुतंस्तुवेजिनोदितंश्रुतम् ॥ ३ ॥
विशाललोचनाम्बिकाकजाननावराङ्गिका ॥
नताक्षपत्कजाचलांश्रियंदधातुवोमलाम् ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

भव्याम्भोजनभोमणिर्गजगतिर्ज्ञानादिरत्नाकरः
सेव्योशर्म्मसमूहसंक्षयकरोवामाङ्गजोवामदः ॥
सुश्लाघ्योभयदोमदोविभवदोवन्द्योहिपार्श्वेश्वरः
श्रीमत्पार्श्वपतिर्दधातुभविनांशम्पूजितःस्वर्गिभिः ॥१॥

येभव्यैर्वरनाकनायकगणैस्तारस्वरैःसंस्तुता
भक्त्याकोविदवन्दिताःसुमतिदाःसद्बोधविद्याप्रदाः ॥
सर्वज्ञाःपुरुषोत्तमाःपुरुषसिंहाःस्वामिनस्तारका
स्तेवःसन्तुशिवायवैजिनवरादेवाःसदाशङ्कराः ॥ २ ॥
स्याद्वादात्मकमस्तपापपटलंप्राज्यप्रशस्तामलं
श्रीमन्तंसुगुणान्वितंसुखकरंसूत्रार्थरत्नाकरम् ॥
चित्रंहेतुनयाङ्कितंगमयुतंसन्देहसम्भेदकं
वन्देहंविबुधार्चितंजनहितंश्रीतीर्थपत्यागमम् ॥ ३ ॥
श्रीसङ्घप्रहतप्रचण्डविपदःसम्पत्करःकामदः
सम्यग्दृष्टयवनेविचक्षणवरःसंध्वस्तविघ्नोत्करः ॥
श्रीपार्श्वेश्वरभक्तिनिर्म्मलतरोयःपार्श्वयक्षोवरो
लक्ष्म्यादेर्विजयस्यसोभयसुखंशीघ्रंकरोतुध्रुवम् ॥४॥

॥ श्रीवीरजिनस्तुतिः ॥

॥ इन्द्रावंशवृत्तम् ॥

सिद्धार्थजंकाञ्चनवर्ण्णभूघनं
सम्पूर्ण्णविज्ञानवरंवराननम् ॥
वृन्दारकैर्वन्दितपादपङ्कजं
वीरंभजेहंहतका[illegible]सामजम् ॥ १ ॥

येनन्तसंसारसमुद्रतारकाः ॥
कन्दर्प्पदर्प्पानलभीबलाहकाः ॥
कल्याणवल्लीमुदिरानतामरा
स्तीर्थङ्करास्तेविजयन्तुशङ्कराः ॥ २ ॥
हिंसाविमुक्तंविजयान्वितंहितं
निर्म्मायिकंश्रीमुनिराजसेवितम् ॥
नानाकुवाद्यावलिदर्प्पनाशनं
वन्देवरंश्रीजिनराजशासनम् ॥ ३ ॥
मातङ्गदेवोतिवरःशिवंकरः
श्रीमन्महावीरमतेविपद्धरः ॥
सिद्धायिकापिप्रबलातनोत्वलं
ज्ञानंहिलक्ष्मीविजयस्यनिर्म्मलम् ॥ ४ ॥

इतिश्रीमत्तपागच्छेनेकगुरुगुणगणालङ्कृतपण्डितश्रीमद्रूपविजयगणि-
वर्य्यशिष्यपण्डितश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्यपण्डितश्रीकस्तूर-
विजयगणिशिष्यपण्डितश्रीमन्मणिविजयगणिशिष्य-
पं० श्रीशुभविजयगणिशिष्यश्रीमुनिलक्ष्मी-
विजयविरचितःश्रीपञ्चजिन-
स्तुतिग्रन्थः समाप्तः

प्रथमग्रन्थशुद्धिपत्रिका.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	११	श्रेयश	श्रेयस्
३	१६	यथास्थित	यथावस्थित
४	२०	षड	षड्
१२	१३	स्र	स्र
१३	१९	सता	सताम्
१४	१६	शिल	शील
२१	३	कृष्णा	कृष्ण
२१	६	अज्ञाता	अज्ञता
२६	६	कृत्यकृत्य	कृतकृत्य
२८	७	यध्येर्व	यथेवं
३४	२२	सुरा	सुर
४०	१	तेषा	तेषां
६०	१२	सर्वांवयवी	सर्वांवयवो
,,	,,	मोल्या	माल्या
६४	९	मौक्तानि	मौक्तिकानि
६६	२	वैक्षका	वैकक्षा
६९	११	घार	घोर
९४	१८	श्रेवं	श्रैवं
१०४	१३	र्ऋ	र्ऋ
१०९	१७	तत्रागन्यादिकं	तत्राग्न्यादिकं
१२४	१४	खङ्ग	खड्ग
१३०	१२	भुञ्जमानं	भुञ्जमानं
१३८	१९	तुष्पन्ति	तुष्यन्ति
१६७	१९	आध्येय	आधेय
१६८	२०	महान्ता	महान्तो
१७०	११	नृणा	नृणां
१७०	१६	रतै	रेतै
१८२	१२	धातकीखण्डमा तथा पुष्करार्द्धना	धातकीखण्ड; पुष्करार्द्धना
१८३	२२	पूर्वणिः	पूर्विणः